Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
आर.एन.आई.पंजीयन क्र. CHHHIN/2017/72506
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 मार्च 2024

किलोल

वर्ष 8 अंक 3, मार्च 2024

http://www.kilol.co.in
स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक
डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चो,

मुझे पता है आप सब को मार्च महीने का बेसब्री से इंतिजार रहता है.क्योंकि आप इस माह दोस्तों के साथ रंगों का त्यौहार होली जो मनाते हैं. एक दूसरे को रंग गुलाल लगाकर खुशियां बाँटते है बड़े बुजुर्गों से आशीर्वाद लेते है.हाँ एक बात जो मुझे बतानी है कि - होली में केमिकल युक्त रंगों का उपयोग बिल्कुल न करें. ऐसे रंग हमारी त्वचा व आंखों के लिए नुकसान दायक होती हैं .पूरी सावधानी के साथ होली खेंले. ध्यान रहें आपकी परीक्षा सर पर है पूरी तैयारी के साथ अपनी परीक्षा देवें. प्रश्नों को समझ कर सावधनी पूर्वक उत्तर लिखें.हमारी शुभकामना है आप अच्छे अंक लेकर अगली कक्षा में जाएं.

अरे ! हाँ मैं तो भूल ही गई थी किलोल पढ़ना व अपनी रचना भेजना न भूलें. आपकी रचनाओं का हमें इंतिजार रहता है.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक

डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

बसंत 8

चिंटू गैंडे की जंगल में सभा 9

रंग बदलती अपना धूप 11

पंचतंत्र की कहानी 13

बकबकावत बसंत हे 17

बूझो तो जानें 19

मैं राम बनूँ 21

भारत जैसा बनना है 23

अधूरी कहानी पूरी करो 24

अंगूर खट्टे हैं 24

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 24

राज कुमार साहू पथरिया द्वारा भेजी गई कहानी 25

गौरव पाटनवार, कक्षा 3 री, केन्द्रीय विद्यालय 4 कोरबा द्वारा भेजी गई कहानी 26

योगेश्वरी तंबोली जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 26

श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी 26

श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी 27

श्रीमती राजकिरण मिश्रा, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी 27

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 29

सच्ची शिक्षा 29

खोल धूप का ताला 30

मेरे राम 32

श्री राम स्तुति 35

चित्र देख कर कहानी लिखो 37

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 37

किशन और गुब्बारे वाला की कहानी 37

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी 40

गुब्बारे वाला 40

योगेश्वरी तंबोली जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 42

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 43

मेरे राम 44
मनमोहक दृश्य 46
मेरे राम आ गए 47
मंजिल का कुछ पता नहीं 49
कामयाबी 51
स्मार्ट फोन जितना समय बच्चों को दें? 52
विज्ञान दिवस 58
छेरछेरा परब 59
मेरे प्यारे शिक्षक 60
मेरा प्यारा बचपन 62
नारी हूं 64
आगे छेरछेरा 65
ऊर्जा संरक्षण 66
डब्बू सुधर गया 69
पहेलियाँ विटामिन की 72
हम भारत के बालक 74
स्वर ले सेहत 76
बचपन 78
दादा जी, नाना जी 80
घर 82
छेरछेरा 83
बलिदानी वीर नारायण सिंह 85
मुरलियाँ 87
अलाव 89
चूहिया की शादी 91
मेरी माँ 92
मतवाली कोयल 93
ठंड-ठंड है ठंडी लगती 94
परीक्षा परख हमारी 96
बचपन 98
एक दिन जरूर रंग लाएगा 100
अभी तो बहुत दूर तक जाना है 102

गणतंत्र दिवस 104
सूरज आया , सूरज आया 106
फिर से तुझे पढ़ना होगा 107
जब लक्ष्य रहेगा सीने में 109
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको 111
मैं हूं मोबाइल 113
मुझे भारत जैसे बनना है 114
आवव अंग्रेज़ी पढ़बो 115
संग्रह करना बुरी बात 117
ट्रेक्टर के सवारी 119
परीक्षा 120
परीक्षा कक्ष में विद्यार्थी ध्यान रखें 122
मेरा बचपन 125
होली 127
कर्म करो तो फल मिलता है 129
गोल - गोल है पृथ्वी 131
सोन मछली 132
सीखो 134
छत्तीसगढ़ मा राम 135
वरदानी विज्ञान 137
चमत्कारी विज्ञान 139
ख़ुशी मनाओ 141
ख़ुशी चिरैया 143
खुल्लम खुल्ला 144
होली का उत्सव 145
प्रीत गुलाल 146
बसंत ऋतु का आगमन 147
करम ला कर ले 149
होली 150
पानी 152
गर्मी आई 154
साफ-सफाई 156

कहर-महर आमा मउरे 158
आशाएँ 160
मन की शक्ति 162
वसन्त जब आये 163
जंगल में होली 165
इन सपनों को,पाने भागो 167
अब तो मन को पढ़ाई में लगा 168
बसंत पंचमी 170
परीक्षा के डर 172
दादा मेरी बात मानो 173
गाँव गली महकने लगा अमराई के बौरों से 174
बाबा जी 176
अ से अ: की सीख 178
प्रिया की नई सहेलियाँ 179
वो है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम 182
बसंत ऋतु का आगमन 184
गरीबी भी एक चीज है 186
अंगना म शिक्षा 187
हमर स्कूल 188
सुबह की सैर 189
उड़ान 191
शारदे वंदना 192
बसंत ऋतु 193
आत्मविश्वास 194
बहती है पुरवाई 195
बसंत ऋतु 197
साइकिल 198
सुघ्घर बगरे बसंत हे 200
हिम्मत को न हार 202
रंग-बिरंगी तितली 204
बसंत बहार 205
मैं भी स्कूल जाऊंगी 207

सबसे बड़ी पूंजी 209
बाग का झूला 212
पंख वाली मछली 213
किसान 215
मेरा देश 216
राजस्थान 218
सफल व्यापारी 220
वृद्धाश्रम 222
नारी तेरी शक्ति अनंत 223
आया बसंत बहार 224

बसंत

रचनाकार- श्रीमती सावित्री साहू, रायपुर

बसंत आया बसंत आया
मौसम सुहाना लाया.
कोयल की कुहू कुहू हर्षाती है
आम की मौर खूब भाती है.
सरसों की पीली पीली देख फूल
मन भौरा जाती है झूल.
बसंत पंचमी को गड़ाते है अरण्डी.
होलिका दहन के लिए करते है इकठ्ठा लकड़ी.
बसंत मे बागो मे आती है बहार
बांसती खुशबु समाये रहती है बयार.
बसंत मे बागो मे मिलती हैं फूल ताज़ा
बसंत हैं ऋतुओ का राजा

*****

चिंटू गैंडे की जंगल में सभा

रचनाकार- डॉ राकेश चक्र, मुरादाबाद

चिंटू , मिंटू नाम है उनके
गैंडे हैं दो जुड़वाँ भाई.
जंगल में मंगल करने को
पशुओं की है सभा बुलाई.

ढोल बजाते बंदर आए
भालू आए टमटम गाड़ी.
कार शेर जी की इम्पाला
आई पहन लोमड़ी साड़ी .

चले तेंदुआ पैदल - पैदल
लंगूर चलें स्कूटी लेकर.
सभी आए आन बान से
ऐंठ मूँछ ताव दे - देकर.
मंच - विराजे सिंह राज जी

और पधारे हाथी लालू.
गैंडा चिंटू संयोजक भी
मस्ती में हैं कालू भालू.

भाषण हुए जोर के भइया
तालियाँ सबकी खूब बजीं.
पक्षी देख रहे पेड़ों से
महफ़िल प्यारी खूब सजी.

चिंटू गैंडा बोला सबसे
रोज उजाड़े मानव जंगल.
कोई आग लगाता वन में
संकट आएं करें अमंगल.

सभी एक स्वर बोल उठे पशु
नहीं सहें हम अत्याचार.
भू , जल , नभ सब दूषित होते
बढ़ा रहे जन पापाचार.

राजा शेर गरज कर बोला
शिकार हमारा बंद करो.
पछताओगे एक दिन मानव
बचो पाप से पुण्य करो.

*****

रंग बदलती अपना धूप

रचनाकार- डॉ राकेश चक्र, मुरादाबाद

नित्य सुबह
मेरे घर - आँगन
आ जाती गुनगुनी धूप.
किरणें मुझको हैं सहलाती
सहज , पावन उनका रूप.

गौरैयाँ , बुलबुल नित आएँ.
जब पकडूँ ,
फुर-फुर उड़ जाएँ.

फूलों पर
किरणें बिखराकर
खूब हँसाती मुझको धूप.

गर्मी का मौसम जब आए.
धूप तपन दे तन झुलसाए.

बरसा में लुक - छुप है करती
हर मौसम में खेल अनूप.

*****

पंचतंत्र की कहानी

शिकार का ऐलान

सालों पहले एक घने से जंगल में कुछ जानवर रहा करते थे. उनमें से एक शेर था और उसकी सेवा में हरदम लोमड़ी, भेड़िया, चीता और चील रहते थे. लोमड़ी को शेर ने अपनी सेक्रेटरी, चीता को अपना अंगरक्षक और भेड़िये को अपना गृहमंत्री बना रखा था. इनके अलावा, चीता दूर-दूर की सारी खबरें लाकर शेर को देता था यानी वो खबरी का काम करता था.

इन चारों को भले ही शेर ने अच्छे-अच्छे पद दे रखे थे, लेकिन दूसरे जानवर इन्हें चापलूस मंडली कहते थे. सबको पता था कि चारों कोई काम करें, चाहे न करें, लेकिन शेर की चापलूसी खूब अच्छे से करते हैं.

रोजाना चारों जानवर शेर की बढ़ाई में कुछ शब्द कह देते थे, जिससे वो खुश हो जाता था. इन सबके चलते जैसे ही शेर शिकार करता था, तो अपना पेट भरने तक खाने के बाद वो अपने चारों खास पद में बैठे जानवरों को बाकी का हिस्सा दे देता था. इसी तरह लोमड़ी, भेड़िया, चीता और चील की जिंदगी बड़े ही आराम से कट रही थी.

एक दिन खबरी चील ने अपने चापलूस दोस्तों को आकर बताया कि काफी देर से सड़क के पास में ही एक ऊंट बैठा हुआ है.

भेड़िया ने सुनते ही पूछा कि क्या वो अपने काफिले वालों से बिछड़ गया है?

चीते ने इस सवाल को सुनते ही कहा कि चाहे जो भी हो हम उसका शिकार करवा देते हैं शेर से. उसके बाद कई दिनों तक आराम से उसे खाएंगे.

इस बात को सहमति देते हुए लोमड़ी ने कहा कि ठीक है मैं जाकर राजा से यह बात करती हूं.

इतना कहकर सीधे लोमड़ी शेर के पास पहुंची और बड़े ही प्यार से बोली, 'महाराज! हमारा दूत खबर लेकर आया है कि एक ऊंट हमारे इलाके में आकर सड़क के किनारे में बैठा हुआ है.' मुझे किसी ने बताया था कि मनुष्य जिन जानवरों को पालते हैं उनका स्वाद काफी अच्छा होता है. एकदम राजाओं के खाने के लायक. अगर आप कहें, तो मैं यह एलान करवा दूं कि वह ऊंट आपका शिकार है?

लोमड़ी की अच्छी बातों में आकर शेर ने कहा, ठीक है. इतना कहते ही वह उस जगह पर पहुंच गया, जहां ऊंट बैठा हुआ था. शेर ने देखा कि वो ऊंट काफी कमजोर है और उसकी आंखें भी काफी पीली हो चुकी हैं. उसकी ऐसी हालत शेर से देखी नहीं गई. उसने ऊंट ने पूछा कि दोस्त, तुम्हारी ऐसी हालत कैसे हो गई?

कराहते हुए ऊंट ने जवाब दिया, 'जंगल के राजा क्या आपको नहीं पता कि सारे इंसान कितने दयाहीन होते हैं. सारी उम्र मुझसे एक व्यापारी ने माल ढुलाया. अब मैं बीमार हो गया, तो उसने मुझे अकेले मरने के लिए छोड़ दिया. उसने सोचा कि मैं उसके किसी काम का नहीं रहा. इसी

वजह से अब वो मुझे अपने साथ नहीं रख रहा है और न ही मेरा इलाज करवा रहा है. अब आप ही मेरा शिकार कर दीजिए ताकि मुझे इस दर्द से मुक्ति मिल जाए.'

इन सब बातों को सुनकर शेर काफी दुखी हुआ. उसने ऊंट से कहा कि अब तुम इसी जंगल में रहोगे हमारे साथ. यहां तुम्हें कोई भी नहीं मारेगा. मैं एलान कर देता हूं कि तुम्हारा शिकार कोई जानवर नहीं करेगा.

शेर की इस दयालुता को देखकर चारों चापलुस जानवर दंग रह गए. धीमी आवाज में भेड़िये ने कहा कि कोई नहीं, बाद में इसे किसी तरह से मरवा देंगे. अभी जंगल के राजा का आदेश मान लेते हैं.

ऊंट अब उसी जंगल में आराम से रह रहा था. अच्छे से हरी घास खाते-खाते ऊंट एक दिन बिल्कुल स्वस्थ हो गया. वो हमेशा शेर के प्रति आदर भाव रखता था और शेर के दिल में भी उसके लिए दया और प्रेम की भावना थी. अब शेर की शाही सवारी भी स्वस्थ ऊंट निकालता था. वो शेर के चारों खास पदाधिकारी जानवरों को अपनी पीठ पर बैठाकर चलता.

एक दिन चापलूस जानवरों ने जंगल के राजा शेर को हाथी का शिकार करने के लिए कहा. राजा भी मान गया, लेकिन वो हाथी पागल था. उसने शेर को बुरी तरह से पटक दिया. किसी तरह से शेर पागल हाथी से बच तो गया, लेकिन उसे काफी चोट लग लई.

अब बीमार शेर बिना शिकार किए किसी तरह से अपनी जिंदगी जीने लगा. उसके सेवक भी भूखे थे. उनके मन में हुआ कि आखिर ऐसा क्या करें कि कुछ खाने को मिल जाए. फिर उनका ध्यान हट्टे-कट्टे हो चुके ऊंट पर गया. सबने मिलकर एक तरकीब सोची और राजा के पास चले गए.

सबसे पहले भेड़िए ने कहा कि महाराज आप कितने दिनों तक भूखे रहेंगे. मेरा शिकार करके मुझे खा लीजिए आपकी भूख मर जाएगी.

फिर चील कहने लगी कि राजा साहब! भेड़िए का मांस खाने लायक नहीं होता है. आप मुझे खा लीजिए.

चील को पीछे धकेलते हुए लोमड़ी बोली, 'तुम्हारा मांस इनके दांतों में ही लगकर रह जाएगा. आप इसे छोड़िए मुझे खा लीजिए.

एकदम से फिर चिता बोला कि इसके शरीर में आपको सिर्फ बाल ही मिलेंगे. आप मुझे खाकर अपनी भूख मिटा लीजिए.

ये सब उन चापलूस जानवरों का नाटक था, जिसे ऊंट नहीं समझ पाया. उसने भी एकदम से कहा कि महाराज, मेरी जिंदगी तो आपकी ही दी हुई है. आप इस तरह से भूखे क्यों रहेंगे. आप मुझे मारकर खा लीजिए.

चारों चापलूस जानवरों को इसी बात का इंतजार था. उन्होंने एकदम कहा कि ठीक है महाराज आप ऊंट को ही खा लीजिए. अब तो ये खुद ही कह रहा है कि मुझे खा लो और इसके शरीर में मांस भी काफी ज्यादा है. अगर आपकी तबीयत ठीक नहीं लग रही है, तो इसका शिकार हम कर देते हैं.

इतना कहते ही चीते और भेड़िये ने मिलकर एक साथ ऊंट पर हमला कर दिया. कुछ ही देर में ऊंट की मौत हो गई.

कहानी से सीख – अपने आसपास चापलूस लोगों को नहीं रखना चाहिए. वो हमेशा अपने फायदे की ही सोचते हैं.

*****

बकबकावत बसंत हे

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित", भाटापारा

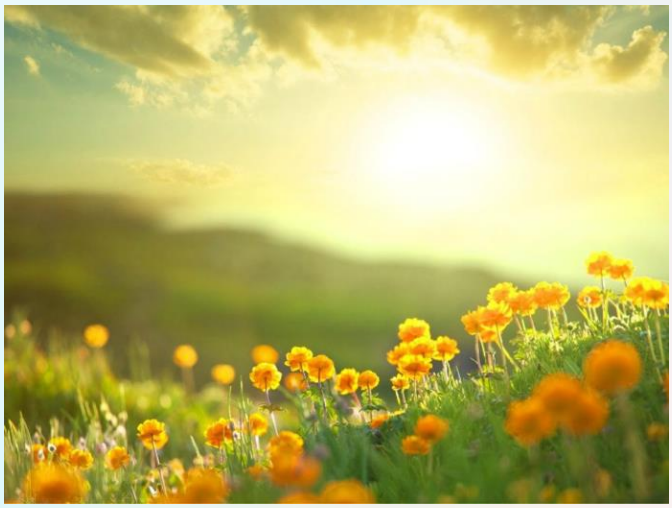

मउर महर-महर ममहावत हे,
कोइली कुहकी पारत हे....
अब बिजरावत बसंत हे...

खेत मा खार मा, डोंगरी मा पहार मा,
भाँठा मा कछार मा, मटासी मा कन्हार मा,
ठेनी अउ दुलार मा, भेंट अउ जोहार मा,
मटमटावत बसंत हे.-1

हरियर मा पिंवरा मा, राहेर मा तिंवरा मा,
तितली मा भँवरा मा, फाँका मा कँवरा मा,
करिया अउ सँवरा मा, लाली अउ धँवरा मा.
अघुवावत बसंत हे.-2

गुलाब मा गोंदा मा, कांदा मा करोंदा मा,
निंधा मा पोंडा मा, ठोसलग मा लोंदा मा,

चकवा अउ चंदा मा, चटरहा अउ कोंदा मा,
मुचमुचावत बसंत हे.-3

आहाँ मा उहूँ मा, सरसो मा गहूँ मा,
हाड़ा मा लहू मा, सास मा बहू मा,
ओहू अउ एहू मा, हा हा अउ हू हू मा.
बकबकावत बसंत हे. -4

हाँसी मा ठिठोली मा, मुक्का अउ बोली मा,
मोटरा अउ ओली मा, कोठा अउ डोली मा,
खीसा अउ झोली मा, अकेल्ला अउ टोली मा.
मटकावत बसंत हे.-5

सारी मा सुवारी मा, मया मा गारी मा,
गोरी मा कारी मा, रंग अउ पिचकारी मा.
बरछा अउ बारी मा, बगईचा अउ फुलवारी मा.
परघावत बसंत हे.-6

पैडगरी मा धरसा मा, मँउहा मा परसा मा,
अंगाकर मा अरसा मा, मरकी मा करसा मा.
भोभला अउ खिरसा मा, कोंवर अउ सुकसा मा.
बइहावत बसंत हे.-7

पाना मा पतई मा, फाँफा मा चिरई मा,
बोकरा मा बरई मा, भाँटा मा मुरई मा,
साजा अउ सरई मा, थाँघा अउ जरई मा,
मेछरावत बसंत हे.-8

*****

बूझो तो जानें

रचनाकार- डॉ राकेश चक्र, मुरादाबाद

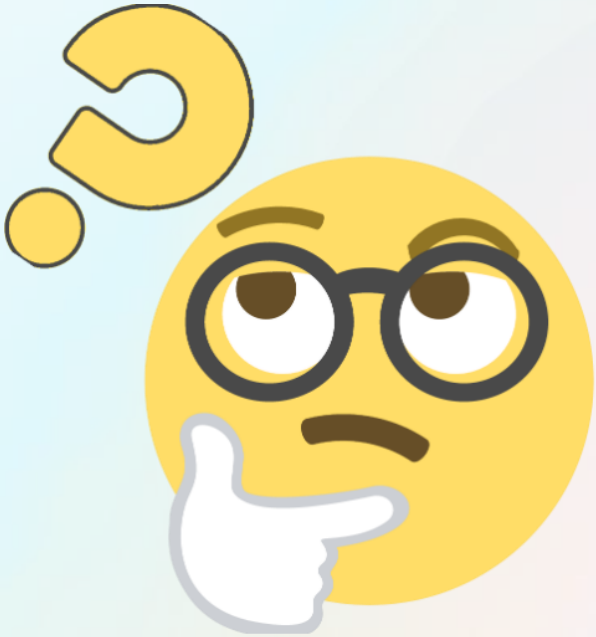

1. तोड़े फल पेड़ से सोनम
धरती पर गिरता एक फल.
सोचो जल्दी सभी बताओ
कहें उसे हम कौन - सा बल.

2. बढ़ता है सीधी रेखा में
बिना पैर के चलता.
ध्वनि की गति से तेज दौड़ता
बोलो सोनू ममता.

3. उबला जल है रूप बदलता
बन जाता है उड़कर भाप.
मंजू , संजू बोलो बच्चो
कितने होशियार हैं आप.

4. जो गुड़ , चीनी में है होता
वह होता आलू चुकंदर में.
तन को अतिशय शक्ति देता
डेट है अंतिम अक्षर में.

5. बर्फ पिघलकर क्या बन जाती
बोलो आर्यन, रानी.
पीएं तो वह प्यास बुझाए
उपयोग करें सब प्राणी.

6. 1. गुरुत्वाकर्षण बल , 2. प्रकाश , 3. वाष्पन , 4. कार्बोहाइड्रेट, 5. पानी

*****

मैं राम बनूँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला ", बालोद

मैं राम बनूँ मस्त खेलूँ,
अवध नगर में.

चाँद भी है सूरज भी है,
और है नवलख तारा.
पुनित शीतल रातें,
शुभ दिवस उजियारा.
मैं आगे बढ़ूँ बढ़ता रहूँ,
सरयू डगर में.
मैं राम बनूँ....

कंधे पर धनुष रख,
बाणों से भरा तूणीर.

साथ में गुरुवर मेरे,
और भाई लखन वीर.
मैं आगे चलूँ चलता रहूँ,
जंगल बीहड़ में.
मैं राम बनूँ....

माथ पर तिलक मेरे,
गले में तुलसी माला.
मन में है इक आस,
मुझे मिले जनक-बाला.
मैं पग धरूँ धरता रहूँ,
मिथिला शहर में.
मैं राम बनूँ....

*****

भारत जैसा बनना है

रचनाकार- श्रीमती संगीता निर्मलकर, दुर्ग

मुझे भारत जैसा बनना है.
हिमालय जैसा सीना ताने,
हर तूफानों को सहना है.
दक्षिणी सागर जैसा,
हर लहरों से लड़ना है.
पश्चिम के रेगिस्तानों के जैसे,
रेतों में भी चलना है.
पूरब की हरियाली लिये,
उमंग सभी में भरना है.
पर्वत- घाटी में बहती,
झरनों जैसी,
कल- कल, हर -पल आगे बढ़ना है.
बस मुझे मेरे,
भारत जैसा बनाना है

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

अंगूर खट्टे हैं

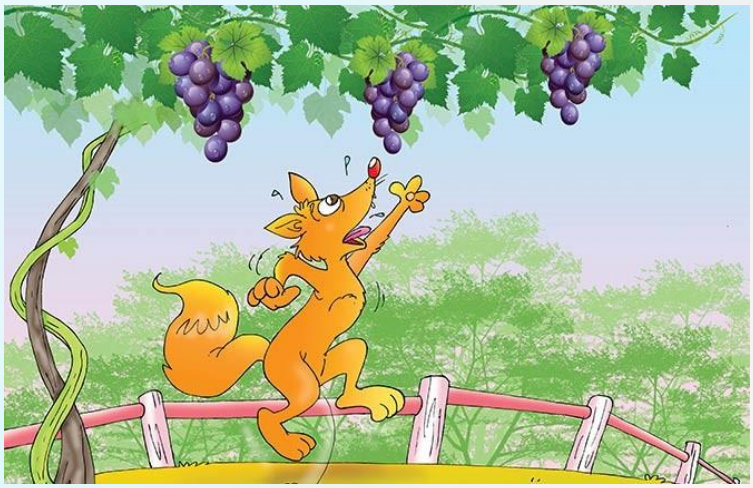

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी. एक दिन वह भूखी-प्यासी भोजन की तलाश में जंगल में भटक रही थी.

भटकते-भटकते सुबह से शाम हो गई, लेकिन वह शिकार प्राप्त न कर सकी. शाम होते-होते वह जंगल के समीप स्थित एक गाँव में पहुँच गई. वहाँ उसे एक खेत दिखाई पड़ा. भूख से बेहाल लोमड़ी खेत में घुस गई.

वहाँ एक ऊँचे पेड़ पर अंगूर की बेल लिपटी हुई थी, जिसमें रसीले अंगूर के गुच्छे लगे हुए थे. अंगूर देखते ही लोमड़ी के मुँह से लार टपकने लगी. वह उन रस भरे अंगूरों को खाकर तृप्त हो जाना चाहती थी. उसने अंगूर के एक गुच्छे पर अपनी दृष्टि जमाई और जोर से उछली.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

लेकिन अंगूर के गुच्छे काफी ऊँचाई पर थे.लोमड़ी पुनः उछलकर गुच्छे तक पहुँचने की कोशिश करने लगी.लेकिन अंगूर तक वह पहुँच ही नहीं पाई.उन्होंने खेत के चारों ओर लकड़ी का घेरा लगा हुआ था.उस पर भी चढ़कर गुच्छे को पाने की कोशिश

की लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ. उसने अपनी पूरी शक्ति लगा दी.फिर भी अंगूरों तक नहीं पहुँच पाई.

तब उसने अपने आप को समझाया.अगर मुझे अंगूर खाने को नहीं मिले तो,कोई बात नहीं.शायद इससे भी अच्छी कोई चीज मुझे खाने को मिलने वाली है.वैसे भी यह अंगूर,अभी तक पके भी नहीं है.ऊपर से हरे-हरे दिखाई दे रहे हैं खट्टे हैं.... खट्टे!

तभी पास में पेड़ पर बैठा हुआ तोता लोमड़ी को देखकर कहा-"लोमड़ी मौसी,अंगूर खट्टे हैं.. खट्टे!"लोमड़ी को समझने में देर नहीं लगी.क्योंकि तोता उसे अंगूर नहीं पाने के कारण चिढ़ा रहा था.तुझे अभी देखती हूँ.ऐसा कहकर लोमड़ी ने तोता को मारने के लिए पास में पड़ा हुआ पत्थर को उठाने नीचे झुका,सहयोग से वहीं पर रस्सी पड़ा हुआ था.लोमड़ी का विवेक जगा.उसने तोता को मारने के बजाय,जल्दी से उस पत्थर में रस्सी को लपेटकर उसे गोल-गोल घूमाते हुए अंगूर के गुच्छे के ऊपर फेंक दिया.वह पत्थर गुच्छे को लपेट लिया.लोमड़ी ने थोड़ी बल लगाकर खींचा.अंगूर के गुच्छे नीचे गिर गया.उन्होंने अपने परिश्रम और बुद्धि के बल पर अंगूर को पानी में सफल हुआ. तब तोता ने कहा-"लोमड़ी मौसी! जो भी व्यक्ति सतत रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिएअपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए परिश्रम करते हैं,उसे सफलता जरूर मिलती है."जो आज मैंने आपको देखा.मौसी जी अब आप बताइए अंगूर कैसे हैं?तभी लोमड़ी ने हंसते हुए कहा-अंगूर खट्टे नहीं बल्कि बहुत ही मीठे.... मीठे हैं.

बच्चों इस कहानी से हमने समझा कि लोमड़ी अपने बुद्धि का उपयोग करते हुए अंगूर को पाने के लिए सतत प्रयास करते रहे.फल स्वरूपअंत तक अंगूर को हासिल कर ही लिए.इसी की तरह हमें भी पढ़ाई या अन्य कार्यों में योजना बनाते हुए सतत रूप से मेहनत करनी चाहिए ताकि हमें भी सफलता प्राप्त हो जाए.

राज कुमार साहू पथरिया द्वारा भेजी गई कहानी

लेकिन उसके हाथ अंगूर तक नहीं पहुंचे, और वह धड़ाम से नीचे गिर गई ठीक उसी समय एक खरगोश वहां से गुजर रहा था और यह सब देख कर मुस्काते हुए पूछा कि क्यों लोमड़ी बहन अंगूर कैसे हैं तब लोमड़ी सकुचाते हुए बोली अंगूर खट्टे हैं.

गौरव पाटनवार, कक्षा 3 री, केन्द्रीय विद्यालय 4 कोरबा द्वारा भेजी गई कहानी

वह अंगूर तक पहुंचने के लिए दोबारा उछलने लगी परंतु वह अंगूरों तक नहीं पहुंच सकी जिसकी वजह से निराश थी तब लोमड़ी ने अपने मन को शांत करने के लिए कहा की यह अंगूर बहुत खट्टे हैं मैं इन्हें खाकर बीमार नहीं पड़ना चाहती.

योगेश्वरी तंबोली जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

लोमड़ी जब भूख से परेशान होकर भटक रही थी. अचानक उसकी नजर अंगूर के बेल पर पड़ी लेकिन बेल पेड़ के ऊपर थी.अंगूर बहुत रसीले एवं ताजे दिख रहे थे.जिसे खाने के लिए वह पेड़ के पास पहुंची और अंगूर को पकड़ने के लिए जैसे ही वह उछली नीचे जमीन पर गिर पड़ी उसे अंगूर नहीं मिला. कई कोशिश करने के बाद भी उसे जब अंगूर नहीं मिला तो वह उदास होकर बैठ गई और कहने लगी यह अंगूर खट्टे हैं. तभी अचानक उसकी नजर उस पेड़ पर बैठी गिलहरी पर पड़ी. लोमड़ी ने सोचा शायद गिलहरी उसकी कुछ मदद कर सकती है इसलिए उसने गिलहरी को अपने भूख के बारे में बताया कि उसने कई दिनों से कुछ नहीं खाया है.गिलहरी से कहने लगी कि क्या तुम मेरी मदद करोगी मुझे कुछ खाने का दे सकती हो तब गिलहरी ने कहा हां लोमड़ी बहन जरूर चलो हम दोनों मिलकर यह रसीले अंगूर तोड़ते हैं. लोमड़ी और गिलहरी दोनों मिलकर अब अंगूर तोड़ने लगे गिलहरी ऊपर पेड़ पर चढ़कर अंगूर नीचे गिराती और लोमड़ी उसे उठाती जाती इस तरह दोनों मिलकर ताजे और मीठे अंगूर खाने लगे. लोमड़ी और गिलहरी में अच्छी दोस्ती हो गई. अंगूर खाने के बाद दोनों जंगल की सैर के लिए निकल गए.

श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी

पर वह अंगूर तक नहीं पहुँच पायी. अब वह सोचने लगी कि कैसे इन अंगूरों तक पहुंच सकूं. इतने में ही वहां एक बंदर आया और लोमड़ी उस बंदर से बोली अरे बंदर भैया आप आज अचानक जंगल में कैसे घूम रहे हैं. बंदर ने उसकी बात सुनी और अकड़ कर कहा "क्यों ,क्या यह जंगल मेरा नहीं है". यह सुनकर लोमड़ी बोली अरे नाराज क्यों होते हो भैया जंगल तो पूरा आपका ही है.देखो तो ऊपर कितने सुंदर अंगूर लगे हुए हैं. बंदर ने अंगूर के गुच्छे को देखा फिर कुछ सोचने लगा. उसने लोमड़ी से कहा इस बार मैं तुम्हारी बातों में आने वाला नहीं हूं. मैं तुम्हारी कोई मदद

नहीं करूंगा क्योंकि तुम्हारे पूर्वजों ने हमारे पूर्वजों को बहुत सताया है. लोमड़ी ने बहुत ही प्यार से कहा अरे भैया ऐसी बात नहीं है. अभी कुछ ही देर पहले मैंने देखा कि एक चिड़िया आई और वह इन अंगूरों को खाई और अंगूर को खाते ही थोड़ी देर बाद वह उड़ने लगी और कुछ दूर जाकर के फड़फड़ा कर गिर गई.जब मैं वहां जाकर देखी तो वह चिड़िया मर चुकी थी.मुझे डर सताने लगा क्योंकि यह अंगूर के गुच्छे बहुत ज्यादा खट्टे होने के कारण जहरीले हो गए हैं और यहां तक बाकी जानवर तो कभी नहीं पहुंच सकेंगे. पर हमारे बंदर भाई कहीं इन अंगूरों को खा लिए तू बेकार में ही उनकी अकाल मृत्यु हो जाएगी. यह सोचकर मैं अंगूर के गुच्छों को देखकर बहुत घबरा रही हूं.लोमड़ी की बात सुनकर बंदर ने सोचा लोमड़ी बहन कह तो सही रही है. हमारे बंदरों का दल कहीं अंगूरों पर टूट पड़ा तो आज सर्वनाश हो जाएगा.बंदर ने आव देखा न ताव पेड़ पर चढ़ गया और सारे अंगूर के गुच्छों को फटाफट तोड़कर नीचे फेंकने लगा. लोमड़ी की आंखों में चमक आ गई.जैसे ही बंदर ने सारे गुच्छे तोड़कर नीचे फेंक डाले.लोमड़ी मजे से बैठकर अंगूर खाने लगी.बंदर को समझते देर ना लगी वह अपना सा मुँह लेकर वहां से चला गया.

श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी

एक जंगल में एक लोमड़ी रहती थी. एक दिन लोमड़ी ने गहरी जामुनी रंग के अंगूर देखकर अंगूर खाने की इच्छा जाहिर की. लोमड़ी को यह अंदाजा तो हो गया था कि यह अंगूर एकदम पके हुए और खाने के लिए एकदम तैयार है.

जब लोमड़ी ने अपने मुंह में अंगूर पकड़ने के लिए ऊंची ऊंची छलांग लगाई. लेकिन वह अंगूर तक नहीं पहुँच पाई. बहुत कोशिश के बाद भी वह अंगूर नही खा पाई क्योकि लोमडी बहुत भूखी थी. और अन्त में लोमड़ी ने कहा कि अंगूर खट्टे है करके वापस जंगल की और चली गई.

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी हार नहीं मानना चाहिए.

श्रीमती राजकिरण मिश्रा, बेमेतरा द्वारा भेजी गई कहानी

उसने अंगूर के एक गुच्छे पर दृष्टि जमाई जोर से उछली पर वह अंगूर तक नहीं पहुंच पाई फिर से उछलती है लेकिन वह अंगूर तक नहीं पहुंचती तो वह आलस में कहती है अंगूर खट्टे हैं,रहने देती हूं कुछ दूसरा खा लेती हूं. ऐसा सोच कर वहां से चली जाती है और दूसरा खाने का सोचती है और उसे कुछ हड्डियां मिलती है उसे वह चाटते रह

जाती है इसी बीच कुछ बंदर उस अंगूर को खाने लगते हैं अंगूर काफी रसीले व मीठे थे कुछ अंगूर नीचे गिर जाते हैं वापस आते समय लोमड़ी गिरे हुए अंगूर को खाती है तब सोचती है मैंने आलस में ही अंगूर को खट्टे समझ लिया यह तो बहुत रसीले और मीठे हैं ऐसा सोचकर बहुत पछताती हैं.

सीख _ हमे किसी भी कार्य को आलस के कारण अधूरा नही छोड़ना चाहिए निरंतर प्रयास से निश्चित सफलता मिलती है.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

सच्ची शिक्षा

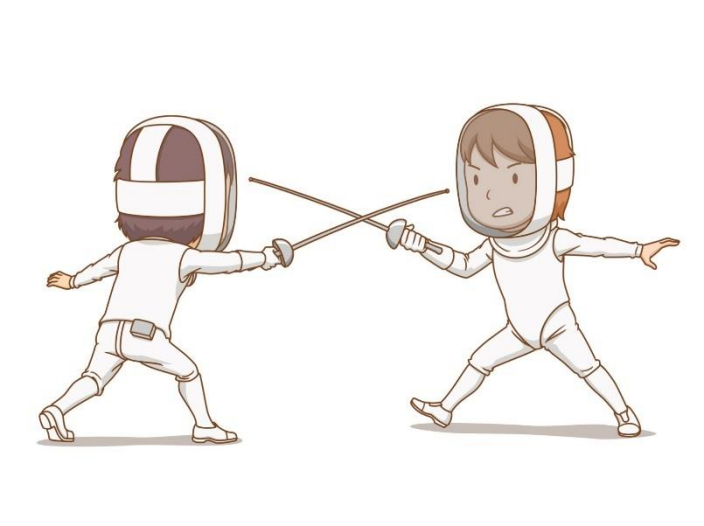

प्रवीण नाम का एक छोटा लड़का था. उसे तरह-तरह की युद्ध-कलाएं सीखने का बहुत शौक था. उसने एक योद्धा का बहुत नाम सुना था. लोग कहते थे कि उनके जैसा तलवार चलाने वाला आज तक नहीं हुआ.

प्रवीण के मन में इच्छा हुई कि उनके पास जाकर तलवार चलाने की शिक्षा ली जाए.

वह उस शहर की ओर चल पड़ा, जहाँ वे रहते थे.

प्रवीण ने योद्धा के पास जाकर विनती की कि वे उसे शिष्य बना लें. योद्धा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली. उन्होंने प्रवीण से कहा कि तलवारबाजी सीखने के कुछ नियम हैं. उसे उन नियमों का पालन करना होगा.

प्रवीण ने स्वीकार कर लिया.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

खोल धूप का ताला

रचनाकार- डॉ राकेश चक्र, मुरादाबाद

गौरैया ने 'पर' फैलाये,
बोली,जाड़ा जा-जा.
शीत लहर क्यों बरपा दी है
हलुआ पूड़ी खा -खा.

सूरज दादा को दुब काया,
रथ भी उनका रोक दिया.
चंदा जी पर चादर ढक कर,
उन पर गुस्सा थोप दिया.

ठंड भगा दे,सहज बना दे,
तपन फटाफट ला-ला.

सारे पक्षी दुखी बहुत हैं,
बाल वृद्ध काँपे थर-थर.
फूल अधखिले मौसम गुमसुम,
लगता ठंडक से है डर.

किरणों की चाबी से झट अब,
खोल धूप का ताला.

*****

मेरे राम

रचनाकार- डॉ. सत्यवान सौरभ, हरियाणा

राम नाम है हर जगह, राम जाप चहुंओर.
चाहे जाकर देख लो, नभ तल के हर छोर.

नगर अयोध्या, हर जगह, त्रेता की झंकार.
राम राज्य का ख्वाब जो, आज हुआ साकार.

रखो लाज संसार की, आओ मेरे राम.
मिटे शोक मद मोह सब, जगत बने सुखधाम.

मानव के अधिकार सब, होने लगे बहाल.
राम राज्य के दौर में, रहते सभी निहाल.

रामराज्य की कल्पना, होगी तब साकार.
धर्म, कर्म, सच, श्रम बने, उन्नति के आधार.

राम नाम के जाप से, मिटते सारे पाप.
राम नाम ही सत्य है, सौरभ समझो आप.

मद में डूबे जो कभी, भूले अपने राम.
रावण-सा होता सदा, उनका है अंजाम.

राम भक्त की धार हैं, राम जगत आधार.
राम नाम से ही सदा, होती जय जयकार.

जगह-जगह पर इस धरा, है दर्शनीय धाम.
बसे सभी में एक से, है अपने श्री राम.

राम सदा से सत्व है, राम समय का तत्व.
राम आदि है अन्त हैं, राम सकल समत्व.

राम-राम सबसे रखो, यदि चाहो आराम
पड़ जायेगा कब पता, सौरभ किससे काम.

राम नाम से मैं करूँ, मित्रों तुम्हे प्रणाम.
जीवन खुशमय आपका, सदा करे श्रीराम.

राम-राम मुख बोल है, संकटमोचन नाम.
ध्यान धरे जो राम का, बनते बिगड़े काम.

रोम-रोम में है बसे, सौरभ मेरे राम.
भजती रहती है सदा,जिह्वा आठों याम.

उसका ये संसार है, और यहाँ है कौन.
राम करे सो ठीक है, सौरभ साधे मौन.

हर क्षण सुमिरे राम को, हों दर्शन अविराम.
राम नाम सुखमूल है, सकल लोक अभिराम.

जात-पात मन की कलह, सच्चा है विश्वास.
राम नाम सौरभ भजें, पंडित और' रैदास.

सहकर पीड़ा आदमी, हो जाता है धाम.
राम गए वनवास को, लौटे तो श्रीराम.

बन जाते हैं शाह वो, जिनको चाहे राम.
बैठ तमाशा देखते, बड़े-बड़े जो नाम.

जपते ऐसे मंत्र वो, रोज सुबह औ' शाम.
कीच-गंद मन में भरी, और जुबाँ पे राम.

राम राज के नाम पर, कैसे हुए सुधार.
घर-घर दुःशासन खड़े, रावण है हर द्वार.

हारे रावण अहम तब, मन हो जय श्री राम.
धीर-वीर गम्भीर को, करे दुनिया प्रणाम.

*****

श्री राम स्तुति

रचनाकार- मंजू पाठक. दुर्ग

प्रभु श्री राम की छवि अलौकिक ,
सबके मन को भाए रही है.
जो भी जाए शरण में इनकी,
उस पर कृपा बरसाए रहे हैं.
आज अयोध्या धाम को देखो,
भाग्य पर अपने इठलाए रही है.
राम - लखन - भरत - शत्रुघ्न,
चारों भैया आए रहे हैं.
प्राण प्रतिष्ठा आज भगवन की,
मंत्र उच्चारत पंडित- पूजारी.
हर्षित है अंबर, हर्षित है धरती,
हर्षित है सारे भारतवासी.

पावन धरती,अयोध्या धाम,
दर्शन करने बुलाएं रही है.
प्रभु श्री राम की छवि अलौकिक,
सबके मन को भाए रही है.
तीनो लोक के स्वामी प्रभुजी,
सबके मन में समाए रहे हैं.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

किशन और गुब्बारे वाला की कहानी

अक्सर हम किसी सफल व्यक्ति को देखते है,तो उसकी वेषभूषा और रंग रूप बनावट से प्रभावित होते है.सोचते हैं कि काश हम भी ऐसे होते है,तो शायद हम भी वैसे ही सफल होते. लेकिन वास्तविकता यह होती है कि वह व्यक्ति अपने वेषभूषा और रंगरूप से नही बल्कि अपने गुणो के कारण ही सफल होता है.चलिये आज इसी सोच पर आधारित "किशनऔर गुब्बारे वाला की कहानी" जो की हम सभी को प्रेरणा देती है,

एक समय की बात है,एक आदमी गुब्बारे बेचकर वह अपना एवं परिवार का पेट भरता था.गाँव के आस पास लगने वाले मेलों,हाट बाजारों एवं पास के विद्यालय में जाता था और गुब्बारे बेचता था.बच्चों को आकर्षित करने के लिए उसके पास रंग बिरंगे (हर रंग के) गुब्बारे होते थे.उसे जब भी यह महसूस होता कि अब उसके गुब्बारे बिकने कम हो गए हैं तो वह एक गुब्बारा लेता और उसे हवा मे उड़ा देता था.जिसको

देखकर बच्चों के मन में प्रसन्नता हो जाती और बच्चे फिर से गुब्बारे खरीदने उसके पास पहुँच जाते थे.

एक बार गुब्बारे वाला पास के विद्यालय में गुब्बारे बेचने के लिए गया.जहाँ किशन नाम का छोटा सा बालक उसी विद्यालय में पढ़ता था.किशन दूसरे बच्चों की अपेक्षा रंग से थोड़ा ज्यादा ही काला था.जिस कारण विद्यालय के सभी बच्चे उसे कल्लू कहते, कोई कालू कहते,तो कोई कालिया,कोई कालीचरण,तो कोई काला नाग इस तरह आए दिन उसे चिढ़ाते रहते थे.जिनके वजह से उनकी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं रहती थी और उसका प्रभाव पढ़ाई पर पड़ता था.इस कारण वह पढ़ाई में भी कमजोर था.सभी बच्चे ने उसे काले होने के कारण तुम पढ़ नहीं सकोगे,ऐसा उनके मस्तिष्क के ऊपर दबाव बना दिया था.वह भी सोच रहा था कि मैं काला हूँ,इस कारण मैं दूसरे बच्चों की अपेक्षा नहीं पढ़ सकता और मैं अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता. यह सोचकर वह बच्चा उदास और चुप रहता था.

कुछ क्षण पश्चात गुब्बारे वाले के पास आकर किशन ने रंग बिरंगें गुब्बारे को देखा.गुब्बारे वाले नेअपनी बिक्री में बढ़ोत्तरी करने के लिए वह समय-समय पर गुब्बारों को हवा में उड़ा देता था.यह सब गुब्बारे वाले के पास खड़ा होकर किशन बड़े ध्यान से देख रहा था.जैसे ही उसने हरे रंग के गुब्बारे को हवा मे उड़ाया तो बच्चा उसके निकट गया और गुब्बारे वाले से पूछा- "यदि आप इस काले रंग वाले गुब्बारे को छोड़ोगे तो क्या गुब्बारा ऊपर जायेगा."गुब्बारे वाले ने आश्चर्य पूर्वक बच्चे की ओर देखा और बोला-"जी बिल्कुल बेटा, जरूर ऊपर जायेगा गुब्बारा,ऐसा कहकर वह काले रंग की गुब्बारे को छोड़ दिया.देखते ही देखते काले रंग की गुब्बारे बहुत ही ऊपर चला गया.फिर उसने कहा-बेटा गुब्बारा का ऊपर जाना इस बात में निर्भर नहीं करता है कि वो किस रंग का है या कितना बड़ा है,बल्कि इस बार निर्भर करता है कि गुब्बारे की अंदर क्या भरा हुआ है."

ठीक इसी प्रकार यह बात हम लोगों पर भी लागू होती है कि कोई आगे चलकर क्या बनने वाला है.ये उनके कपड़े या रंग इस पर निर्भर नहीं करता है,बल्कि ये इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अंदर कौन से गुण हैं.उसका व्यवहार कैसा और उसका बात करने का तरीका कैसा है.इसीलिए किसी के कपड़े और उसके शरीर के रंग को देखकर उसके बारे में गलत नहीं सोचना चाहिये.किशन गुब्बारे वाले की बातों को समझ गया.उस दिन से अपने काले रंग की चिंता ना करते हुए पढ़ाई में जुट गया.वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित हुआ जिसमें किशन ने कक्षा में प्रथम स्थान

प्राप्त किया.विद्यालय के सभी बच्चों ने किशन से अपने किए हुए गलती के लिए क्षमा मांगते हैं.फिर सभी बच्चे मिल जुलकर एक साथ रहते हैं.

कु.भूमिकाराजपूत,कक्षा-आठवीं, शाला-शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

एक गाॅंव में रिंकू और पिंकी दोनों भाई-बहन अपने माता-पिता के साथ रहते थे.इसी गाॅंव में एक बूढ़ा व्यक्ति अपने परिवार के साथ रहता था. वह गुब्बारे बेचकर अपने परिवार का जीवन यापन करता था. कुछ दिन पश्चात गाॅंव में नए वर्ष के उपलक्ष्य में मेला लगने वाला था.वह गुब्बारे वाला व्यक्ति मेला में अपने गुब्बारे रखकर बेचने के लिए जा रहा था. तभी अचानक उसे चक्कर आया और वह जमीन में गिर गया.रिंकू और पिंकी भी मेला देखने जा रहा था.अचानक सड़क पर भीड़ लगी हुई थी.दोनों वहाॅं पर जाकर देखा-वह कोई और नहीं गुब्बारे वाला ही था.दोनों बच्चे उसे उठाकर पानी पिलाया और कुछ खाने को दिया. ठीक होने के पश्चात दोनों भाई बहन मेला देखने चले गए.

मेले में टिंकू और पिंकी मौज मस्ती करते हुए पूरे मिले का भ्रमण किया.उसके बाद झूला झूले,ढेर सारे खिलौने लिए,मिठाइयां खरीदी तत्पश्चात अपने दोस्तों से मिला.उसके बाद घर की ओर निकल गए.

रास्ते में गुब्बारे वाले को देखकर गुब्बारे खरीदने की इच्छा हुई. लेकिन जेब को देखा,उसके पैसे खत्म हो चुके थे.उन दोनों पर बूढ़े व्यक्ति की नजर पड़ा.दोनों बच्चे को पहचान लिए. समझ गया कि यह दोनों बच्चे ही मुझे चक्कर आने पर पानी पिलाया था.तभी उन दोनों को परेशान देखकर गुब्बारे वाले कहता है-तुम परेशान क्यों हो? तभी रिंकू ने कहा-कुछ नहीं बाबा,घर जा रहें हैं,सोचा कि आपके हाल-चाल पूछ लें.गुब्बारे वाले बाबा को समझने में देर नहीं लगी.उन्होंने रिंकू और पिंकी को मुफ्त में गुब्बारे दिए.लेकिन दोनों बच्चे ने उसे लेने से मना कर दियेऔर उसे धन्यवाद कहा,तभी गुब्बारे वाले ने कहा धन्यवाद देने की बात नहीं है.मैं भी आपके दादा के समान हूँ.आप दोनों ने भी तो मुझे दादा जैसी देखभाल की है. इस कारण इस गुब्बारे को रख लो. दोनों बच्चों ने गुब्बारे रखकर उसे धन्यवाद दिया और खुशी-खुशी से घर चले गए.

मनोज कुमार पाटनवार, बिलासपुर द्वारा भेजी गई कहानी

गुब्बारे वाला

एक गांव में एक गुब्बारे वाला हर दिन गुब्बारे बेचने आया करता था रंग-बिरंगे गुब्बारे देखकर गांव के बच्चे उसके पीछे-पीछे चल देते थे सभी को गुब्बारे बेचने के बाद गुब्बारे वाला वापस चला जाता था एक दिन गुब्बारे बेचने के लिए वह गांव के बाजार में खड़ा था आज उसके गुब्बारे कम ही बिके थे तभी एक बच्ची गुब्बारे खरीदने आई और बोली भैया कितने का गुब्बारा है गुब्बारे वाले ने कहा 2 रुपए का एक और 5 रुपए के तीन, तब बच्ची बोली -भैया मेरे पास तो केवल एक रुपए हैं, एक काम करो एक गुब्बारा मुझे दे दीजिए और दो गुब्बारे किसी और को बेच देना, इससे तुम्हारा 5 रुपए के तीन बिक जायेंगे. नहीं एक गुब्बारा तो 2 रुपए का ही मिलेगा गुब्बारे वाले ने कहा उतने में बच्ची निराश होकर चली जाती है और आगे जाकर एक पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर बैठ जाती है गुब्बारे वाला उसे देखता रहता है गुब्बारे वाले के शाम तक सारे गुब्बारे बिक जाते हैं केवल दो ही गुब्बारे बचते हैं, गुब्बारे वाला उस बच्ची को बुलाता है और पूछता है अरे तू घर नहीं गयी दोपहर से यहीं बैठी है तो बच्ची जवाब देती है- हां भैया मैंने अपनी छोटी बहन से कहा था कि मैं उसके लिए गुब्बारे लेकर आ रही हूं ,अब जब वह सो जाएगी तब ही घर जाऊंगा तब गुब्बारे वाले ने कहा- तो अपने घर से एक रुपए और ले आती और गुब्बारा ले लेती बच्ची बोली मेरे घर में केवल मेरी मां है जो मजदूरी करती है बड़ी मुश्किल से वह हर दिन एक रुपया देती है. गुब्बारे वाले ने सोचा चलो ठीक है तेरा नाम क्या है बच्ची ने बताया मेरा नाम मुनिया है गुब्बारे वाले को बच्ची पर दया आ जाती है फिर कहता है अच्छा एक काम कर तू यह दोनों गुब्बारे ले ले एक अपनी बहन के लिए और एक अपने लिए मुनिया बहुत खुश होती है और वह गुब्बारे लेकर घर की ओर भागने लगती है अगले दिन गुब्बारे वाला गुब्बारे बेचने आता है तभी उसे मुनिया दिखाई देते हैं मुनिया उनके पास जाकर कहती है भैया यह एक रुपया ले लो, गुब्बारे वाला ठीक है कहते हुए गुब्बारा निकाल कर मुनिया को दे देते हैं तभी मुनिया कहती है कि नहीं भैया यह तो मैं कल के रुपए दे रहा हूं कल मैं जब घर पहुंचा तो मां ने बहुत गुस्सा किया उन्होंने कहा कि बिना रुपए के कोई सामान लेना भीख मांगने के बराबर है आप यह एक रुपया ले लो. तब गुब्बारे वाले ने सोचा इतना सुंदर विचार है तेरी मां का फिर बच्ची से कहता है कि तू पढ़ने नहीं जाती क्या ? मुनिया बताती है नहीं हमारे पास इतने रुपए नहीं है, इसलिए मैं घर पर ही पढ़ लेती हूं फिर गुब्बारे वाले कहता है तुम रहती कहां हो ? मुनिया जवाब देती है वह जो सामने बड़ा सा नीम का पेड़ है उसके पीछे ही मेरा घर

है. इसी तरह समय बीत रहा था गुब्बारे वाले से कभी-कभी मुनिया एक रुपया में गुब्बारे ले जाती और अपनी बहन को दे देती थी कुछ दिन बाद गुब्बारे वाले को वह बच्ची नजर नहीं आया, अब वह गुब्बारा लेने भी नहीं आती थी एक दिन शाम को गुब्बारे वाला उनके घर पहुंच जाता है और घर के बाहर आवाज देता है मुनिया ,मुनिया तभी मुनिया की मां बाहर आती है तब गुब्बारे वाले पूछता है कि मुनिया कई दिनों से गुब्बारे लेने नहीं आई है तब उनकी मां बताती है कि भैया मेरा काम छूट गया है कटाई के बाद हम खेतिहर मजदूरों की मजदूरी बंद हो जाती है बड़ी मुश्किल से घर का खर्चा चल रहा है इसलिए मुनिया को रुपए नहीं दे पाती हूं .तभी गुब्बारे वाले ने कहा बहन क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं? नहीं भैया हम केवल मेहनत का पैसा ही लेते हैं मां ने जवाब दिया. तब गुब्बारे वाले ने एक सुझाव दिया की मुनिया को मेरे साथ गुब्बारे बेचने के लिए भेज दिया कीजिए हम दोनों गांव में घूम घूम कर गुब्बारे बेचेगे, तब मां ने कहा वह तो अभी बहुत छोटी है, गुब्बारे वाले ने कहा बहन इससे आपकी कुछ मदद हो जाया करेगी मैं चाहता हूं कि मुनिया स्कूल जाए इस काम से उसके स्कूल की फीस निकल आएगी, ठीक उसी समय मुनिया कमरे से बाहर आ जाती है और सारी बातें सुन लेती है फिर अपनी मां से कहती है कि- हां मां मेरे ख्याल से यह ठीक कह रहे हैं ,मां तैयार हो जाती है अगले दिन से मुनिया गुब्बारे वाले के साथ गुब्बारे बेचने जाने लगती है गुब्बारे वाला मुनिया का स्कूल में दाखिला करा देता है और पढ़ने के साथ-साथ मुनिया शाम को गांव के गार्डन के पास गुब्बारे बेचने लगती है धीरे-धीरे मुनिया बड़ी हो जाती है तब तक वह गुब्बारे वाला बूढ़ा हो जाता है फिर मुनिया बोलती है -बाबा अब आप काम मत कीजिए मेरी पढ़ाई पूरी हो गई है जल्द ही मुझे नौकरी मिल जाएगी तभी गुब्बारे वाले बोलता है बेटी तुझे अपनी मां और बहन का ख्याल भी तो रखनी है मैं तो जैसे तैसे अपनी जिंदगी काट लूंगा तू नौकरी करके अपनी और अपनी बहन की शादी के लिए पैसा जोड़ लेना. मुनिया बहुत पढ़ाई करती है और एक दिन उसके घर एक चिट्ठी आती है उसे सरकारी नौकरी मिल जाती है मुनिया सबसे पहले यह खबर गुब्बारे वाले को सुनाती है बाबा मुझे नौकरी मिल गई है गुब्बारे वाला उसे गले लगाकर कहता है शाबाश बेटी तेरी मेहनत रंग लाई अब शहर जाकर मुझे भूल मत जाना कभी-कभी गुब्बारे लेने जरूर आना तब उनकी मां कहती है नहीं भाई साहब यह सब आपकी मेहनत का नतीजा है, हम सब साथ में शहर में रहेंगे अभी तो मुनिया शहर जाकर इंतजाम करेगी फिर हमें लेने आएगी मुनिया अगले दिन शहर चली जाती है वहां तीन महीने नौकरी करने के बाद वह एक बड़ा सा मकान किराए पर ले लेती है और दो दिन की छुट्टी लेकर वापस घर आ जाती है फिर अपनी मां से कहती है मां तुम जल्दी से सामान बांध लो हम

सब कल ही शहर चलेंगे मैं बाबा को भी कह कर आती हूं , मां बोलती है बेटी वह तो तो अपना सामान कब का बांधकर जा चुके हैं कहते हुए फफक रोने लगती है .तब मुनिया भागती हुई गुब्बारे वाले के घर पहुंचती है और रोते हुए कहती है बाबा जीवन भर मेरी मदद करते रहे जब मेरे द्वारा सेवा करने का समय आया तो मुझे छोड़ कर चल दिए वह वहां बैठकर रोती रहती है . मुनिया की मां उसे चुप कराते हुए बोलती है बेटी कुछ लोग पेड़ की तरह होते हैं वह छाया देते हैं , फल देते हैं, लकड़ी देते हैं लेकिन लेते कुछ नहीं .

मुनिया गुब्बारे वाले को आज भी याद करती है और जो कोई भी उसे मिलता है उसे गुब्बारे वाली की कहानी जरूर सुनाती है

योगेश्वरी तंबोली जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

सोना और विवान अपने पापा के साथ गार्डन में घूमने गए थे. गार्डन में उन्हें बहुत मजा आ रहा था.वहां बहुत सारे झूले थे. सभी झूलों में झूलने के बाद वह घर आने के लिए निकल ही रहे थे कि सोना की नजर वहां आए गुब्बारे वाले पर पड़ी जो रंग-बिरंगे गुब्बारे बेच रहा था.सोना दौड़ के उसके पास गई और गुब्बारे वाले से बातें करने लगी.आप गुब्बारे कहां से लाते हैं इसे कौन फूलाता है? तुम्हारे घर में कोई बच्चे नहीं है क्या? जो गुब्बारे से खेले जो तुम इसे पार्क में बेचने आए हो? यह सुनकर गुब्बारे वाले के आंखों में आंसू आ गए. अपना आंसू छिपाते हुए उसने सोना से कहा बेटा मेरे घर में भी तुम्हारी तरह छोटे-छोटे दो बच्चे हैं गुब्बारे फुलाने का काम भी वही करते हैं.लेकिन उन्हें गुब्बारे खेलने के लिए मैं नहीं दे सकता. यदि मैं गुब्बारे नहीं भेजूंगा तो बच्चों को क्या खिलाऊंगा गुब्बारे बेचकर ही जो पैसे मिलते हैं उसका उन बच्चों के लिए खाने पीने की कुछ सामग्री आ जाती है.गुब्बारे वाले की बात सुनकर सोना अपने पापा को गुब्बारे लेने के लिए कहती है. और सारा गुब्बारा खरीद लेती है. फिर सभी गब्बरो को वापस गुब्बारे वाले को देते हुए कहती है यह गुब्बारा अपने बच्चों को खेलने के लिए देना. यह सुनकर गुब्बारे वाला खुश हो जाता है और उसमें से एक गुलाबी रंग का गुब्बारा सोना को देते हुए कहता है बेटा यह तुम्हारे लिए. सोना गुब्बारे से खेलते हुए अपने भाई विवान एवं पापा के साथ घर आ जाती है और आकर मां को सारी बात बताती है.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

मेरे राम

रचनाकार- पिंकी सिंघल, दिल्ली

संवरे सारे बिगड़े काम,
विपदा का हो काम तमाम,
संशय हटे तब मन का सारा,
प्रभु राम का लें जब नाम,

छवि अनोखी जिनकी प्यारी,
उनसे महके हर फुलवारी,
कांटों में भी गुल मुस्काए,
प्रभु राम की लीला न्यारी.

खुशबू उनकी जैसे चंदन,
बार बार है उनको वंदन,
दुखहर्ता सुखकर्ता हैं वो,
कहलाते जो दशरथ नंदन.

राघव ने भी थी रीत निभाई,
प्राण जाए पर वचन न जाई,
मां सीता के नाथ राम ने,
कीर्ति विश्व में ख़ूब थी पाई.

केवट को अपने अंग लगाया,
पुरुषोत्तम का दर्ज़ा पाया,
भक्ति में करवा लीन प्रभु ने,
रावण मुख से भी राम कहाया.

करते हैं सबका वो उद्धार,
उनके दरस मोक्ष का द्वार,
नहीं है बढ़कर कुछ भी उनसे,
राम नाम है जीवन सार.

*****

मनमोहक दृश्य

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती, कक्षा- आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

नीले गगन में उड़ रहे.
पक्षी पर फैलाके.
बाग में खिले फूल है.
मधूर सुग्न्ध फैलाके.
पेड़ की धाँव में बैठे ये बच्चे.
हँस रहे खिल-खिलाके.
प्रकृति की खुबसूरती देखो.
जीना ये सिखा दे.
फिर क्यो पक्षी को कैद मे रखा.
उन्हे यूँ तड़पाके.
फूलो को तोड़ कर मसल दिया.
अपने हाथो तले दबाके.
पेड़ो को काट दिया.
उन्हें मौन पा के.
अब न सतायेगे प्रकृति को.
चलो कसम ये खाये.

मेरे राम आ गए

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

जय-जय श्री राम, परम सुख के धाम.
जन-जन के सहारा, विष्णु के अवतारा.
राम में ही शक्ति है, राम में ही भक्ति है.
राम ही तो दृष्टि है, राम ही तो सृष्टि है.

राम नाम जपता हूँ, राम-राम कहता हूँ.
राम चारों धाम है, राम ही सत्य नाम है.
राम ही केशव है, राम ही तो माधव है.
राम नाम सार है, राम से ही संसार है.

राम ही तो धर्म है, राम ही तो कर्म है.
राम ही सगुण है, राम ही तो निर्गुण है.
राम में आस्था है, राम से ही वास्ता है.
राम में आशा है, राम तृप्त बिपाशा है.

अयोध्या में धूम मची, गली फूलों से सजी.
घी के दीप जल उठे, नगर में पटाखे फूटे.
राम से ही प्रेम है, राम नाम में सप्रेम है.
मेरे प्रभु राम आ गए, राम राज्य आ गए.

*****

मंजिल का कुछ पता नहीं

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा- 8 वीं, शास.पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

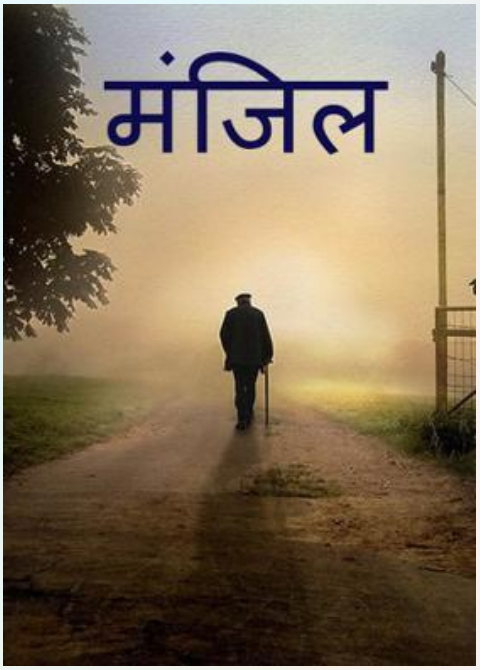

इतना पढ़ता हूँ. इतना लिखता हूँ.
न जाने किसकी चाह में?
मंजिल का कुछ पता नहीं.
चल दिया हूँ किस राह में.
कक्षा बदली. स्कूल बदला.
पूरे पढ़ने के बाद क्या मैं बदलूँ?
है मंजिल की सीढ़ी लंबी.
क्या मैं अब उसको चढ़ूँ?
पढ़ता हूँ पैसे खर्च होता है.
पिता का गिरता पसीना देख मन रोता है.
आगे बढ़ने के बाद मैंने मंजिल चुन ली.
कहकर मन में मैंने ठान ली.

मंजिल का पता चली.
मन में हुई खलबली.
अब मन लगाकर पढ़ूँगा, सपने पूरे करूँगा.
नौकरी पाकर अब मैं शान से चलूँगा.
तुम भी पढ़ना. तुम भी बढ़ना.
मेरे प्यारे दोस्तों, समझ के पढ़ना.

*****

कामयाबी

रचनाकार- करन टंडन, कक्षा 8वीं, शास.पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

पढ़ने-लिखने का मन में चाह थी.
जिंदगी में मेरी कई राह थी.
कितनों ने रोका, कितनों ने टोका.
पर मैं कभी न झुका..
सफलता को पाने की मुझमें चाह थी.
जिंदगी में तो मेरी कई राह थी.
कक्षा ऊपर कक्षा की सीढ़ी थी.
इस जिंदगी में कई पीढ़ी थी.
हमको तो डॉक्टर बन के जीवन सजानी है.
कामयाबी पाकर नई इतिहास रचके दिखानी है..
कई रातें हमने गंवाई.
तब जाके जीवन हमने पाई..
पढ़ने की तो मन में चाह थी.
जिंदगी में मेरी कई राह थी..

*****

स्मार्ट फोन जितना समय बच्चों को दें?

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह

आप के परिवार में छोटे बच्चे होंगे- आप मम्मी-पापा, दादा-दादी हैं तो इस लेख को जरूर पढ़िए. यह टौपिक हमारे विचारों से थोड़ा अलग है, पर इसकी ओर ध्यान देना बहुत जरूरी है.

स्मार्टफोन जब आज की तरह प्रचलित नहीं था तो परिवार के बुजुर्गों की एक ही शिकायत रहती थी कि नई पीढ़ी पूरे दिन मोबाइल में ही घुसी रहती है, उनकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं देती. पर अब समय बदल गया है. अब तो दादा-दादी खुद ही ह्वाट्सएप और यूट्यूब में व्यस्त रहते हैं.

दूसरी ओर छोटे बच्चे भी मोबाइल में रचेबसे रहते हैं, जिसकी आदत हम सभी ही डालते हैं. बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए उन्हें परिवार का प्यार मिलना चाहिए, कोई उन्हें पूरा प्यार दे, बातचीत करे और उनकी हर जिज्ञासा को शांत करे और जगाए, उनके साथ धींगामस्ती करे. बच्चों के लिए यह सब बहुत जरूरी होता है. पर यह सब अब घर-आंगन में खेले जाने वाले खेलों की तरह भुलाया जाने लगा है. इस बारे में एक अमेरिकी पिता क्या सोचता है, पहले यह पढ़िए. शुरूआत में मोबाइल की मदद ले कर और फिर उसके बगैर बच्चों के साथ मस्ती भरा समय कैसे बिताया जा सकता है, यह पढ़िए.

एक बहुत जानीमानी टेक्नोलॉजी संबंधित अमेरिकी वेबसाइट के एग्जिकेटिव एडिटर ने कुछ समय पहले अपने मन की बात एक लेख में लिखी थी. वह खुद एक मैगजीन के एडिटर थे, इसलिए दिन-रात फोन और इंटरनेट का उपयोग करते थे. पर यह बात उन्हें खटकती थी. आगे की बात उन्हीं के शब्दों में-

मेरी जैसी हालत बहुतों की होगी. मुझे अपने फोन के बिना एक मिनट भी नहीं रहा जाता. पर मुझे डर इस बात का है कि मेरा फोन मेरे दो साल के बच्चे का बचपन छीन रहा है.

कभी कोई महत्वपूर्ण समाचार टप से आ जाता है और उसे देखे बिना रहा नहीं जाता. इसके बाद ऊब दूर करने के लिए ऐसे ही मैसेज स्क्रोल करने लगता हूं. एक ओर लगता है कि यह मोबाइल है तो दुनिया मेरे हाथ में है. पर स्मार्टफोन की मर्यादा निश्चित करना आसान नहीं है. ग्रोसरी स्टोर में पेमेंट के लिए लाइन में खड़ा होऊं या बेटे को लेकर डाक्टर के पास गया होऊं और नंबर आने की राह देख रहा होऊं तो भी मोबाइल हाथ में ले कर कूछ न कुछ देखता रहता हूं.

2007 में एप्पल का फोन लांच होने वाला था तो मैं सख्त एक्साइटेड था और शायद तभी मेरी पत्नी को पता चल गया था कि अब प्राब्लम होने वाली है. तब से वह मुझसे कहती है कि मेरे हाथ में फोन होता है तो मैं घर में बहुत उद्धतापूर्ण व्यवहार करता हूं. अब मेरा यह व्यवहार मेरे बेटे पर किस तरह असर कर रहा है, मुझे इस बात की चिंता हो रही है. भविष्य में हमारा बेटा कहेगा कि हम ने माता-पिता के रूप में उसकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया.

स्क्रीन एडिक्शन की बीमारी मात्र मुझे ही है, ऐसा नहीं है. ज्यादातर लोग दिन में लगभग पांच घंटे मोबाइल में सिर गाड़े बैठे रहते हैं, इसमें खास कर 18 से 30 साल के लोग.

इसके पीछे का कारण है हमारा दिमाग. मोबाइल में आने वाला एलर्ट, तरह-तरह के नोटिफिकेशन जैसे पाॅप-अप होता है, हमारे दिमाग में झटका सा लगता है कि यह क्या है, हम उसे देखे बगैर रह नहीं पाते.

इससे दिमाग में डोपामाइन नाम का रसायन उत्पन्न होता है. यह वही केमिकल है, जिसके कारण हमें भूख, नशीले पदार्थों की तलब का अनुभव होता है. इसी के कारण हमें मोबाइल की स्क्रीन की भी तलब लगती है. जब हमें किसी मैसेज का इंतजार न हो, तब कोई नोटिफिकेशन या मैसेज टपक पड़े तो डोपामाइन अधिक सक्रिय हो जाता है. परिणामस्वरूप हमारे जैसे तमाम लोग मोबाइल के शिकंजे में आ जाते हैं.

हमें यह सोचना है कि हमारी मोबाइल की इस लत से हमारे छोटे-छोटे बच्चों पर क्या असर पड़ेगा? मैं अपने छोटे से बच्चे का उदाहरण देता हूं. वह कोई भी चीज हाथ में ले कर कान के पास रख कर कहता है, 'हैलो.' यह कोई हंसने वाली बात नहीं है. मेरे मोबाइल की लत ने उसके छोटे मन पर इतना गंभीर असर किया कि इस बारे में सोचता रह गया.

0 फोन बच्चों का समय छीनता है

माता-पिता के रूप में हम एक बात नहीं समझते कि हमारे बच्चे हमारा सहवास, हमारा ध्यान उनकी ओर हो, इसके लिए झंखते हैं और यह सब उनसे हमारे फोन ने छीन लिया है. शायद आप को हैरानी होगी कि बच्चों हम सब की इस फोन की लत से चिढ़ है, गुस्सा है.

कुछ समय पहले दूसरी कक्षा के बच्चों को होमवर्क दिया गया, जिसमें उन्हें छोटा सा निबंध दिया गया कि ऐसी कौन सी चीज है, जिसकी शोध न हुई होती तो अच्छा होता.

जवाब चौंका देने वाले थे. तमाम बच्चों ने लिखा था कि उन्हें उनके मम्मी-पापा का फोन जरा भी नहीं अच्छा लगता, क्योंकि पूरे दिन वे उसी में रचे-बसे रहते हैं. एक बच्चे ने लिखा था कि उसे उसकी मम्मी का फोन जरा भी अच्छा नहीं लगता, वह उससे नफरत करता है. वह चाहता है कि उसकी मम्मी के पास कोई फोन न हो.

होमवर्क देने और बच्चों का जवाब पढ़ने वाली टीचर ने अपने फेसबुक पेज पर यह जवाब लिखा तो उनकी इस पोस्ट को लगभग ढ़ाई लाख लोगों ने अपने सर्कल में शेयर किया.

माता-पिता की फोन की लत का बहुत बुरा असर होता है. उन्हें लगता है कि फोन मां-बाप के लिए उनसे अधिक महत्वपूर्ण है. यह सोच उन्हें उदास, दुखी और अकेला बना देती है.

लोगों की फोन की इस लत के लिए 'टेक्नोफरंस' शब्द का उपयोग किया जाता है. मतलब कि जब आप का फोन आप के हाथ में हो, तब आप के बच्चे, मित्र या परिवार के अन्य लोग आप से कुछ कह रहे हों तो आप का ध्यान उस ओर नहीं होता.

फोन में रचेबसे रहने वाले मां-बाप को देख कर बच्चे उनका ध्यान अपनी ओर करने के लिए तरह-तरह के उपाय करते हैं. सभी साथ खा रहे हों या बच्चों के साथ खेल रहे हों या कोई और काम करते समय मां-बाप थोड़ी थोड़ी देर में अपना फोन चेक कर रहे हों तो बच्चों को उनका समय कोई दूसरा छीन ले, यह अच्छा नहीं लगता. तब वह गुस्सा होते हैं, दुखी होते हैं या फिर रोने लगते हैं.

0 हमारे अपने समय का क्या? और इसका उपाय क्या?

मां-बाप के रूप में हम कहते हैं कि हमें भी हमारा अपना समय चाहिए - मी टाइम. हमें भी दिन भर के काम में से अपना समय चाहिए. बात सच है, पर यह बच्चों के समय के हिस्से का नहीं होना चाहिए. बच्चे को क्या चाहिए, वह क्या कहना चाहता है, यह समझने के लिए उसके साथ क्वालिटी समय बिताना जरूरी है.

आप 'फोन बाद में, बच्चा पहले' ऐसा हमेशा नहीं कर सकते, पर एक मर्यादा रेखा तो बना ही सकते हैं. आज की दुनिया बिना मोबाइल के नहीं चल सकती, पर इसका उपयोग पॉजीटिव रूप से कैसे किया जाए, बच्चों के सामने यह रखना जरूरी है.

बच्चा जब अकेला खेल रहा हो, तब फोन हाथ में लेना ठीक है, पर एक स्मार्ट व्यक्ति की तरह उस पर भी ध्यान रखना जरूरी है और अपना खेल भी खेलना है. बीच-बीच में ब्रेक ले कर उसके साथ, पूरे ध्यान के साथ बात करेंगे तो भी बहुत है. वह कभी खिलौने के साथ

खेल रहा हो तो कहें कि वाह बहुत अच्छा खेल रहा है. उसे गले लगा कर प्यार कर लें, उसके साथ थोड़ा दिस से खेल लें और फिर उसके बाद भले फोन में लग जाएं.

जरूरी है कि दोनों बातों में बराबर संतुलन रखा जाए. बच्चा कभी कभी अकेला खेलना सीखे, यह भी जरूरी है.

बच्चा हमारा ध्यान खींचना चाहे और लंबे समय तक हम उसकी ओर देखें न तो वह कुछ शरारत करेगा. पर थोड़ा इंतजार करा कर उसकी बात सुनेंगे तो धैर्य रखना सीखेगा. बच्चा बुला रहा हो और उसी समय फोन का उपयोग करना जरूरी हो तो उससे कहा जा सकता है कि एक जरूरी मेल देखना है या किसी को जवाब देना जरूरी है, इसलिए उसे धैर्य रखना पड़ेगा.

यह सब लगता तो आसान है, पर जब यह करने लगेंगे, तब लगेगा कि कितना मुश्किल है.

जबकि कहीं से शुरुआत तो करनी ही होगी. हम हमारे बच्चों को हंसता-खेलता, सभी के साथ मिलता-जुलता और सही अर्थ में खुश देखना चाहते हैं तो हमें खुद मोबाइल का समझदारीपूर्वक उपयोग करना शुरू कर देना पड़ेगा. नहीं तो ये बच्चे अभी से हमारी नकल करना शुरू कर देंगे और हमें उनका ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए क्या क्या करना होगा, यह बात भी सोच लें.

बच्चा एकदम छोटा होता है तो मम्मी या पापा उसे बगल में बैठा कर खुद हाथ में कोई स्टोरी बुक ले कर पढ़े, यह जरूरी है. भले ही बच्चे की समझ में कुछ न आ रहा हो. आज के समय के अनुसार किताब की जगह वीडियो देखें या गेम्स खेलें, नो प्राब्लम, परंतु कीवर्ड है बच्चे के साथ, उसे मोबाइल पकड़ा कर खुद इंस्टग्राम में डूबे रहें, यह नहीं चलेगा. फनब्रेन. काॅम वेबसाइट पर केजी से आठवीं क्लास तक के बच्चों के लिए उचित गेम्स, वीडियो और बुक का खजाना है. फोकस पूरा का पूरा 'एज अप्रोप्रिएट एजूकेशन' पर है मस्ती के साथ. अक्कड़-बक्कड़ सीखने से ले कर ह्युमन बाॅडी या पृथ्वी के रहस्यों को ले कर गेम्स यहां मिल जाएंगे. 'डायरी आफ ए विम्पी किड' जैसी बुक्स के चैप्टर भी पढ़ने को मिलेंगे. पर याद रहे, शुरुआत में सब कुछ बच्चों के साथ रह कर करना होगा. सब इंग्लिश में है. पर मस्ती की कोई भाषा होती है क्या?

फनब्रेन जैसी साइट से शुरुआत कर के धीरे धीरे बच्चों को थोड़ा दूर ले जाया जा सकता है. इसके लिए आप मोबाइल में 'क्राफ्ट्स फार किड्स' जैसा कुछ सर्च करें. तमाम साइट्स, एप, वीडियो आदि मिलेंगीं. इसके बाद बाजार से रंगबिरंगे कागज, क्ले, कलर्स, कैंडी स्टिक आदि ले आएं और शुरू हो जाएं क्रिसमस काड्र्स, बटरफ्लाई, पेन स्टैंड, बुकमार्क्स आदि कुछ न कुछ बनाने की टिप्स मिलेंगीं. बड़े बच्चे होंगे तो खुद ही बना कर खेल सकें इस तरह के बोर्ड गेम्स बनाने का मैथड वाली साइट्स खोजें (गेम खरा, पर खरीदें न, खुद बनाए)

इस सब के लिए मोबाइल या पीसी का उपयोग मात्र सीखने के लिए, टिप्स के लिए. इसके बाद धीरे से मोबाइल किनारे खिसका कर बच्चे के साथ पालथी मार कर बैठ जाएं. इसमें परीक्षा आप की है, बच्चे की नहीं.

0 बढ़िया पेपर टाप्स बनाना सिखाएं

बच्चे को पेपर क्राफ्ट में मजा आने लगा? तो अब इस दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है और उसे मोबाइल से दूर ले जाया जा सकता है. इसकी खातिर बस थोड़ी देर के लिए हाथों में मोबाइल लीजिए और पेपरटाॅयज.काॅम नाम की एक मजेदार साइट पर पहुंच जाएं. तमाम छुट्टियां कम हो जाएंगीं, वहां इतना खजाना है. साइट पर अनेक पेपरटाॅयज या माडल बनाने की आसान विधि दी गई है. हर एक के लिए ए-4 साइज के पेपर पर माडल का कटआऊट दिया है. आप उस पेज पर पहुंच कर पूरे पेज की इमेज, घर में प्रिंटर हो तो प्रिंट कर लीजिए. यहां इनलार्ज की गई प्रिंट भी ली जा सकती है. हर माडल के लिए असान फोल्ड, नंबर के साथ दिया है. इसके बाद कैंची और गोंद ले कर जुट जाएं. दादा-दादी और छोटे बच्चों के बीच लगाव बढ़ाने का यह आसान रास्ता है.

0 मोबाइल किनारे रख कर धमाल, धींगामस्ती करें

मोबाइल गेम्स की तरह आप नीचे के तीन लेवल आप सक्सेसफुली पार कर गए? तो अब आगे बढ़ें अल्टीमेट लेवल की ओर. आप को और आप के बच्चों को मोबाइल की जबरदस्त लत लगी है तो इस लेवल पर पहुंचना थोड़ा मुश्किल होगा. पर एक बार यहां पहुंच जाएंगे तो इतना मजा आएगा कि मोबाइल हमेशा के लिए किनारे पड़ा रहेगा.

केवल इतना करें- घर का कोना खंगालें और पुरानी गेंद, जम्पिंग बाल्स, स्माइली बाल्स, रिंग्स आदि धूल खाती पड़ी हों तो इन्हें खोज निकालें. पुराना खोखा भी चलेगा, साथ ही नई-पुरानी कोल्डड्रिंक की बोतल भी खोज लें. पेंसिल का टुकड़ा, डस्टबिन, प्लास्टिक के कप आदि भी चलेंगे.

अब चैलेंज यह है कि इन साधनों के मिलने के बाद तो इसमें किसी गेम्स का सोचना. जैसे कि बोतल और प्लास्टिक के कप आदि को टार्गेट बना कर उसे स्माइली बाल से बंद कर देना. एप को क्रिएटिव हो कर बच्चा ऊबे न इस तरह का गेम सोचना है और उसे अधिक से अधिक इंटरेस्टिंग बनाना है.

खेलने के काम आने वाली ऐसी कोई चीज न मिले तो किसी भी सामान को ले कर बच्चे के साथ ऐक्टिव रहें. फिजीकल ऐक्टिविटी और फन, इन्ही दोनों बातों को ध्यान में रखना है.

शुरुआत में आप के दिमाग में कुछ न आता हो तो पिंटरेस्ट या यूट्यूब की मदद ले सकते हैं. खास कर पिंटरेस्ट में टूडलर ऐक्टिविटीज सर्च करें. छोटे बच्चे के साथ बिना किसी साधन के बाल, गुब्बारा या किसी अन्य खिलौने के साथ खेला जा सकता है. इस तरह बच्चों को फिजिकली ऐक्टिव और एनर्जेटिक रखा जा सकता है.

इस तरह गेम खेल कर आप का बच्चा खुशी से लोटपोट होगा तो थक कर कहेगा, "अब बस." तब समझिए कि आप अल्टीमेट लेवल पार कर गए. अभी बच्चे एटेंशन पाने के लिए मोबाइल और हमारे बीच स्पर्धा है. आप मोबाइल को जीतने देंगे तो बच्चा हारेगा.

*****

विज्ञान दिवस

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

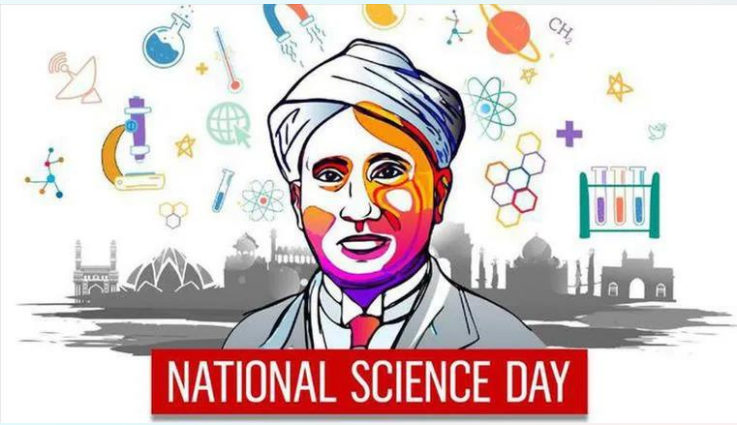

जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.
जाँच परखकर, बात बताता, वरदानी विज्ञान.

आदिम युग से वर्तमान तक, देखें तनिक इतिहास,
वैज्ञानिकता ने ही इसको, आज बनाया खास,
सुखद बयारें सतत बहाता, वरदानी विज्ञान.
जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.

पहले तो दुष्कर होते थे, छोटे-मोटे काज,
काम चुटकियों में बनते हैं, घर बैठे अब आज,
सात समुंदर पार कराता, वरदानी विज्ञान.
जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.

नित आविष्कारों ने लाया, जीवन में बदलाव.
धन्य हुई भारत की धरती, बिखरा रमन प्रभाव,
आज दिवस यह याद दिलाता, वरदानी विज्ञान.
जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.

छेरछेरा परब

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

हमर मन के गली-खोर म हवय डेरा.
माँगे बर आए हवन तुंहर घर छेरछेरा.

धान ह धरागे, पुस पुन्नी के दिन आगे.
टूरी-टूरा मन सुआ अउ डंडा नाच नाचे.
हम लइका-पिचका मन घेरे हवन घेरा.
माँगे बर आए हवन तुंहर घर छेरछेरा.

कोनों धरे हन बोरी, कोनों मन चुरकी.
कोनों धरे हन झोला, कोनों मन अंगौछी.
छबाए कोठी के धान ल झटकुन हेरा.
माँगे बर आए हवन तुंहर घर छेरछेरा.

एक पसर देदे या देदे सूपा म भरके.
कहूँ खोंची म देबे, लेलेबो हमन लरके.
दूसर दूवारी जाना हे, होगे अबड़ बेरा.
माँगे बर आए हवन तुंहर घर छेरछेरा.

मेरे प्यारे शिक्षक

रचनाकार- अंकित बघेल, कक्षा-छठवीं, शास.पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

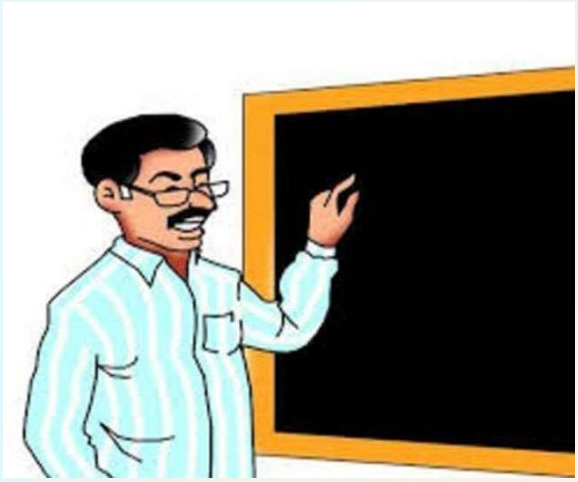

मेरे प्यारे शिक्षक.
सबसे न्यारे मेरे शिक्षक.
पढ़ाते हो, लिखवाते हो.
आप कितना ज्ञान से सीखाते हो.

मुझे भी आप जैसा ज्ञान चाहिए.
मुझे भी दुनिया में सम्मान चाहिए.
आपके ही सहारा से पढ़ता हूँ.
मंजिल की सीढ़ी में धीरे-धीरे चढ़ता हूँ.

आप कविता लिखना सीखा दिये.
आप कवि बनाकर दिखला दिये.
मेहनत से पढ़ाया.
मंजिल में चढ़ाया.

मैं कुछ भी बन कर दिखलाऊँगा.
मैं भी अपने सर जैसे पढ़ाऊँगा.

*****

मेरा प्यारा बचपन

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा आठवीं, शास.पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

वो बचपन की लम्हें याद आ जाती है,
जब हम खेलते, कूदते और हँसते थे.

कभी दोस्तों से मजाक किया करते थे,
तो कभी मुसीबतों में साथ दिया करते थे.

वह बचपन की हर चीज याद आ जाती थी,
जो हम बचपन में खेला करते थे.

यादों में हम खोए रहते थे,
भविष्य में आगे बढ़ने का एक सोच रखते थे.

एक नई उम्मीद लिए खड़े रहते थे,
घंटों पसीना बहाकर पैसा कमा लिया करते थे.

खाने के लिए कुछ सामान ला लिया करते थे,
पैसे बचाने के लिए माँ से कुछ डाँट खा लिया करते थे.

साथी मिलकर कुछ काम कर लिया करते थे,
माता-पिता को पता न चले कहकर,
कपड़े को साफ और हाथ को धो लिया करते थे.

जो पैसे हम बचा लिया करते थे,
वो पैसे हम पार्टी में उड़वा दिया करते थे.

*****

नारी हूं

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह

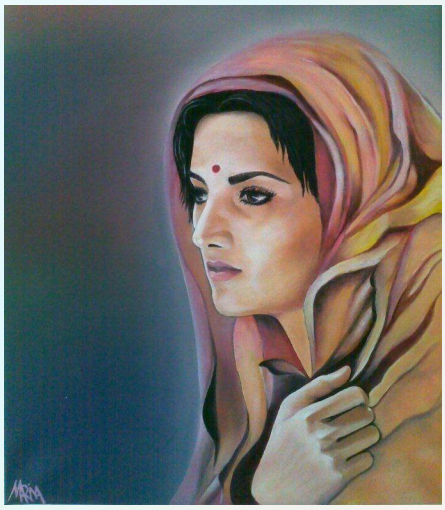

सीता जैसी पवित्रता नहीं,
है मात्र चंचल मन का आलाप,
आप की राह में आतुर सामान्य नारी हूं.
शबरी जैसा धीरज नहीं,
है मात्र जिम्मेदारी का बोझ,
आप की राह में आतुर सामान्य नारी हूं.
राधा जैसी असीम प्रीत नहीं,
है मात्र दुनियादारी का भार,
आप की राह में आतुर सामान्य नारी हूं.
मीरा सम सहनशीलता नहीं,
है मात्र चतुर समाज का भय,
आप की राह में आतुर सामान्य नारी हूं.

*****

आगे छेरछेरा

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा आठवीं, शास.पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, मुंगेली

चल संगी अब झन कर तैंय अबेरा.
बोरी, सूपा ल धर ले, आगे हवय छेरछेरा.
ए घर जाबो, ओ घर जाबो.
लम्बा, जुच्छा बोरी ल देखाबो.
छेरछेरा देवा कहिके, हमन संगी चिल्लाबो.
गीत ल गाबो, घर म सूते किसान ल बलाबो.
कट्टी-कट्टी धान धरे हवय, तेन बोरी ल खुलवाबो.
आज आगे छेरछेरा के दिन, छेरछेरा मांगे ल जाबो.
चल संगी अब झंन कर तैंय अबेरा.
बोरी, सूपा ल धर ले, आगे हवय छेरछेरा.

*****

ऊर्जा संरक्षण

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

आओ! नित ऊर्जा बचाएँ.
ऊर्जा संरक्षण में जुट जाएँ.

डीजल, पेट्रोल, गैस, कोयला
प्रकृति के हैं संसाधन सीमित,
हुआ समाप्त न ऊर्जा संकट
कैसे मानव रहेगा जीवित,

लें सँवार जलवायु परिवर्तन
स्वच्छ - हरित ऊर्जा बनाएँ.

आज ऊर्जा बचत करेंगे
जीवन तभी सुखी कल होगा,
किये सफल सार्थक प्रयास से
उज्ज्वलतम भविष्य फल होगा,

ऊर्जा की बर्बादी रोकें
ऊर्जा प्रौद्योगिकी अपनाएँ.

पंखे, एसी, हीटर, गीजर
घर में लगातार हैं चलते,
ऑफिस, गाँव, शहर, गलियों में
हैलोजन - ट्यूबलाइट जलते,

नियंत्रित विद्युत - उपकरणों से
बिजली की कुल खपत घटाएँ.

मोटर साइकिल, कार, स्कूटी
कम से कम हम करें प्रयोग,
कभी दूर तक जाना हो तो
बस - टेम्पो कर लें उपयोग,

थोड़ी दूर चलें पैदल ही
हँसी - खुशी साइकिल चलाएँ.

प्रेशर कुकर. सोलर कुकर
सोलर लालटेन है उत्तम,
सोलर पंप चलाना हितकर
धन - विद्युत - व्यय भी होता है कम,

प्राकृतिक जीवन - शैली से
स्वास्थ्य, बुद्धि, बल, ओज बढ़ाएँ.

गैर - परंपरागत ऊर्जा
नवीकरणीय तकनीक दक्ष है.
सौर ऊर्जा पर निर्भरता
जन - जन के हित कल्पवृक्ष है.

भारत, जग को नई दिशा दे
हम जागें औरों को जगाएँ.

'सूर्योदय योजना' लाभप्रद
लगें छतों पर सोलर पैनल,
सब्सिडी अनुदान मिलेगा
खुल जाएँगे सुख के चैनल,

डर न कोई बिजली जाने का
सुविधा का आनंद उठाएँ.
आओ! नित ऊर्जा बचाएँ.

*****

डब्बू सुधर गया

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

एक जंगल में रानी नाम की एक हथिनी रहती थी .

उसका एक बेटा था, उसका नाम डब्बू था. जंगल के जानवर दूसरे जानवर डब्बू से बहुत परेशान थे.

डब्बू आए दिनी किसी जानवर खेत में जा कर गन्ना तरबूजा खाता और तहस नहस कर देता था ,तो कभी किसे बागीचे में जा कर आम केला अनार अमरूद अनार पपीता के पेड़ों को हीला हीला कर सारा फल जमीन पर गिरा देता था.

जब जानवर डब्बू को मारने जाते तो डब्बू उल्टे उनको पकड़ कर हवा में घुमा कर जमीन पर गिरा देता था.

आए दिन रानी को डब्बू की शिकायत सुसने को मिलती थी. रानी बहुत समझाती डब्बू तू सुधर जा वनाॅ मैं तुमको शहर के चिड़िया घर में भेज दूंगी तब तेरी सारी शरारत छूट जाएगी. न घुमने को मिलेगा न किसी का नुकसान करने को मिलेगा.

मां रानी की बात सुनकर डब्बू बोल उठता मां तुम हमें चिड़िया घर मत भेजना मैं अब किसी का कुछ भी नुकसान नहीं करूंगा.

मगर दो चार दिन बीतने पर डब्बू की सरारत फिर शुरू हो जाती.एक दिन डब्बू शेर के सेव वाले बाग में पहुंच कर पहले तो पेट भर सेव तोड़ तोड़ कर खाया फिर ढेर

सारी सेव तोड़ कर जमीन पर फेकने लगा उसी वक्त शेर से वहां आ गया और डब्बू से बोला वो डब्बू के बच्चे क्या हमारे सेव के बाग को अपने बाप का बाग समझ रखा हो जो तोड़ तोड़ कर फेंक रहा है.

"हां हां मेरे बाप का बाग है, तुम मेरा क्या कर लोगे! "

डब्बू की इतनी बात सुनकर कर शेर गुस्से में आ गया और डब्बू को पकड़ कर उसे रस्सी से बांध कर जमीन पर लेटा दिया और इसकी सूचना उसकी मां रानी को जा कर दे आया.

अपने बेटे डब्बू की इतनी बड़ी शिकायत सुनकर

रानी गुस्से से आग बबूला हो गई और तुरंत डब्बू के पास पहुंच कर बोली आज मैं तुमको चिड़िया घर भेज कर ही दम लूंगी.

अपनी मां की बात सुनकर कर डब्बू बोला मां आज तुम हमें माफ कर दो मैं कसम खा कर कहता हूं कि अब किसी का कोई नुकसान नहीं करूंगा .तुम मुझे क्षमा कर दो इतना कह कर डब्बू रोने लगा. तभी शेर वहां आ गया और रानी से बोला इसे शहर के चिड़िया घर भेजना ही ठीक रहेगा. इस पर दया करने की कोई जरूरत नहीं है.

"हां हां शेर राज आप सही कह रहे हैं मैं इसे चिड़िया घर भेज कर ही रहूंगी. रोज रोज इसकी शिकायत सुन सुन कर मैं बहुत तंग आ गई हूं.

कल इसे मैं वन विभाग की टीम के हवाले कर दूंगी ताकी वे इसे चिड़िया घर भेज सके.

इतना कह कर रानी डब्बू को छोड़ कर जाने लगी.

तभी डब्बू रोते हुए बोला मां तुम मेरी बात का विश्वास करो अब कभी कोई शरारत नहीं करूंगा.

डब्बू को रो रो कर कहते सुनकर रानी बोली अबकी बार तो तुमको माफ कर दे रही हूं तीसरी बार फिर किसी का नुकसान किया तो तुमको चिड़िया घर भेज कर ही रहूंगी.

रानी ने शेर से कह कर उसके शरीर से बंधी रस्सी खोलवा कर अपने साथ ले कर घर जाने लगी.

उस दिन के बाद डब्बू ने अपनी सारी शरारत छोड़ दिया और अपनी मां के साथ रहने लगा.

डब्बू के सुधर जाने पर जंगल के सभी जानवर बहुत खुश हुए.

*****

पहेलियाँ विटामिन की

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

1. विटामिन को किसने खोजा है
शून्य कैलोरी के आधार.
उपापचय - क्रिया में सहायक
कार्बनिक योगिक के हैं प्रकार.

2. नाम रासायनिक 'रेटिनॉल' है
क्या है उस विटामिन का नाम.
कमी से रतौंधी-संक्रमण का खतरा
दूध - पनीर से मिले तमाम.

3. नाम रासायनिक 'सायनोकोबालामिन'
इसमें कोबाल्ट भी पाया जाता.
मांस , कलेजी, दूध से मिलता
कमी से एनीमिया रोग सताता.

4. विटामिन खट्टे फलों से मिलता
कमी से निकले मसूड़ों से खून.
छिली हुई सब्जी धोने से
विटामिन हो जाता है न्यून.

5. 'हार्मोन 'भी इसको कहते
कमी से रिकेट्स होता रोग.
प्रातःकाल धूप से ले लो
अंडे - दूध करो उपयोग.

6. नाम रासायनिक 'टोकोफेरॉल' है
सौंदर्य विटामिन भी कहलाता.
कमी से जनन शक्ति कम होती
सब्जी, तेल. दूध है दाता.

7. फिलोक्विनोन' रासायनिक नाम है
इसी से रक्त का थक्का जमता.
हरी सब्जियों में यह विटामिन
जीवाणुओं से आँत में बनता.

उत्तर - 1 कासिमिर फंक 2 विटामिन - ए 3 विटामिन - बी 12, 4 विटामिन - सी 5 विटामिन - डी 6 विटामिन - ई 7 विटामिन - के

*****

हम भारत के बालक

रचनाकार- संतोष कुमार कर्ष, कोरबा

हम हैं नन्हे मुन्ने बालक,
कदम बढ़ाते हैं,
भारत मां की रक्षा खातिर,
मर मिट जाते हैं.

देश की रक्षा हम करेंगे,
शपथ उठाते हैं,
नहीं डरेंगे नहीं झुकेंगे,
आगे आते हैं.

भारत मां की रक्षा खातिर,
शीश कटाते हैं,
नहीं चाहिए कोई प्रलोभन,
भ्रष्टाचार मिटाते हैं.

तिरंगे की खातिर,
हम जान लुटाते हैं,
दाग न कोई लगने देंगे,
विश्वास दिलाते हैं.

पीठ नहीं दिखाएंगे,
शहीद हो जाते हैं,
तिलक लगाकर कसमें खाकर,
मां से मिलकर आते हैं.

भारत में हम जन्म लिए,
भारतीय कहलाते हैं,
देश की रक्षा हम करेंगे,
शपथ उठाते हैं.

*****

स्वर ले सेहत

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

अ – अमली लाटा मनखे खाये.
मुॅंह कोती ले लार बहाये.
आ – सबो चाय मा डारँय आदा .
कब्ज रोग जब होवय जादा.

इ – इलायची हे बड़ गुणकारी.
खा लव जब मुॅंह महके भारी .
ई– ईख चुहक के सब झन खावव.
पेट रोग ला दूर भगावव.

उ– उड़द दार के बने बिजोरी.
गोल–गोल अउ चिक्कन गोरी.
ऊ– खान–पान ले मिलथे ऊर्जा.
रहिथे पोठ देह के पुर्जा.

ए– एलोवीरा लगा चाम मा.
घूम आव सब तेज घाम मा.
ऐ– ऐनक ऑखी मा लग जाथे.
देखे मा जब धुॅंधरा पाथे.

ओ– मीठ ओखरा घलो नँदागे.
सुग्घर गुरतुर जे हा लागे.
औ– औंरा हावय बड़ उपयोगी.
खा के राहत पावय रोगी.

अं – अंगाकर हा गजब मिठाथे.
संग टमाटर चटनी भाथे.
अः – आखर के पाछू मा रहिथे.
शब्द भार ला येहर सहिथे.

*****

बचपन

रचनाकार- अनिता मंदिलवार सपना

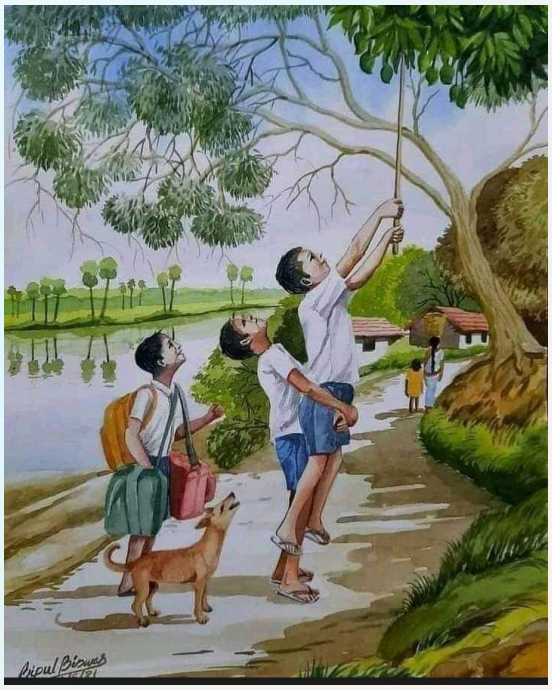

बचपन कितना सुहाना था
उसका भी एक फसाना था

पिता के कंधे पर कभी-कभी
मां के आंचल में छिप जाना था

मिट्टी के खिलौने से खेलना
सखियों का साथ मस्ताना था

पतंग के पीछे कभी भागना
तितलियों के संग दौड़ना था

परछाई के संग चलना
कभी बारिश में भीगना था

सच कहे है ये सपना
दिन हसीन थे बताना था

*****

दादा जी, नाना जी

रचनाकार- अनिता मंदिलवार 'सपना'

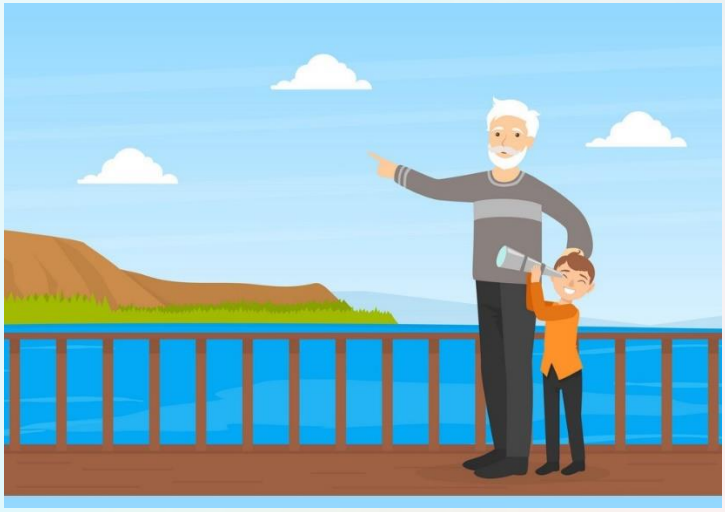

दादा दादी के
बच्चे होते हैं जान
नाना नानी की तो
बसते हैं उन में प्राण
परियों की कहानी
वो सभी
किस्से बयानी
आपका साथ
उन्हें भाता है
खुशियों के रंग
भर जाते हैं
आपका साथ पाकर
हम फूलों सा
खिल जाते हैं

प्यार दुलार आपका
ढेर सारा हम पाते हैं
दूर रहकर आपसे
नहीं होते हैं कभी दूर
आपकी दी हुई सीख
जीवन की है सौगात
आपके चरणों में
वंदन है हर बार !

*****

घर

रचनाकार- अनिता मंदिलवार 'सपना'

सभी को होता है
अपना घर प्यारा
जहाँ बाँटते मिल बैठ
प्यार होता बहुत सारा
अपनी अपनी कहते
खुलता खुशियों का पिटारा
तीज त्योहार पर
बनता मिठाई सारा
पकवान होते इतना सारे
पर जी नहीं भरता हमारा
सुरक्षा कवच हम सब की
बचाता हर आपदा से
रिश्ता बनाता प्यारा
घर हमारा सबसे न्यारा!

*****

छेरछेरा

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

कहु टुकनी कहु चुरकी,
कहु झोला ले जाबो जी.
सबो घर के दुवारी म,
धान बर गीत गाबो जी.
ख़ुशी के बाग म मन हर,
हमर ये झूम जाथे जी.
अबड़ सुघर हे छेरछेरा,
परब मिलके मनाबो जी.

संगी साथी सबो मिलके,
गली अउ खोल जाबो जी.
गोहारत हम सबो के घर,
सूपा भर धान पाबो जी.
हमर छत्तीसगढ़ के ये,
हवय पहचान दुनिया म.
चलव पबरित परब हमरो,
छेरछेरा मनाबो जी.

लिपके पोतके घर ल,
सरग जइसे सजाबो जी.
सोहारी ठेठरी कुरमी,
बरा गुझिया बनाबो जी.
जगाथे जे हमन के भाग ल,
हावय ओ छेरछेरा.
ख़ुशी के गीत गा गा के,
परब आवव मनाबो जी.

*****

बलिदानी वीर नारायण सिंह

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

चिन्हारी जे वीर पुरुष हे,भरे कटोरा धान के.
वीर नारायण ले पबरित हे, भुइँया सोनाखान के.

वीर नारायण के जिनगी म,अइसे दिन भी बीते हे.
एक अकेला अंग्रेजी शासन से,लड़ के जीते हे.
जब अकाल के बेरा आईस,जन-जन तरसीन दाना ल.
धरम करम बर ये ही धरमी,लुटे रहिस खजाना ल.
घोड़ा म चढ़के जाएँ, बलिदानी सीना तान के.
वीर नारायण ले पबरित हे, भुइँया सोनाखान के.

बज्र बरोबर तन के बलिदानी,जब भुइँया नापे.
सेट महाजन अउ अँग्रेजी,शासन थर-थर काँपे.
जेहर आघु म आ जाये,अपन प्राण गवाएं.

मेंछा म दे ताव वीर जब,जब तलवार चलाये.
आज वहीं बलिदानी दे,आदर्श हमर अभिमान के.
वीर नारायण ले पबरित हे, भुइँया सोनाखान के.

*****

मुरलियाँ

रचनाकार- डिजेन्द्र कुर्रे "कोहिनूर"

मधुर मुरलियाँ से,
तान छेड़ - छेड़ हरि.
राधिका रानी को नित,
कन्हाई रिझाने लगे.

बाल ग्वाल संग ले के,
गोपिकाओं के घरों में.
छुपते छुपाते हरि,
माखन चुराने लगे.

भले छोटे बालक है,
पर जग पालक है.
वृन्दावन घूम-घूम,
धेनु भी चराने लगे.

शुभता के सूत्र बन,
यशोदा के पुत्र बन.
गोकुल में रोज-रोज,
खुशियाँ बढ़ाने लगे.

*****

अलाव

रचनाकार- प्रीति श्रीवास, मुंगेली

ठंड सताती , तब जल जाती
गरम -गरम अलाव हमारी
सर्दी जब हमे ठिठुराती
गरमाहट दे ठंड भगाती
सब के मन को खूब भाती
गरम गरम अलाव हमारी.
चम -चम - चम चमकती रहती
धू-धू -धू कर जलती रहती
सोने सी लपटो वाली
गरम - गरम अलाव हमारी.

सुबह - शाम याद आती
मम्मी तब अलाव जलाती
बैठ घेरे मे हमें तपाती
गरम - गरम अलाव हमारी.

*****

चूहिया की शादी

रचनाकार- प्रीति श्रीवास, मुंगेली

अभी खबर जंगल से आई
चूहिया की शादी है भाई
चारो ओर खुशिया छाई
बटने लगे खूब मिठाई
सज गया बिल शोभा पाई
बजने लगी मंगल शहनाई
फिर वह शुभ घड़ी आई
दूल्हन चूहिया की हुई सजाई
बन ठन कर चूहिया इतराई
दर्पण देख खूब शरमाई
तभी चूहे की बारात आई
सुनकर चूहिया मन ही मन मुस्काई
बिल्ली ने शादी संपन्न कराई
चुहिया ने खुशी मनाई

*****

मेरी माँ

रचनाकार- नलिन खोईवाल, मध्यप्रदेश

माँ का बहुत सुंदर नज़ारा,
माँ खुदा का रूप है प्यारा.

बेटा कितना भी नाकारा,
पर माँ की आँखों का तारा.

करी कटौती समय गुजारा,
मुझ पर अपना सब कुछ वारा.

माँ ममता की निर्मल धारा,
करें निछावर जीवन सारा.

माँ ही मंजिलें,माँ किनारा,
माँ से बनें जीवन हमारा.

*****

मतवाली कोयल

रचनाकार- नलिन खोईवाल, मध्यप्रदेश

नीम पर करती है बसेरा,
इनसे खूबसूरत सवेरा.

कड़वा-कड़वा खाती कोयल,
मीठा-मीठा गाती कोयल.

कुहू-कुहू की तान लगाती,
भोर भए यह हमें जगाती.

दिखने में है काली कोयल,
चाल चलें मतवाली कोयल.

कितना मधुर-मधुर बोले हैं,
कानों में यह रस घोले हैं.

तन का रंग कभी ना देखो,
पहले-पहल गुणों से परखो.

*****

ठंड-ठंड है ठंडी लगती

रचनाकार- नलिन खोईवाल, मध्यप्रदेश

ठंड-ठंड है ठंडी लगती,
सूर्य तपन से झटपट भगती.

पेड़ भी ठंड से काँपे हैं,
पंछी इधर-उधर भागे हैं.

नहाने का मन नहीं करता,
पर धूप से हौसला बढ़ता.

ठंड बहुत कैसे स्कूल जाएँ,
सूझे न क्या बहाना बनाएँ.

शीत से काँपे जब तन मेरा,
साइकिल का करूँ इक फेरा.

कुछ भी खाए सभी हज़म है,
देखें किसमें कितना दम है.

जितना पहनो लगता कम है,
ठंडी इतनी कि आँख नम है.

अलाव से ठंड भगाते हैं ,
मिलकर हम खुशी मनाते हैं.

*****

परीक्षा परख हमारी

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'

समय परीक्षा का जब आये,
तनिक नहीं घबराओ बच्चों.
धैर्य रखो मन में नित अपने,
पाठ पठित दुहराओ बच्चों.

व्यर्थ नहीं तुम समय गँवाओ,
आलस से झट नाता तोड़ो.
कठिन परिश्रम का फल मीठा,
विपदाओं का तुम मुख मोड़ो.

ध्यान लगाकर करो पढ़ाई,
साथ सफलता ही आयेगी.
अपने पथ पर आगे बढ़ना,
दुनिया फिर तुमको भायेगी.

सजग रहे हम, अडिग रहे हम,
जीवन पथ पर सबकी बारी.
नहीं संतुलन भय से खोयें,
कठिन परीक्षा, परख हमारी.

*****

बचपन

रचनाकार- वर्षा जैन, बेमेतरा

विश्वास भरे कदमों की आहट है
“बचपन”
जिज्ञासा भरी सोच का नाम है
“बचपन”
निश्वार्थ, निर्मल मन की उत्तम परिभाषा है
“बचपन”
छल, द्वेष, दम्भ, पाखंड से परे है
“बचपन”
झूठी चकाचौंध और दिखावे से दूर है
“बचपन”
मन की सच्चाई का दर्पण है
“बचपन”
रिश्तों की गरिमा का मान है

“बचपन”
चिंतामुक्त और उन्मुक्त है
“बचपन”
सचमुच कितना प्यारा और भोला है
“बचपन”
सही दिशा में तराशें
तो बनकर कोहिनूर चमकता है
बचपन

*****

एक दिन जरूर रंग लाएगा

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

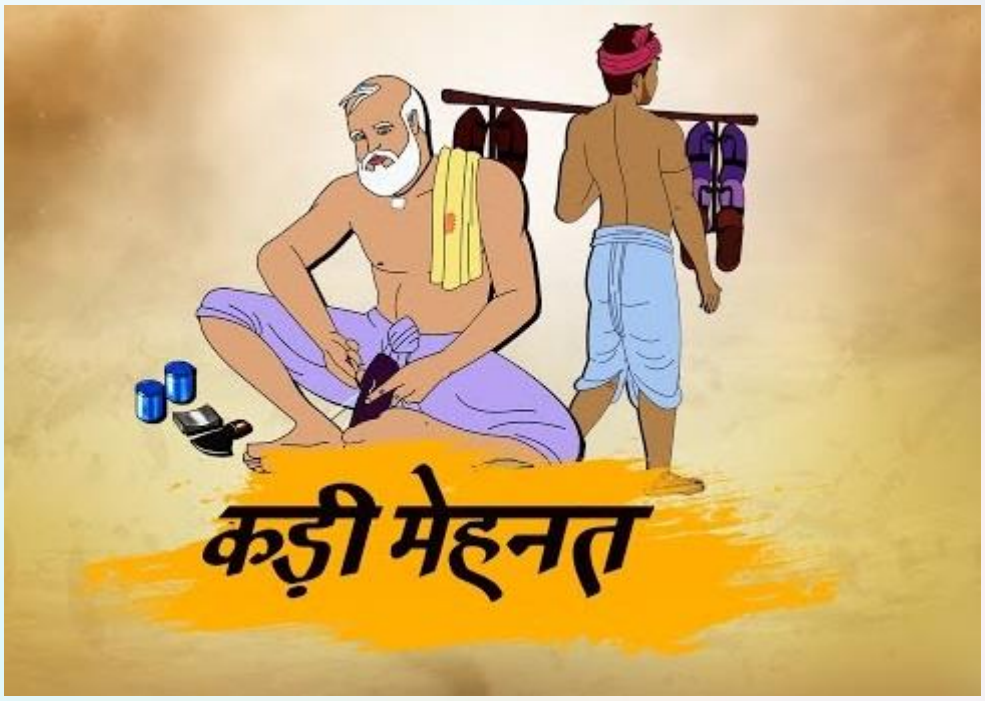

कड़ी मेहनत कर आगे बढ़ ,
सफलता तुझे मिल ही जाएगा.
मेहनत की ये तेरी कोशिश,
एक दिन जरूर रंग लाएगा.

संघर्षों की कहानी लिखते जा,
परिणाम तुझे मिल ही जाएगा.
संघर्ष की ये तेरी कोशिश,
एक दिन जरूर रंग लाएगा.

आज रास्ता बना लिया है,
कल मंजिल भी मिल जाएगा.

हौसलो की ये तेरी कोशिश,
एक दिन जरूर रंग लाएगा.

अपने अंदर जुनून पैदा कर,
लक्ष्य तुझे मिल ही जाएगा.
जुनून की ये तेरी कोशिश,
एक दिन जरूर रंग लाएगा.

जीवन में कुछ चाहत है अगर,
कभी न कभी मिल ही जायेगा.
चाहत की ये तेरी कोशिश,
एक दिन जरूर रंग लाएगा.

*****

अभी तो बहुत दूर तक जाना है

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

चल फैला अपने पंख को
मत रोक अपनी उड़ान को
खुद से किया वादा निभाना है
अभी तो बहुत दूर तक जाना है.

न कोई हिला सके तेरे हौसले को
इतना मजबूत बनाना है खुद को
अरमानों के उड़ान तुझे भरना है
अभी तो बहुत दूर तक जाना है.

तेरी किस्मत भी हार मान जाय
कड़ी मेहनत और संघर्ष देखकर

ऐसी जोश अपने अंदर जगाना है
अभी तो बहुत दूर तक जाना है.

चुनौतियों तेरे आड़े आएगी
तुझे तेरे लक्ष्य से भटकाएगी
इन चुनौतियों से तुझे लड़ना है
अभी तो बहुत दूर तक जाना है.

यूं ही नही मिलेगी तुझको मंजिल
यूं ही नही होगा सब कुछ हासिल
खुद के दिल में आग लगाना है
अभी तो बहुत दूर तक जाना है.

*****

गणतंत्र दिवस

रचनाकार- श्याम सुन्दर साहू, गरियाबंद

अपना 75वां गणतंत्र दिवस मनाएंगे,
वीर शहीदो को श्रद्धा सुमन चढ़ाएंगे.

इस दिन का रहता है सभी को इंतजार,
इस दिन मिला था गणतंत्र का उपहार.

यह है हमारे देश का राष्ट्रीय त्यौहार,
इसलिए सभी करते हैं इससे प्यार.

अपना प्यारा तिरंगा झंडा फहराएंगे,
सब मिलकर गणतंत्र दिवस मनाएंगे.

लोगों को मिला मतदान का अधिकार,
जिससे बनी देश में जनता की सरकार.

आओ डॉ अम्बेडकर को याद करे,
सभी महापुरुषों का सत्कार करे.

भारत माता को आज सब करे नमन,
ताकि देश मे रहे शान्ति और अमन.

आज के दिन सबको दे शुभकामनाएं,
आओ मिलकर गणतंत्र दिवस मनाएं.

*****

सूरज आया , सूरज आया

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं

रोज सुबह सूरज आकर,
हम सबको रोज जगाता.
सूरज की किरणें आती,
तब सारी कालियाॅ भी खिल जाती.
उगता हुआ सूरज कहता है कि,
उदय हो या अस्त एक समान रहता है .
उसके आने से अंधकार खो जाता,
सारा जग सुंदर बन जाता.
यही रात भगाकर,
नया सवेरा लाता.

*****

फिर से तुझे पढ़ना होगा

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

सच करना है सपना अगर,
तुझे नींद से जगना होगा.
राह बहुत मुश्किल है मगर,
फिर से तुझे पढना होगा.

पाना है लक्ष्य को अगर,
आलस्य को छोड़ना होगा.
जीवन मे कुछ बनना है अगर,
फिर से तुझे पढना होगा.

आज हार गए है अगर,
कोशिश तुझे करना होगा.

कल जीत तेरी होगी मगर,
फिर से तुझे पढ़ना होगा.

कठिन चुनौतियां हैं मगर,
इन चुनौतियों से लड़ना होगा.
सफल इंसान बनना है अगर,
फिर से तुझे पढ़ना होगा.

बहुत मुश्किल है यदि डगर,
फिर भी तुझे चलना होगा.
अपने पैरो मे खड़ा होना है अगर,
फिर से तुझे पढ़ना होगा.

*****

जब लक्ष्य रहेगा सीने में

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

न तकलीफ न संघर्ष
फिर क्या मजा जीने में
मंजिल जरूर मिलेगा
जब लक्ष्य रहेगा सीने में.

न कोई तड़प न जूनून
फिर क्या मजा जीने में
तूफान भी थम जाएगा
जब लक्ष्य रहेगा सीने में.

किस्मत जरूर बदलेगा
जब तू नहाएगा पसीने में
ख्वाब जरूर पूरा होगा
जब लक्ष्य रहेगा सीने में.

जब पानी साफ न हो तो
फिर क्या मजा पीने में
सफलता कदम चूमेगा
जब लक्ष्य रहेगा सीने में.

हौसला और विश्वास रखो
अपने दिल के नगीने मे
सपना जरूर सच होगा
जब लक्ष्य रहेगा सीने में.

*****

शून्य से शिखर तक जाना है मुझको

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

राह कितना भी कठिन क्यों न हो,
मंजिल की ओर बढ़ना है मुझको,
लक्ष्य को हासिल करना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

आज हार गए तो कोई गम नही,
फिर से कोशिश करना है मुझको,
जीत का परचम लहराना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

जीवन में कैसे भी परिस्थितियों आए,
इन परिस्थितियों से लड़ना है मुझको,
अपने सपने को सच करना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

राह में चाहे हजारों लाखो कांटे बिछे हो,
कांटों को पारकर निकलना है मुझको,
पुष्प की आशा छोड़ बढ़ना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

जीवन में कोई कार्य असंभव हो तो,
इसे संभव करके दिखाना है मुझको,
सफलता की सीढ़ी चढ़ना है मुझको,
शून्य से शिखर तक जाना है मुझको.

*****

मैं हूं मोबाइल

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं

मैं हूं मोबाइल , मैं हूं मोबाइल,
मैं हूं ज्ञान का भंडार.

मुझे इस्तेमाल कर पढ़ते हैं बच्चे,
मुझसे ही आगे बढ़ते हैं बच्चे.

मैं ही धरती के हर कोने तक बात करता,
मेरे बिना अब इस युग में कोई न
रह पाता.

जो मुझे अच्छे से इस्तेमाल करते,
वह ही आगे बढ़ते.

जो मेरा गलत इस्तेमाल करते,
वह बिगड़ जाते.

*****

मुझे भारत जैसे बनना है

रचनाकार- श्रीमती संगीता निर्मलकर, दुर्ग

मुझे भारत जैसा बनना है.
हिमालय जैसा सीना ताने,
हर तूफानों को सहना है.
दक्षिणी सागर जैसा,
हर लहरों से लड़ना है.
पश्चिम के रेगिस्तानों के जैसे,
रेतों में भी चलना है.
पूरब की हरियाली लिये,
उमंग सभी में भरना है.
पर्वत- घाटी में बहती,
झरनों जैसी,
कल- कल, हर -पल आगे बढ़ना है.
बस मुझे मेरे,
भारत जैसा बनाना है

*****

आवव अंग्रेज़ी पढ़बो

रचनाकार- श्रीमती संगीता निर्मलकर, दुर्ग

तुमन चिन्हे रहु नोनि,
तुमन चिन्हे रहु बाबू.
अंग्रेजी के अक्षर ल पहिचाने रहु,
अंग्रेजी के अक्षर ल पहिचाने रहु.
ददा ल father कहिथे,
दाई ल कहिथे mother,
दा ई ल कहि थे mother.
बहिनी ल sister कहिथे,
भाई ल कहिथे brother,
भाई ल कहिथे brother.
तुमन चिन्हे रहु नोनि,
तुमन चिन्हे रहु बाबू.
अंग्रेजी के अक्षर ल पहिचाने रहु.
राजा किंग ल कहिथे,
रानी ल कहिथे queen,
रानी ल कहिथे queen.
बेटा ल son कहिथे,

बेटी ल कहिथे daughter,
बेटी ल कहिथे daughter.
तुमन चिन्हे रहु नोनि,
तुमन चिन्हे रहु बाबू.
अंग्रेजी के अक्षर ल पहिचाने रहु.
अंग्रेजी के अक्षर ल पहिचाने रहु.

*****

संग्रह करना बुरी बात

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

एक पथिक सरिता से बोला
सरिते! तू छोटी इतनी.
तेरा जल कितना मीठा है
पीकर तृप्ति मिले कितनी!

सागर अति विशाल होता है
लेकिन उसका जल खारा.
इसका क्या रहस्य बतलाओ?
मैं तो सोच - सोच हारा.'

सरिता बोली 'अरे! पथिक जी
मेरा समय न नष्ट करो.
सागर से ही स्वयं पूछ लो
जाने का कुछ कष्ट करो. '

पहुँचा सागर निकट पथिक जब
देखा, वह फैला विस्तृत.
खूब कर रहा गर्जन - तर्जन
दृश्य न पलभर हो विस्मृत.

पथिक ने प्रश्न किया सागर से
वह बोला -' मैं बहुत हूँ व्यस्त.
जाओ थोड़ी दूर झील है
वह ही उत्तर देगी मस्त. '

कहा झील ने,' सुनो पथिक जी!
सरिता दीदी है दानी.
जो कुछ मिले दान कर देती
पास नहीं रखती पानी.

संग्रह करना बुरी बात है
परहित हो जीवन सारा.
सागर नहीं बाँटता निज जल
इसीलिए होता खारा. '

*****

ट्रेक्टर के सवारी

रचनाकार- श्रीमती परवीनबेबी दिवाकर, मुंगेली

करके ट्रेक्टर के सवारी,
मोला मजा आगे भारी.

ट्रेक्टर मम्मी मोर चलावय,
मोला ट्राली म बइठावय.

गाँव /शहर ल घुमावय,
नाना /नानी से मिलावय.

जम्मो मिलके मड़ई -मेला के,
मजा उठावन, बताशा, जलेबी खूब खावन.

करके ट्रेक्टर के सवारी,
मोला मजा आगे भारी.

*****

परीक्षा

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

परीक्षा का देखो मौसम आया,
कई बच्चो का दिमाग चकराया.

जीवन का है यह एक पड़ाव,
परीक्षा से कभी मत घबराव.

परीक्षा को बनाओ अपना मीत,
क्योंकि डर के आगे है जीत.

अपनी मेहनत पर भरोसा रख,
मन में कोई तनाव मत रख.

पढ़ाई मे ध्यान केंद्रित कर,
परीक्षा से कभी मत डर.

नही होगा तेरा कभी अहित,
क्योंकि डर के आगे है जीत.

परीक्षा का भूत भाग जाएगा,
तनाव थोड़ा कम हो जाएगा.

मन और दिमाग को शांत रख,
अपनी तैयारी पूर्ण रख .

विफलता से कभी डर मत,
क्योंकि डर के आगे है जीत.

*****

परीक्षा कक्ष में विद्यार्थी ध्यान रखें

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला ", बालोद

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य उन विद्यार्थियों के लिए और बड़ा मूल्यवान होता है, जिनकी परीक्षाएँ बिल्कुल करीब हों. एक स्वस्थ शरीर में ही उत्तम मानसिकता का संयोग बनता है. समय के प्रति सजग रहने की भी नितांत आवश्यकता होती है. एक विद्यार्थी को सकारात्मक सोच व निर्भीकता के साथ सभी आवश्यक सामग्री- प्रवेश-पत्र, स्वच्छ रुमाल, पेन, कम्पास बाॅक्स लेकर अपने शाला गणवेश में ही परीक्षा कक्ष में प्रवेश करना चाहिए. इनके अतिरिक्त कागज व अन्य कोई सामग्री न हो. फिर कक्ष में उन्हें निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना बहुत जरूरी है.

(1). टेबल पर अंकित अपना अनुक्रमांक देख कर अपने प्रवेश-पत्र के अनुक्रमांक से एक बार अवश्य मिला लें. फिर एक बार अपने जेब को अवश्य टटोल लेवें कि कुछ कागजात अथवा अन्य सामग्रियाँ तो नहीं रह गयीं; सुनिश्चित कर लेवें.

(2). अपनी जगह पर बैठने से पहले आसपास को अवश्य जाँच कर लें कि अनावश्यक कागज व पाॅलीथिन वगैरह तो नहीं हैं.

(3). आप अपने टेबल की सीट या उसके अगल-बगल देख लें कि कुछ लिखा या रंग अथवा स्याही के धब्बे तो नहीं है. इनमें से कुछ हों तो पर्वेक्षक को अवश्य अवगत करा देवें.

(4). जैसे ही आपको पर्वेक्षक के जरिये उत्तर पुस्तिका मिलती है, आप इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि उत्तर पुस्तिका की गुणवत्ता अच्छी हो, यानी उत्तर पुस्तक साफ-सुथरी व कटी-फटी न हो.

(5). अपनी उत्तर पुस्तिका में निर्धारित व आवश्यक कालम (जगह)- अनुक्रमांक, कक्षा, विषय जैसे समस्त जानकारी शांति व धैर्यपूर्वक भर लेवें.

(6). अपनी निर्धारित जगह (टेबल) पर प्रवेश-पत्र, पेन-पेंसिल व स्केल के अतिरिक्त कुछ न रखें.

(7). प्रश्न पेपर मिलने पर उसकी जाँच अवश्य कर लेवें. पृष्ठ व प्रश्न संख्या का मिलान कर लेवें. प्रश्न पेपर के प्रथम पृष्ठ के ऊपरी भाग पर अपना अनुक्रमांक लिख लेवें.

(8). सर्वप्रथम पूरे प्रश्न पेपर का ध्यानपूर्वक अवलोकन कर लेवें. मन में शांति व एकाग्रता बनाए रखें. स्वयं निर्भीक व निश्चिंत रहें.

(9). सभी प्रश्नों को पढ़ने के पश्चात , समय का विशेष ध्यान रखें. समय रहते ही सभी प्रश्न हल हो जाने चाहिए. आप जिस प्रश्न के उत्तर के प्रति पूर्ण रूपेण आश्वस्त हैं यानी आप जिस प्रश्न का उत्तर शत-प्रतिशत जानते हैं, उसे सर्वप्रथम हल करे-लिखें. इसके लिए उत्तर-पुस्तिका के मध्य अथवा हासिये पर संबंधित प्रश्न का क्रमांक बोल्ड लेटर्स या फिर उस क्रमांक के नीचे लाइन खींच देवें. इसके पश्चात डाऊटफुल क्यूश्चन अर्थात संदेहपूर्वक प्रश्न, यानी जिनका उत्तर पूर्ण रूपेण अवगत न हों, उन्हें भी हल करें. अंत में जिन प्रश्नों के उत्तर से अनभिज्ञ हों, उन्हें भी प्रश्न के विषय सम्बंधित कुछ न कुछ अवश्य लिखें. किसी भी स्थिति में कोई भी प्रश्न नहीं छुटना चाहिए.

(10). यदि आप वस्तुनिष्ठ प्रश्न बना रहे हैं तो उत्तर क्रमांक लिखते हुए वैकल्पिक सही उत्तर को भी लिख देवें.

(11). रिक्त स्थान की पूर्ति करें या सही जोड़ी बनाइए, जैसे प्रश्नों का उत्तर लिखने के पश्चात एक लाइन खींच देवें. वह लाइन पूर्ण-उत्तर समाप्ति की घोतक होती है.

(12). प्रत्येक अति लघुत्तरीय, लघुत्तरीय या दीर्घ उत्तरीय प्रश्न के उत्तर पूर्ण होने के बाद एक लाइन खींच देवें.

(13). किसी प्रश्न का उत्तर उसके निर्धारित अंक के आधार पर ही लिखें, अर्थात अंक के अनुसार ही उत्तर लिखने की कोशिश करें.

(14). आवश्यकता पड़ने पर ली गयी अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पर दिये स्तम्भ पूरा कर लेवें. इसे एक धागे से मुख्य उत्तर पुस्तिका से अच्छी तरह बाँध देवें. परीक्षा समय समाप्ति के पाँच-दस मिनट पूर्व अपने लिखे उत्तरों की जाँच एक बार अवश्य कर लेवें.

(15). समय समाप्ति पर पूर्ण रूपेण उत्तर पुस्तिका को पर्वेक्षक को सौंप देवें. कोशिश करें, उन्हें बलात उत्तरपुस्तिका लेने का अवसर न देवें. परीक्षा कक्ष से शांतिपूर्वक व क्रमबद्ध बाहर निकलें.

अंत मैं कहना चाहूँगा कि परीक्षा के दरम्यान आप सकारात्मक विचार रखें, निर्भीक रहें, शांत रहें, खुश रहें. मेरी शुभेच्छाएँ आप सबके साथ हैं.

*****

मेरा बचपन

रचनाकार- अनुष्का शुक्ला, छठवीं, स्वामी आत्मानंदशेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय तारबहार बिलासपुर

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था.

चाहत चांद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था.

थक कर आना स्कूल से,
फिर भी खेलने जाना था.

बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था.

रोने की वजह ना थी,
ना हंसने का बहाना था.

क्यों हो गए हम इतने बड़े,
इससे अच्छा तो बचपन का जमाना था.

*****

होली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

रंगों का त्योहार है होली.
स्नेह, मान, मनुहार है होली.

फाल्गुन पूर्णिमा शुभ दिन को
सबके मन में हर्ष समाता,
मिट्टी - धूल से खेला जाता
तभी 'धुलण्डी पर्व' कहाता,

माटी का वंदन करते हम
समता का व्यवहार है होली.

मिलजुल हँसना और हँसाना
मस्ती लिये नाचना - गाना,
मिलते गले एक - दूजे के
खूब अबीर - गुलाल लगाना,

ढोल, मंजीरे बीच फाग की
बहा रही रसधार है होली.

रंग बनें टेसू - गुलाब से
खेलें और हुड़दंग मचाएँ,
गोबर, कालिख, कीच, रसायन
अति घातक हैं, बचें - बचाएँ,

जीभर खाएँ गुझिया - पापड़
मिलन का शुभ उपहार है होली.

आपस की कटुता सब भूलें
रखें सभी के प्रति मृदु प्रेम,
दें मंगलकामना - बधाई
चाहें सबकी सकुशल - क्षेम,

करती दूर निराशा, चिंता
खुशियों की बौछार है होली.
रंगों का त्योहार है होली.

*****

कर्म करो तो फल मिलता है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

कर्म करो तो फल मिलता है,
आज नहीं तो,कल मिलता है.

पत्थर को भी,खोद के देखा,
उसके अंदर,जल मिलता है,
आज नहीं तो,कल मिलता है.

दुख से टूट न जाना,दिल से,
बाद में सुख का,पल मिलता है.
आज नहीं तो,कल मिलता है.

मधुर वचन ही,बोल सभी से,
तब हिरदे का,तल मिलता है.
आज नहीं तो,कल मिलता है.

पार तू कर जा,दुर्गम पथ को,
राह फिर,सरल मिलता है.
आज नहीं तो,कल मिलता है.

धार को चीर दे,भुजा से अपनी,
आगे बढ़कर,थल मिलता है.
आज नहीं तो,कल मिलता है.
कर्म करो तो,फल मिलता है.

*****

गोल - गोल है पृथ्वी

रचनाकार- काव्या दिवाकर, चौथी, मुंगेली

गोल - गोल है पृथ्वी.
पानी - पानी है पृथ्वी.

रहते हम है यहाँ.
हमारा घर है पृथ्वी.

पृथ्वी मैं है जीवकई
लगे मुझे सब नई - नई.

मैं देखू उनके सब खेल.
देखू मैं उड़ती बादल मैं तितली.

*****

सोन मछली

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

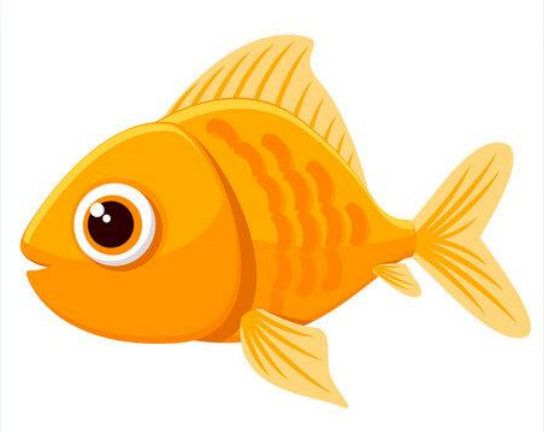

एक जंगल में एक बहुत बड़ा तालाब था. जिसमें बहुत सारे मछलियाँ रहती थी. उसी तालाब के किनारे बरगद का पेड़ था जिसमें एक वृद्ध बगुला रहता था.

वृद्ध बगुला तालाब से मछलियां पकड़ने की बहुत कोशिश करता पर एक भी मछलियाँ नहीं पकड़ पाता था.

एक दिन उसने देखा की एक सुनहरे रंग की मछली,'सोन मछली' तालाब से बाहर जमीन पर उछल कूद कर रही थी. वृद्ध बगुला बिना देर किए अपना पंख फड़फड़ाया और उस सोन मछली को अपने चोंच में पकड़ लिया.

सोन मछली कहने लगी मुझे छोड़ दो मैं मछलियों की रानी हु. वृद्ध बगुला कहने लगा आप मछलियों की रानी हो इस बात पर मैं कैसे विश्वास कर लू?

सोन मछली बोली मेरा रंग रूप देखो मैं दिखने में सोने की जैसी दिखती हू, रानी मछलियाँ सोन मछली होते है.

वृद्ध बगुला मछली की बात सुनकर थोड़ा सोंचने लगा! और कहा चलो मान लेते है आप मछलियों की रानी सोन मछली हो.

पर मैं आपको नहीं छोड़ सकता .क्योंकि यदि मैं आपको छोड़ दू तो मैं भूखा मर जाऊंगा ?

तब सोन मछली बोली अच्छा ठीक है आप मुझे खा लीजिए .पर आप मुझको खाओगे तो सिर्फ एक दिन का भूख मिटेगा. उसके बाद फिर आपको भोजन की तालाश करना पड़ेगा?

किन्तु आप मुझको छोड़ दोगे तो मैं आपके लिए सालो साल तक भोजन क इंतजाम कर सकती हू!

वृद्ध बगुला आश्चर्य से बोला वो कैसे?

सोन मछली बोली मैं मछलियों की रानी हु. मेरे आदेश का पालन सब मछलियां करते है. मैं आपके लिए रोज सुबह दो मछलियों का इंतजाम कर दूंगा .

आप रोज सुबह तालाब के पास आना और उन दो मछलियों को खा कर अपना भूख शांत कर लेना.

वृद्ध बगुला को सोन मछली की बातों पर पुरा पुरा विश्वास हो गया. अब वृद्ध बगुला सोन मछली को अपने चोंच से अलग कर देता है.

जैसे हीं वृद्ध बगुला उस सोन मछली को छोड़ता है सोन मछली स्वीम करते हुए तालाब में चली जाती है.

उधर वृद्ध बगुला दो मछलियों का इंतजार करते-करते सुबह से शाम हो जाता है पर मछलियाँ नहीं आई.

सिख: कठिन समय में हमें सूझ बुझ से काम लेना चाहिए.

*****

सीखो

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू, दुर्ग

खुद की लड़ाई खुद लड़ना सीखो
खा कर ठोकर सम्हलना सीखो.
खुशी और गम आएंगे जिंदगी मे
स्वीकार दोनों को करना सीखो.

नदियों सा हर दम बहना सीखो
सूरज की तरह निकलना सीखो.
थककर ना बैठ मंजिल के मुसाफिर
मंजिल की राह पर चलना सीखो.

मुश्किलों से डटकर लड़ना सीखो
पाने के लिए कुछ करना सीखो.
बिन मेहनत के नहीं मिलता कुछ
मेहनत पर भरोसा करना सीखो.

*****

छत्तीसगढ़ मा राम

रचनाकार- राजकुमार निषाद 'राज', दुर्ग

भारत के भुइँया मा बसे हे,
हरियर लुगरा सुग्घर भावय.
कौशिल्या माता के मइके,
छत्तीसगढ़ महतारी हावय.

भागमानी हम छत्तीसगढ़िया,
चरण छू के माथ नवाँये.
अइसन हमर पावन भुइँया,
राम ह इहाँ भाँचा कहाये.

राम ल जब वनवास होइस,
संग म लछमन सीता आये.
कुटि बनाये ये भुइँया मा,
छत्तीसगढ़ के भाग जगाये.

राक्षस अउ दानव ला मारे,
रिसि मुनि के प्राण बचाये.
छत्तीसगढ़ के ये महिमा ला,
ज्ञानी अउ विद्वान ह गाये.

जशपुर मल्हार सिरपुर राजिम,
आरंग मा प्रभु राम ह आये.
शिवरीनारायण के पावन भुइँया,
शबरी के जूठा बोइर खाये.

तुरतुरिया वाल्मीकि के आश्रम,
माता सीता जिनगी बिताये.
लव कुश ल इहाँ जनम देके,
छत्तीसगढ़ के मान बढ़ाये.

*****

वरदानी विज्ञान

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'

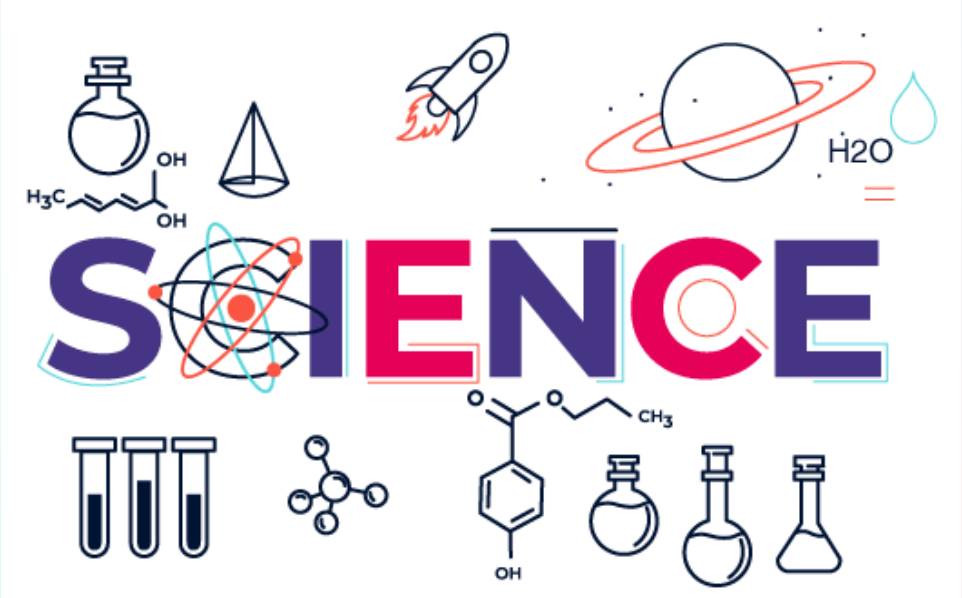

जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.
जाँच परखकर, बात बताता, वरदानी विज्ञान.

आदिम युग से वर्तमान तक, देखें तनिक इतिहास,
वैज्ञानिकता ने ही इसको, आज बनाया खास,
सुखद बयारें सतत बहाता, वरदानी विज्ञान.
जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.

पहले तो दुष्कर होते थे, छोटे-मोटे काज,
काम चुटकियों में बनते हैं, घर बैठे अब आज,
सात समुंदर पार कराता, वरदानी विज्ञान.
जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.

नित आविष्कारों ने लाया, जीवन में बदलाव.
धन्य हुई भारत की धरती, बिखरा रमन प्रभाव,
आज दिवस यह याद दिलाता, वरदानी विज्ञान.
जीवन को आसान बनाता, वरदानी विज्ञान.

*****

चमत्कारी विज्ञान

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित'

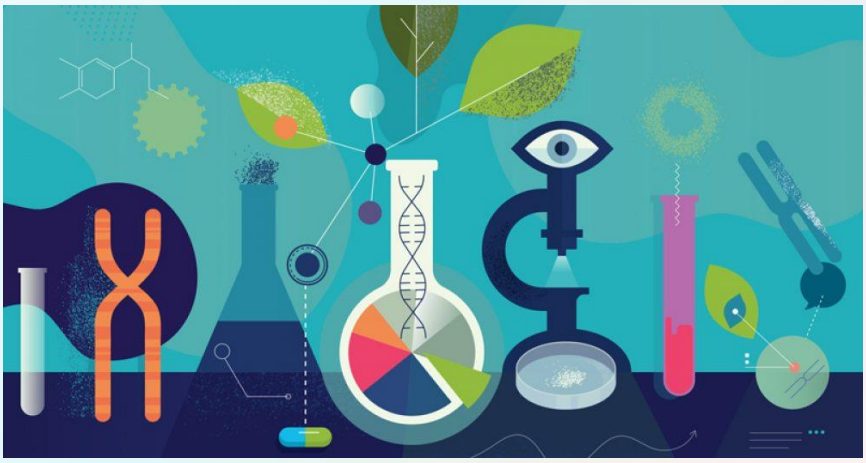

पहले चिठ्ठी भेजी जाती,
अब तो मोबाइल ही भाती.

गाँव- शहर तब पैदल जाते,
आज हवा में हम उड़ पाते.

कार्य अधिक हो, हम झट थकते,
लेकिन रोबोट आज रखते.

किडनी, लीवर, हार्ट बदलते,
रिक्त गोदियाँ, आज मचलते.

अंध भक्ति से हमें बचाये,
विज्ञान सत्य राह दिखाये.

रात अँधेरी, दिन सा रोशन,
आज ग्रहों का देखें 'मोशन'.

बंजर में भी फूल खिलाता,
उम्मीदों से आगे जाता.

है विज्ञान आज अधिनायक,
जीवन का यह बना सहायक.

*****

ख़ुशी मनाओ

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

झूठ कहो मत ,
झूठ सहो मत.

हर झगड़े से,
दूर रहो मत.

ख़ुशी नदी में,
खूब बहो मत.

यदि कड़ुआ हो,
सत्य कहो मत.

दुख निवास में,
कभी रहो मत.

फूल बनो पर ,
शूल बनो मत.

सरल रहो तुम,
तेज बनो मत.

आलस जी के
पास रहो मत.

ख़ुशी मनाओ,
कष्ट सहो मत.

*****

ख़ुशी चिरैया

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

करो पढ़ाई ताबड़तोड़,
दुनिया को फिर पीछे छोड़.

करेगी ये दुनिया जगमग,
पहले खुद को सबसे जोड़.

जिन राहों पे मिले न ख़ुशी,
उन राहों को जल्दी छोड़.

जिस शाख पे हो फल कच्चे,
वैसे फल तू कभी न तोड़.

ख़ुशी चिरैया गर मिल जाय,
कर लेना उससे गठजोड़.

*****

खुल्लम खुल्ला

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

सोनू खाता रस का भल्ला ,
मोनू को भाता रसगुल्ला.

बिल्ली जब पा जाती चूहा,
करे ख़ुशी से हल्ला गुल्ला.

मिले जलेबी जब अलबेली ,
मन में बजता है रमतुल्ला.

हाथी खाय रबड़ी मलाई ,
पर पहले करता है कुल्ला.

बन्दर मामा खाते केला ,
वो भी भैया खुल्लमखुल्ला.

*****

होली का उत्सव

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

फूल हँसे कलियाँ मुस्काई,
होली आई हवा हवाई.

पिचकारी की बौछारों से,
रंग सुहाने होली लाई.

अब गुलाल खामोश नहीं है,
उसने खुशियां खूब लुटाई.

हुरियारों का जोश देख के,
ढोल बजे मस्ती इठलाई.

ये जीवन होली का उत्सव
इससे दुख की करो बिदाई.

*****

प्रीत गुलाल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

हरे गुलाबी नीले लाल,
खुशियां बांटें प्रीत गुलाल.

होली के रंग से मिल के,
सबको करते लालमलाल.

खुशबू वाले हरे गुलाल,
करते सबको खूब निहाल.

नाच रहे सब होली वीर,
ढोल बजाए कालू लाल.

रंग बिखेरें खुशियों वाले,
जीवन में हर साल गुलाल.

*****

बसंत ऋतु का आगमन

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

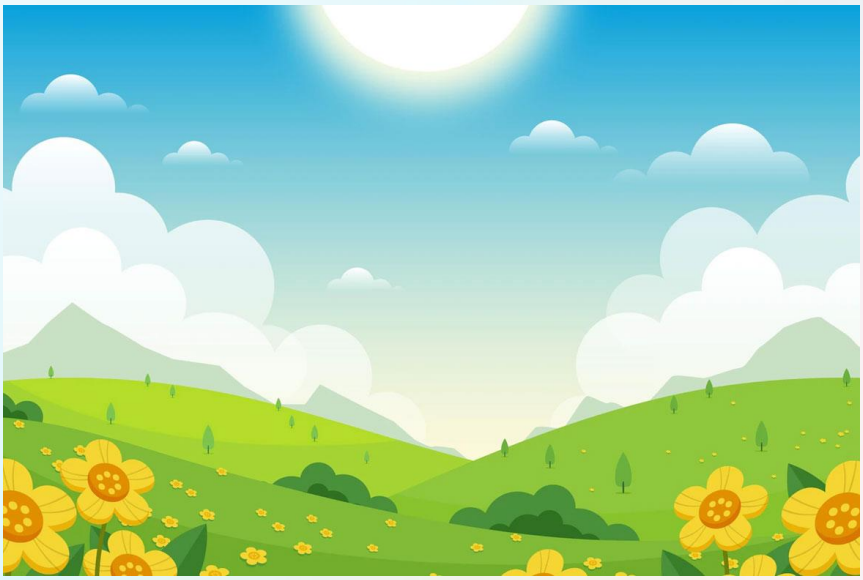

ऋतुओं का राजा बसंत है आया,
चहुं ओर सुन्दर हरियाली छाया.

सबके मन को खूब है भाया,
बसंत ऋतु का मौसम आया.

नई चेतना और उमंग छा गया,
देखो देखो बसंत ऋतु आ गया.

मां सरस्वती का हम करे वंदन,
बसंत ऋतु का करे अभिनंदन.

चि चि चिड़िया चहकने लगते,
भर भर भंवरे भंवराने लगते .

कू कू बोल कोयल गीत सुनाए ,
भंवरे की गुंजन मन को भाए.

प्रकृति का कण कण खिल उठा,
पशु पक्षी भी उल्लास से भर उठा.

सरसों का फूल सोने जैसे चमकने लगा,
जौ और गेहूं की बालियां खिलने लगा.

आम के पेड़ो पर सुन्दर बौर आने लगा,
फूलों में रंग बिरंगी तितलियां मंडराने लगा.

*****

करम ला कर ले

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

करम ला कर ले फल तै पाबे.
आज नहीं त कल तै पाबे.
डांवाडोल झन हो सवाल ले,
आगू बड़ के फल तै पाबे.
करम ला कर....
पथरा ला घलो खोदके देखले,
ओखर भीतरी जल तै पाबे.
करम ला कर.....
दुख मा झन टोर तै दिल ला,
थोड़के मा सुख के पल तै पाबे.
करम ला कर.....
कड़वा भाखा ला छोड़ दे संगी,
तभे हिरदे के तल तै पाबे.
करम ला कर....

*****

होली

रचनाकार- नमिता वैश्य

होली आई, होली आई
रंग- बिरंगी होली आई.

धूम मचाती होली आई
प्रेम बढ़ाती होली आई.

रंग-अबीर, गुलाल लगाएं
डटकर गुझिया, पापड़ खाएं.

पास सभी के है पिचकारी
लगती कितनी सुन्दर प्यारी.

मिल-जुलकर त्योहार मनाएं
खुशियां बांटें, नाचें, गाएं.

सबको हंसकर गले लगाएं
भेदभाव को दूर भगाएं.

पाकर शुभकामना, बधाई
बच्चों की टोली हर्षाई .

*****

पानी

रचनाकार- नमिता वैश्य

सबका जीवनदाता पानी
सबकी प्यास बुझाता पानी.

पानी से ही हरियाली है
पानी से हैं वन-उपवन.
पानी से ही वसुधा फलती
पानी ही है उत्तम धन.

पानी बिना नहीं है जीवन
पानी से फसलें उगती.
ताल-तलैया, झीलें, झरने
पानी से नदियां बहतीं.

पानी है अनमोल धरा पर
पानी ही जीवन आधार.

पानी से हम सीखें सेवा
याद रखें अनुपम उपकार.

आओ बचत करें पानी की
पानी को न व्यर्थ बहायें.
बूंद-बूंद से सागर बनता
सब को यही बात समझायें.

*****

गर्मी आई

रचनाकार- नमिता वैश्य

गर्मी आई, गर्मी आई
हमको खूब सताती भाई.

स्वेटर, कंबल दुबक गये सब
पंखे, कूलर ही भाये अब .

धूप दिखाती अपने तेवर
बाहर जाने में लगता डर.

तपता सूरज, लू है चलती
आसमान से आग बरसती.

आमपना, शरबत, ठण्डाई
लस्सी, आइसक्रीम मन भायी.

बड़े-बडे दिन, छोटी रातें
सब करते छुट्टी की बातें.

खेल और मस्ती संग लाई
घर में ही अब करो पढ़ाई.

*****

साफ-सफाई

रचनाकार- नमिता वैश्य

मम्मी ने यह बात बताई
आसपास तुम रखो सफाई.

यहां-वहां मत फेंको कचरा
घर को रखो साफ-सुथरा.

जहां न होती साफ-सफाई
समझो सौ बीमारी आई.

गंदगी को दूर भगाओ
सब रोगों से मुक्ति पाओ.

स्वच्छता की आदत अपना लो
कूड़ा कूड़ेदान में डालो.

स्वच्छ रहेगा जब परिवेश
सुंदर होगा अपना देश.

*****

कहर-महर आमा मउरे

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

मउहारी जाड़ा आगे, मउहा हर कुचियागे
गर्रा धुंका-बड़ोरा आगे, रूखुवा झुमे नाचे
साजा-सराई ह, हरियागे, तेंदु-चार लदागे
डुमर हे टुक लाली अउ गस्ती ह करियागे.

बर-पीपर पीकरी ह अउ बोईर ह गदरागे
कहर-महर आमा मउरे अमली लटलटागे
पड़की-परेवना, मैना मया म चहक जाथे
रूखराई के डारी-डारी गुरतुर तान सुनाथे.

पिंवरी-पिंवर सरसों फुलगे हरदी ह रंगागे
बिहा-पाठौनी के जईसे मड़वा हर छवागे

लाली रंग परसा फुले,सोला सिंगारी लागे
नवा नवरिया बहुरिया जईसे अंगना आगे.

गमकत हे अमराई,तन मन म निसा छागे
कोयली के कुहकी गोरी कस बोली लागे
रही-रही के सुरता म हांसी-रोवासी आथे
ए बसंत फेर बेरंग होगे अईसे हिया लागे.

संगी-साथी झूमत हे मन महुआ म मतागे
झांज मंजीरा मांदर नगाड़ा जमके घुड़के
लाली गुलाली रंग उड़ाए फगुआ म रंगागे
मया-प्रीत के ए बेरा बसंत होरी अब आगे

*****

आशाएँ

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला बिलासपुर

आशाएं कभी न छोड़ना,
अपना मन कभी न तोड़ना.
मुसीबतें चाहे कितनी आए,
उम्मीदों से मुँह न मोड़ना.

भले ही असफलता हाथ लगे,
आशाओं की राह चुनना.
इस बार पूरी रणनीति से,
युद्ध में खरे उतरना.

तुम्हारे साथ भले कोई न रहे,
तुम उम्मीदों के साथ रहना.

नकारात्मकता को दूर भगाकर,
मानना अपने दिल का कहना.

आनंद लेते हुए मेहनत करना,
नाकामी भी घुटने टेकेगी.
बस तुम निराश न होना,
जीत तुम्हें ही मिलेगी.

छोटी छोटी असफलता तो आती रहती है,
इनसे कभी न घबराना.
जिंदगी खुलके जीना,
हँसना और हँसाना.

*****

मन की शक्ति

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

प्रिय बच्चों !मन की शक्ति अपार होती है. इसमें कोई शंका की बात नहीं है. एक मन ही है जो सृष्टि की अनंत सीमा को लाँघने की क्षमता रखता है. किन्तु ध्यान रहे, यह मन हमारा एक अच्छा मित्र भी हो सकता है और हमारा सबसे बड़ा दुश्मन भी हो सकता है. इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता. क्योंकि मन की गति हवा से भी तेज होती है. कब किस रूप में हावी हो जाय और बर्बाद या आबाद का कारक बन जाय. मन को नियंत्रित करके नहीं रखा गया तो यह विनाश का वह रूप दिखा देता है. जिसके बारे में आपने कभी सोचा भी नहीं होगा. वो सब कुछ मन के उस भाव पर निर्भर करता है कि वो किस चीज को आपके मन के भीतर महत्व देता है. यह मन हमें अपना गुलाम बना लेता है जब हम इसके सारे क्रियाकलाप पर आँख में पट्टी बांधकर भरोसा कर लेते हैं. तो हमें अपने मन को इतना सशक्त बनाना होगा कि आसानी से कोई भी अनर्गल विचार हमें स्पर्श न कर पाय.इसलिए मैं स्पष्ट कर देना चाहती हूँ ताकि मन के बारे में आपके हृदय में गलत धारणा स्थापित न हो. मन को एकाग्रता की शक्ति से सिंचित करके निश्चित रूप से हम मन के भीतर असीम शक्ति को सृजित कर सकते हैं. इसके लिए आपको अपनी दैनिक चर्या पर ईमानदारी और निष्ठा से ध्यान केंद्रित करने होंगे. तभी हम मन की शक्ति पर अपार रूप से कार्य सिद्ध करके अपने जीवनोद्देश्य को प्राप्त कर सकेंगे. यही शाश्वत सत्य है. ऐसा वेद पुराणों में अंकित है.

*****

वसन्त जब आये

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू", दुर्ग

आम्र वृक्ष पर बौर आए,
पलास खिलकर मुस्कुराए,
कोयल मीठे तराने गाये,
वसन्त आये, वसन्त आये.

अमलताश मन को है भाये,
पतझड़ से क्यों घबराए,
परिवर्तन का उत्सव मनाये,
वसन्त आये, वसन्त आये.

शीत ऋतु लौट के जाये,
खुशनुमा मौसम हो जाये,
झरबेरी के बेर ललचाये,
वसन्त आये, वसन्त आये.

विविधरंगी पुष्प खिले,
पीतवर्णी सरसों फूले,
सुरभित सी पवन बहे,
वसन्त आये ये कहे .

वसन्त ऋतुराज कहाये,
शोभा इसकी बरनी न जाये,
उर में है आनंद समाये,
वसन्त आये, वसन्त आये.

*****

जंगल में होली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

एकबार जंगल के अंदर
जानवरों से बोला बंदर

आया होली का त्योहार
मिलजुल चलो, मनाएँ यार

सभी रहेंगे नशे से दूर
बस हुड़दंग मचे भरपूर

सबको लगी योजना प्यारी
दौड़ - दौड़ कर ली तैयारी

जेब्रा ले आया पिचकारी
रंग भरी चीते को मारी

भालू नाचे, करे धमाल
दादा शेर के मला गुलाल

सूंड़ में पानी लाया हाथी
बौछारों से भीगे साथी

गीदड़ पानी से घबराया
पकड़ गधे ने उसे घुमाया

हिरण वहाँ से लगा सटकने
बंदर मामा लगे डपटने

झाड़ी में दुबका खरगोश
चढ़ा लोमड़ी को था जोश

बाहर आओ मेरे लाल
रंग से भिगो दिया तत्काल

सभी को आया अति आनंद
प्रेम से रहना है स्वच्छंद

बोल रहे सब अपनी बोली
यादगार बन गई है होली

*****

इन सपनों को,पाने भागो

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

निद्रा तोड़ो जल्दी जागो.
और सपनों को पाने भागो.
सूरज को है, शीघ्र उठाना,
पूरब में लाली बगराना.
फूलों को मुस्कान है देना,
पुरवाही में महक मिलाना.
चिड़ियों को गीत सिखाकर,
उनको है उड़ान सिखाना.
लहरों को भी जोश है देना,
और जुबान को रस से पागो.
इन सपनों को पाने भागो.

*****

अब तो मन को पढ़ाई में लगा

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

बहुत हो गया घूमना फिरना,
दोस्तों के साथ गप्पे मारना.

समय को यूं बर्बाद मत कर ,
चल परीक्षा की तैयारी कर.

पढ़ाई के प्रति रुचि तो जगा,
अब तो मन को पढ़ाई में लगा.

सपना तेरा जरूर सच होगा ,
जग मे तेरा बड़ा नाम होगा.

अपने सीने मे हौसला तो जगा,
अब तो मन को पढ़ाई में लगा.

लक्ष्य लेकर निरंतर बढ़ता चल ,
हर समस्या का निकलेगा हल.

अपने सीने मे जुनून तो जगा ,
अब तो मन को पढ़ाई में लगा.

सुबह चार बजे उठ पढ़ाई कर,
अपने सपने को जरा याद कर.

अपने सीने मे जज्बा तो जगा,
अब तो मन को पढ़ाई में लगा.

*****

बसंत पंचमी

रचनाकार- राजकुमार निषाद "राज", दुर्ग

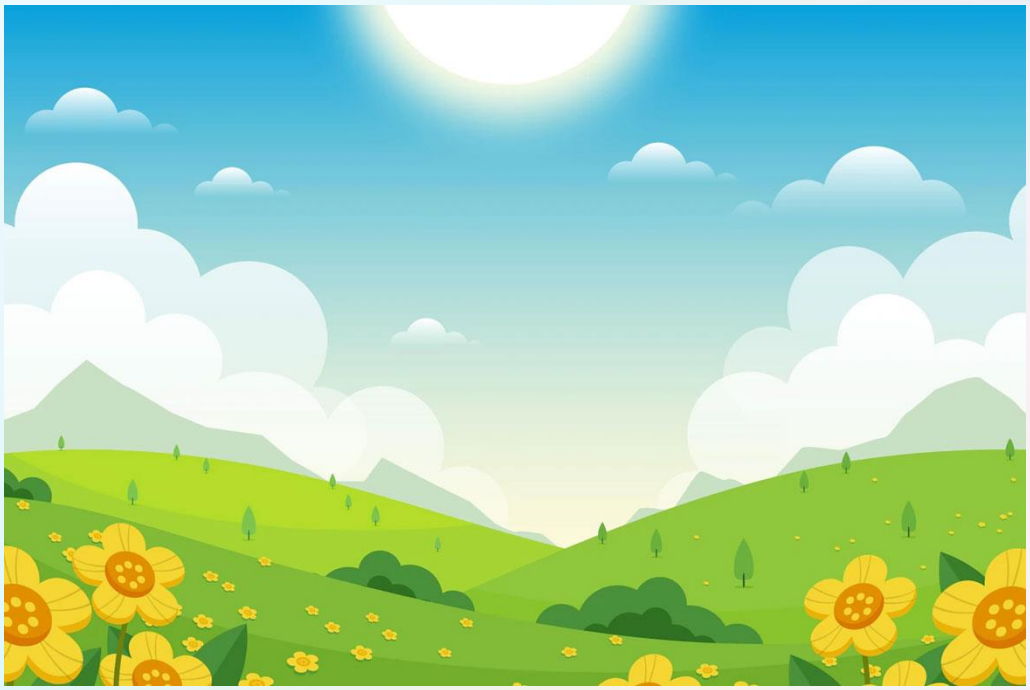

कोहली कुहकै मारे तान, बइठे हावै आमा डार.
मन मोर झूमय नाचय संगी, आगे बसंत बहार.

पिंयर-पिंयर सरसो फूलय, चना गहूं लहरावत हे.
चिंव-चिंव चहकत चिरई, सबके मन ल भावत हे.
हरियर-हरियर दिखत हावय, सुग्घर खेती-खार.
मन मोर झूमय नाचय संगी, आगे बसंत बहार.

आनी-बानी के फूल फूले, भँवरा मन मंडरावत हे.
चंपा-चमेली गुलाब-गोंदा, अब्बड़ के ममहावत हे.
लाली-लाली परसा दिखय, फूले हावय हजार.
मन मोर झूमय नाचय संगी, आगे बसंत बहार.

घन अमरइया आमा मउरे, तन मन ला हरसावत हे.
सरसर-सरसर चले पुरवाई, मया के गीत सुनावत हे.
तरिया-नदिया जंगल-झाड़ी, मगन डोंगरी पहाड़.
मन मोर झूमय नाचय संगी, आगे बसंत बहार.

*****

परीक्षा के डर

रचनाकार- विधि शर्मा, बेमेतरा

अब परीक्षा आवत हे, जाड़ हा जवात हे.
हमला काबर डरना हे, परीक्षा अब आवत हे.

मिलजुल के पढ़ना हे, सुग्घर तैयारी करना हे.
अब नवा छत्तीसगढ़ गढ़ना हे.

नवा रंग भरना हे मे सपना के दाई ददा में.
अब नवा छत्तीसगढ़ गढ़ना हे.

नवाचारी मैडम तैनात हे संग में शासन के साथ.
हम सुन डरे हन परीक्षा पे चर्चा ला.

डरना हे नहीं हमला, अब हमला नहीं डरना हे.
गढ़ना हे छत्तीसगढ़ नवा, तैयारी करना हे सुग्घर..

*****

दादा मेरी बात मानो

रचनाकार- संजय जांगिड 'भिरानी', राजस्थान

दादा जी मेरे दादा जी,
मेरी एक बात सुनो जी,
कैसा होता ये स्कूल जी,
क्यों जाते हम रोज जी,

भविष्य मेरी सुनो तुम बात,
नही भाता स्कूल का साथ,
क्यो करते हो ऐसी तुम बात,
पढाई देती हर काम मे साथ .

स्कूल होता सपनो का घर,
लगाता हमारे परी जैसे पर,
निकालता हमारे मन से डर,
ज्ञान से देता हमे पूरा भर .

*****

गाँव गली महकने लगा अमराई के बौरों से

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

गाँव गली महकने लगा है,अमराई के बौरों से
जंगल-पहाड़ दहकने लगा है पलास फूलों से
वासंती बयार बहने लगी वन-उपवन बागों से
झूम रहे हैं तरुवर भी मस्त पवन के झोंकों से

आम्र तारू लद गए स्वर्ण मंजरियों के बौरों से
अमराई भी गुंजने लगी कोकिल के कूकों से
वसुंधरा अब सजने लगी कोयल के संदेशों से
सतरंगी आभा बिखरने लगी वसुंधरा फूलों से

मद मस्त महुआ मदहोश करने लगा डालों से
तरुवर भी सवंरने लगे पंछी और कोकिलों से
जंगल पहाड़ गुंजने लगे झरनों और पठारों से
सुर सरिता बहने लगी है,अपने पावन धारों से

वसुंधरा भी संवरने लगी फुल केशर सरसों से
नव यौवना दुल्हन सी लगने लगी है श्रृंगारों से
मंगल परिणय होगा,ऋतु राज वसंत बहारों से
अभिनंदन होगा कोकिल भ्रमरों की गुंजारों से

शहनाइयां बजेगी, सुमंगल, सुमधुर बयारों से
दशों दिसाएं, झंकृत होंगी,इस पावन रस्मों से
कण-कण ये आनंदित होगा, सुरमई तालों से
मधुर मिलन होगा फुल चमन के गलियारों से

*****

बाबा जी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

गाँव में लगते सबसे न्यारे, बाबा जी .
हम सबको हैं बहुत ही प्यारे, बाबा जी.

खुलकर हँसते और हँसाते
अच्छी सीख सदैव बताते

अस्सी वर्ष है आयु, किंतु कमजोर नहीं
चलते अब भी बिना सहारे, बाबा जी.

बाग और खेतों में जाते
ताजे फल, गन्ने हैं लाते

पौधों को सींचते, गाय को चारा दें
उठ जाते प्रतिदिन भिनसारे, बाबा जी .

माने हुए वे कृषि विज्ञानी
नित्य सुनाते नई कहानी

बच्चे उनके परम मित्र, सँग - सँग खेलें
कहते हैं बनना ध्रुवतारे, बाबा जी .

नहीं किसी पर गुस्सा करते
सच कहने से कभी न डरते

चाय न छूते, एक गिलास दूध पीते
मजे से खाते शक्करपारे, बाबा जी .
हम सबको हैं बहुत ही प्यारे, बाबा जी.

*****

अ से अ: की सीख

रचनाकार- सुंदर लाल डडसेना "मधुर"

अ से अनार, आ से आम.
पढ़ाई करो, सुबह -शाम.
इ से इमली, ई से ईख.
लो बड़ों से भी सीख.
उ से उल्लू, ऊ से ऊन.
अपने बड़ों की बातें सुन.
ऋ से ऋषि है बनता.
सबको ज्ञान जो देता.
ए से एड़ी ,ऐ से ऐनक.
पढ़ के नाम, करो रौनक.
ओ से ओखली, औ से औरत.
पढ लिखकर बनोगे महारत.
अं से अंगूर, अ: है खाली.
खत्म कहानी, बजाओ ताली.

*****

प्रिया की नई सहेलियाँ

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

गर्मी का मौसम था. स्कूलों की छुट्टियाँ हो चुकी थी. प्रिया का भी स्कूल जाना बंद हो गया था. कक्षा तीसरी की प्रिया बहुत सुंदर थी. गोरा रंग. गोल-मटोल चेहरा. फुंडा-फुंडा गाल. सुंदर नुकीली सुआनाक. लम्बे-घने बाल. यानी दिखने में खूबसूरत तो थी ही; पढ़ाई-लिखाई में भी नंबर वन. पर अपने मम्मी-पापा की अकेली संतान होने के कारण थोड़ी जिद्दी हो गयी थी. मन करते तक घर में अकेली खेलती थी; आखिर कब तक खेलती ? बोर हो जाती थी बेचारी. आसपास उसकी उम्र की एक भी बच्ची नहीं थी. इस मुहल्ले में पंद्रह दिन हुए थे उन्हें शिफ्ट हुए. मम्मी घर पर रहती थी. पापा काम पर चले जाते थे. जहाँ वे लोग पहले रहते थे, उस काॅलोनी की प्रिया को बहुत याद आती थी.

एक दिन प्रिया टीवी देख रही थी. काॅर्टून खत्म होते ही वह कुछ बोलती, इससे पहले मम्मी बोली- तुम एक काम करो प्रियू. एक छोटी सी कटोरी में पानी रखकर तुलसी चौरा के पास रख दो.

' क्यों मम्मी ? ' प्रिया सोफे से उठते हुए बोली.

' तुम रखो तो पहले. मैं तुम्हारे लिए बढ़िया नाश्ता बना रही हूँ. गुलगुल भजिया बना रही हूँ. सौंफ डाल दूँगी; और इलाइची भी. फिर मस्त बढ़िया गुबुल-गुबुल खाना. ' किचन से मम्मी बोली.

' अरे वाह ! तब तो मजा आएगा मम्मी. हाँ... मम्मी ठीक है. ' कहते हुए प्रिया ने कटोरी भर पानी तुलसी चौरा के पास रखा. थोड़ी देर बाद देखती है कि कहीं से एक गौरैया आयी; और कटोरी के पास आकर बैठी. पहले वह इधर-उधर देखी. फिर कटोरी का पानी को पीने लगी. प्रिया को बहुत अच्छा लगा गौरैये को पानी पीते देख. उसने तुरंत अपनी मम्मी को आवाज लगायी; और दिखाया. दोनों बहुत खुश हुए. पानी पीने के बाद गौरैया फुर्र से उड़ गयी. मम्मी बोली- ' रोज ऐसे ही रखना प्रियू बिटिया. ' पशु-पक्षियों के लिए इस तरह भोजन-पानी की व्यवस्था करना बहुत जरूरी है. ऐसी भीषण गर्मी में पशु-पक्षी थर्रा जाते हैं. कभी-कभी भूख-प्यास के मारे उनकी जान चली जाती है. ' प्रिया मम्मी की बातें बड़े ध्यान से सुन रही थी.

दूसरे दिन प्रिया ने एक बड़ी कटोरी में पानी रखा. पंद्रह-बीस मिनट बाद चार-पाँच गौरैया आयीं. वे पानी पीने लगीं. प्रिया अपने कमरे की खिड़की से देख रही थी. तभी दो गौरैया खिड़की के छज्जे पर आकर बैठ गयी. प्रिया को झाँक-झाँक कर देखने लगी. प्रिया खुशी से चहक उठी. मम्मी को बताने चली गयी. आकर दोनों ने देखा; फिर दोनों चिड़िया उड़ गयी. मम्मी बोली- ' निराश नहीं होना मेरी रानी बिटिया. देखना वे कल फिर आएँगीं. ' फिर प्रिया नहाने बाथरूम चली गयी.

अब तो रोज तीन-चार नहीं; दर्जन भर गौरैया आने लगी थीं. प्रिया उनके आने से पहले ही कनकी, चने के छिलके या रोटी के टुकड़े कटोरी के पास रख देती थी ;और पहले से ज्यादा मात्रा में डाल दिया करती थी. गौरैयों को भी रोज-रोज प्रिया के घर आना अच्छा लगता था. उनकी संख्या दिन-ब -दिन बढ़ती जा रही थी. जैसे ही गौरैया आतीं ,प्रिया उनके खाने के लिए कुछ न कुछ कटोरी के पास रख देती थी. पानी भी रख देती थी. सब के सब दाना चुगती; पानी पीती, और फुर्र हो जातीं. प्रिया आँगन में चार-पाँच जगहों पर अब मिट्टी के सकोरे में पानी रखती थी. अब तो गौरैये व प्रिया के बीच नजदीकी बढ़ने लगी थी. एकाध तो बिल्कुल पास ही आ जाती थी. कभी-कभी तो प्रिया के कंधे पर आकर बैठ जाती. गौरैये प्रिया की आवाज परखने लगी थी. तभी तो उसकी आवाज सुनकर कहीं पर भी रहती, आँगन पर आ जाती; और चींचीं-चींचीं करना शुरू कर देतीं. प्रिया भी उनकी आवाज सुनकर बाहर निकल आती. उन्हें छू-छू कर देखती ; और खुश होती.

दो-तीन महीने बीत गये. अब रोज सुबह प्रिया को उठाना गौरैयों का काम हो गया. सुबह प्रिया भी उन्हीं की आवाज से उठती थी. वे झुँड के झुँड प्रिया के कमरे में आती थीं ; और उसके बेड के पास खिड़की के ऊपर बैठ जातीं. घर भर वे प्रिया के पीछे-पीछे चलती थी. उन्हें किसी से कोई भय नहीं था. यह सब देख प्रिया के मम्मी-पापा कहते थे कि पशु-पक्षी भी प्रेम व आत्मीयता की भाषा अच्छी तरह समझते हैं, इसलिए कभी उन्हें भगाना या मारना नहीं चाहिए. जैसे ही प्रिया खिलौने लेकर बैठती, गौरैये भी उसके समीप आकर बैठ जातीं. कभी उसके कंधे पर,तो कभी पैर पर तो, कभी उसके खिलौनों के ऊपर. प्रिया के खेलते तक गौरैया चीचीं-चीचीं करते हुए इधर-उधर फुदकती रहतीं. अब तो प्रिया अपनी इन नई सहेलियों के साथ बहुत खुश थी.

*****

वो है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

अयोध्या के पावन धरा पर जो जन्मे,
त्रेता,सतयुग किसी भी युग में न हारे.

भक्तों के हृदय में जो सदा रहते,
जिनके गुणगान हर कोई करते.

संसार में सुंदर है जिनके नाम ,
वो है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम,

माता कौशल्या के आंखों के तारे,
राजा दशरथ के प्राणो से प्यारे.

वन वन भटके हर कष्ट सहे ,
कर्तव्य पथ पर सदा डटे रहे.

नाम लेने से बन जाए बिगड़े काम,
वो है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम.

शबरी के झूठे बेर जो खाए,
मूरत सबके मन को भाए.

पत्थर बने अहिल्या को तारे,
केंवट जिनके चरण पखारे.

भक्त के कंठ से निकले जो नाम,
वो है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम.

वचनों को निभाने महल त्याग दिए,
श्रेष्ठ कर्म कर आदर्श प्रस्तुत किए.

भक्तों के हृदय के रोम-रोम है राम,
वो है मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम.

*****

बसंत ऋतु का आगमन

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

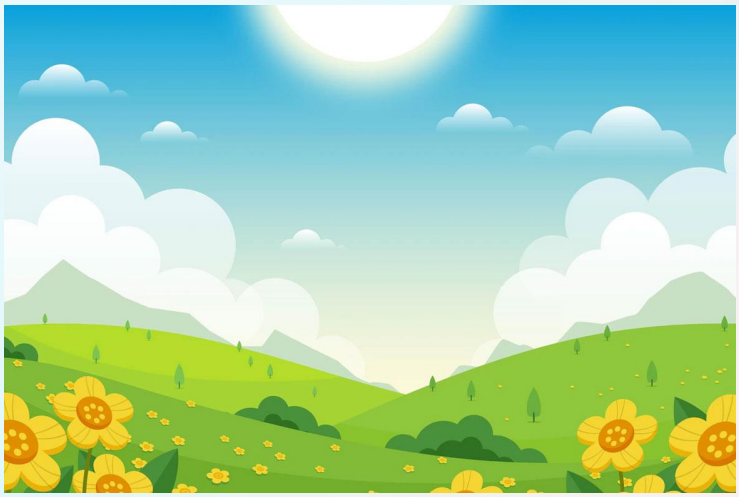

ऋतुओं का राजा बसंत है आया,
चहुं ओर सुन्दर हरियाली छाया.

सबके मन को खूब है भाया,
बसंत ऋतु का मौसम आया.

नई चेतना और उमंग छा गया,
देखो देखो बसंत ऋतु आ गया.

मां सरस्वती का हम करे वंदन,
बसंत ऋतु का करे अभिनंदन.

चि चि चिड़िया चहकने लगते,
भर भर भंवरे भंवराने लगते .

कू कू बोल कोयल गीत सुनाए ,
भंवरे की गुंजन मन को भाए.

प्रकृति का कण कण खिल उठा,
पशु पक्षी भी उल्लास से भर उठा.

सरसों का फूल सोने जैसे चमकने लगा,
जौ और गेहूं की बालियां खिलने लगा.

आम के पेड़ो पर सुन्दर बौर आने लगा,
फूलों पर रंगीन तितलियां मंडराने लगा.

यह बसंत आपको खुशियां दे अनंत ,
प्रेम व उत्साह से भर दे जीवन में रंग.

*****

गरीबी भी एक चीज है

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

कवि राम प्रकाश अपने क्षेत्र के एक जाने माने कवि के रूप में विख्यात थे. उनको हर कवि सम्मेलन कवि गोष्ठी और हर सांस्कृतिक प्रोग्राम में बहुत आदर के साथ बुलाया जाता था.

वे अपनी कविता गजल शायरी से ऐसा शमा बांध देते थे कि सुनने वाले वाह वाह कह उठते थे. मंच का संचालन भी बहुत मजे ढंग से करते थे.

कविताई ही उनका रोजी और रोजगार था. जो कुछ कविता सुनाने से पा जाते उसी से अपना और बीवी बच्चों का पेट पालते थे.

इधर कवि राम प्रकाश कई महीने से बीमार चल रहे थे. धन के अभाव में उनका ठीक से इलाज नहीं हो पा रहा था. उनकी पत्नी किसी तरह अपने सारे गहने बेच कर इलाज करवा रही थी. मगर कवि राम प्रकाश की कोई मदत के लिए आगे नहीं आया. आखिर एक दिन कवि राम प्रकाश इस लोक से विदा हो गए.

उनकी मौत पर जगह जगह शोक सभा होने लगी उनको महान कवि का दजाॅ दिया जाने लगा. उनके चित्र पर हर कोई फूल माला पहनाकर कर नमन कर रहा था. जिन्दा थे तो कोई मदत के लिए आगे नहीं आया आज मरने पर हर साहित्यकार उनकी जयजयकार मना रहा था.

जिन्दा थे तो कवि राम प्रकाश भूख से परेशान थे मरने पर उनके नाम पर मिठाई बांटे जा रहे थे.

*****

अंगना म शिक्षा

रचनाकार- श्रीमती चंचला चन्द्रा, सक्ती

हम माताएं हैं, हमें बच्चे गढ़ना है.
एक सभ्य समाज की ओर बढ़ना है.
नन्हें मुन्हे बच्चों को , प्यार से सिखाना हैं.
ज्ञान विज्ञान की बाते बताना है.
धरती से अंतरिक्ष तक सैर कराना है.
पहाड़ से लेकर समुद्र तक तैर आना है.
हर अंगना में शिक्षा लाना है,
हर बच्चे को जिज्ञासु बनाना है.
कठिन रास्तों पर हँस कर चलना सिखाना है,
बच्चों को उनके लक्ष्य तक पहुंचाना है.
अब सृजनात्मकता को समझना है,
एक सभ्य समाज की ओर बढ़ना हैं.
हम माताएं हैं हमें बच्चे गढ़ना हैं.

*****

हमर स्कूल

रचनाकार- महेन्द्र कुमार चन्द्रा, सक्ती

हमर स्कूल के का बतावव बात,
जिंहा मिलथे पौष्टिक भात.
जेला हमन खाथन ,
अउ स्वस्थ शरीर बनाथन.
रोज स्कूल जाथन पढ़े बर,
अपन जिंनगी ल गढ़े बर .
दई - ददा कस मया हमर गुरुजी मन करथे,
अउ तरह-तरह के ज्ञान हमन के मन मा भरथे.
फेकल्हा समान के सुग्घर खेलौना बनाथे ,
जेमा हमन ला विज्ञान सिखाथे.
हमन खाथन बोईर करौंदा,
हमर स्कूल के नाव हे झालरौंदा.
हमर गांव म हे भांठा बस्ती,
हमर जिला के नाव हे सक्ती.

*****

सुबह की सैर

रचनाकार- राजकुमार निषादराज, दुर्ग

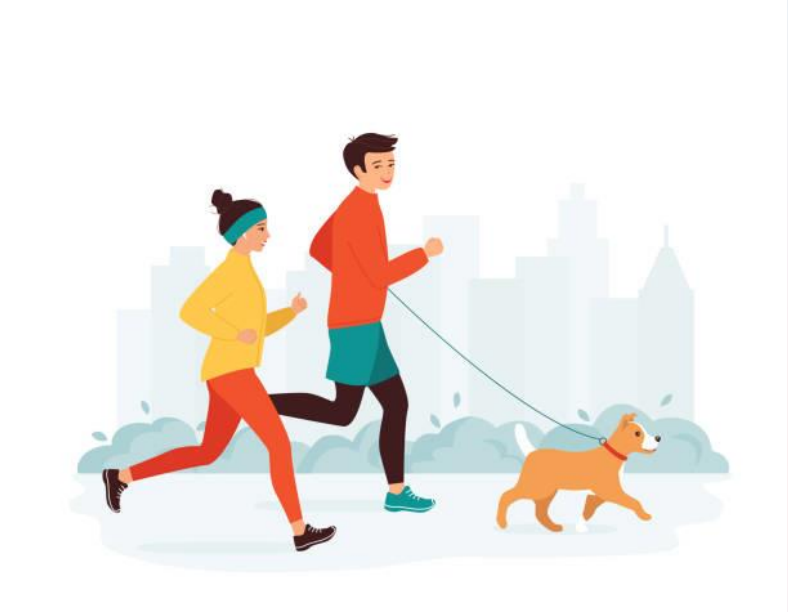

प्रातः काल का समय,
थोड़ा अँधेरा होता है.
निकलता हूँ सुबह सैर के लिए,
तो मौसम सुहाना होता है.

आगे बढ़ता हूँ चलते-चलते,
तो धीर-धीरे उजाला होता है.
निकलता हूँ सुबह सैर के लिए,
तो मौसम सुहाना होता है.

ठंडी हवाएं जब तन को,
यूं स्पर्श करतीं हैं.
तब मन में उमंग और,
उत्साह पैदा होती है.
घास पर पड़ी ओस की बूंदें,

मोतियों सा नजर आता है.
निकलता हूँ सुबह सैर के लिए,
तो मौसम सुहाना होता है.

चिड़ियों की चहचहाहट से,
जब मधुर शोर होता है.
चारो ओर आनंद और,
भाव विभोर होता है.
सड़क किनारे खेतों में,
पीले सरसों का नाजारा होता है.
निकलता हूँ सुबह सैर के लिए,
तो मौसम सुहाना होता है.

पहुंचता हूँ नदी किनारे तब,
हसीन वादियां दिखाई देती है.
पानी से निकलता धूँध कोहरे,
में परछाई नजर आती है.
धीरे-धीरे आसमान में,
सूरज भी निकल आता है.
निकलता हूँ सुबह सैर के लिए,
तो मौसम सुहाना होता है.

*****

उड़ान

रचनाकार- सुश्री मीना तिवारी, बेमेतरा

उड़ान मेरे सपनों की,
उम्मीद मेरे अपनों की,
साकार करने को हूँ तैयार .
छू लूंगी आसमान को,
दिखा दूंगी इस जहां को,
एक दिन होगा मेरा सपना साकार .
कह दो उलझन को रोके ना मुझे,
मुझ में है जज्बा कुछ कर दिखाने का,
अपने सपनों को दूंगी आकार.
मैं हूं भारत की बेटी,
मेरा अंदाज नया है,
ऊंचा करूंगी देश का नाम,
बहुत ऊंची है मेरी उड़ान.

*****

शारदे वंदना

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू, रायगढ़

हे माँ शारदे तेरी चरणों में, शीश झुकाने आएँ हम.
नेक राह दिखाना हमको, बालक भटक न जाएँ हम.
पढ़ लिखकर बने महान, ऐसा विमल मति पाएँ हम.
हे माँ शारदे तेरी चरणों में, शीश झुकाने आएँ हम.

कोकिल कंठी स्वर दे दो माँ, सुमधुर गीत गाएँ हम.
सात सुरों के सरगम जैसा, लय ताल सब पाएँ हम.
ऐसा वरदान दे दो माता, अक्षर ज्ञान बढाएँ हम.
हे माँ शारदे तेरी चरणों में, शीश झुकाने आएँ हम.

तेरी दिव्यता के ऑचल में, ममता की छाॅंव पाएँ हम.
ज्ञान चक्षु खोल दे मैय्या, अपनी पहचान बनाएँ हम.
पाकर बुद्धि विद्या तुझसे, अज्ञानता दूर भगाएँ हम.
हे माँ शारदे तेरी चरणों में, शीश झुकाने आएँ हम.

*****

बसंत ऋतु

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय, सरगुजा

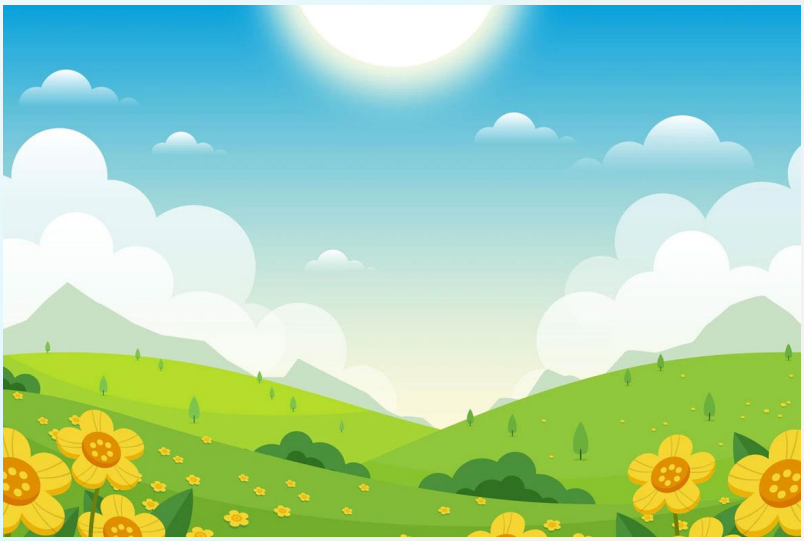

फूले सरसो फूल जब, आता सदा बसंत.
खिलते टेसू देखकर, , मन होता है कंत.

खेतो में फैली जहाँ, हरियाली चहुँ ओर.
देख सुहानी है लगे, सदा नवल है भोर.

आम बौर भी आ गये , फैली मंद बयार.
लेकर खुशियाँ आ गयी, घर घर प्रेम अपार.

कोयल कूके बाग में, नाचे वन में मोर.
पवन चले सन सन जहाँ, खूब मचाये शोर.

अलबेला मौसम जहाँ, मन को भाए खूब.
खुशहाली को देखकर, लगता हरियर दूब.

*****

आत्मविश्वास

रचनाकार- सीमा यादव

आत्मविश्वास के बल पर व्यक्ति हर वो काम कर जाता है, जो पर्वत सा दुर्गम होता है और जो असम्भव होता है. आत्मविश्वासी व्यक्ति न कभी किसी को दबाता है और न ही किसी से दबता है. वह अपने आप में ही तल्लीन रहता है. बिना किसी से अपेक्षा रखे अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ते जाता है. आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति स्वयं से ही लगातार मुकाबला करते रहता है. और समाज के हित व उन्नति की कामना करते हुए नित्य नयी -नयी योजना बनाते रहता है. कछुए की भाँति नियमित रूप से धीरे -धीरे अपने कर्तव्य पथ की ओर अग्रसर रहता है. आत्मविश्वास से भरा व्यक्ति ही एक स्वस्थ व्यक्तित्व को निर्मित कर पाता है. जो आशवादी होने का परिचायक है.अतएव हमें हर हालात और परिस्थिति में अपने हृदय तल की शक्ति को स्थिर बनाये रख सकें. इसके लिए अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना होगा. क्योंकि जब तक हम स्वयं को संयम से नहीं रखेंगे, तब तक हम कोई बड़ा और सार्थक कार्य नहीं कर पायेंगे. जब भी कोई लक्ष्य बनाएं, उसके परिणाम पर अवश्य गौर करें. तत्पश्चात् ही निर्णय की स्थिति में पहुँचें. आप देखेंगे कि सारी प्रकृति हमारे साथ हैं और यही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है. अतः आत्मविश्वास को हमेशा जागृत रखें. क्षण भर के लिए भी इसे खोये नहीं.

*****

बहती है पुरवाई

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

माह फरवरी आतुर है मन,
धरा प्रेम बरसाई,
सुरभित गुलाब की पंखुड़ियाँ,
शूल मध्य इठलाती.
देख दृश्य पुलकित है कण-कण,
कोयल गीत सुनाती.
पात-पात तरुवर झूमे जब,
संग बसंती आई.

प्रणय गीत का भाव जगाती,
कवियों की कविताएंँ.
स्पर्श हृदय को करें शब्द ये,
श्रृंगारित हो जाएँ.
पग-पग जीवन उल्लास भरे,
बहती है पुरवाई.

पीले–पीले सरसों फूले,
बृक्षारण महकाते,
भँवरे तितली मिलकर सारे,
बैठ वहाँ हर्षाते,
लगे झूलने बौर आम के,
झूम उठे अमराई.

रूप बसंती सज बैठी जस,
दुल्हन नई नवेली,
कभी सुहाने दृश्य दिखाती,
रचती कभी पहेली,
बँधे प्रीत में प्रियतम सारे,
बजती है शहनाई.

*****

बसंत ऋतु

रचनाकार- श्रीमती रेणुका अग्रवाल, बेमेतरा

आई बसंत झुम के
खेतों में फिर सरसों फुले
देखो सुंदर अजब नजारा
आम की बोर से महका जग सारा
चारों तरफ हरियाली छाई
कोयल ने फिर कु-कू गाई
कहलाता ऋतुओ का राजा
जो सबके मन को भाता
बागो में कलियां मुस्कुराई
ठंडी ने भी ली अंगड़ाई
बच्चे खेले घूम घूम कर
आई बसंत ऋतु झूम झूम कर.

*****

साइकिल

रचनाकार- राजेंद्र जायसवाल

हमारे जमाने में साइकिल तीन चरणों में सीखी जाती थी ,

पहला चरण - कैंची

दूसरा चरण - डंडा

तीसरा चरण - गद्दी ...

तब साइकिल की ऊंचाई 24 इंच हुआ करती थी जो खड़े होने पर हमारे कंधे के बराबर आती थी ऐसी साइकिल से गद्दी चलाना मुनासिब नहीं होता था.

कैंची वो कला होती थी जहां हम साइकिल के फ़्रेम में बने त्रिकोण के बीच घुस कर दोनो पैरों को दोनो पैडल पर रख कर चलाते थे.

और जब हम ऐसे चलाते थे तो अपना सीना तान कर टेढ़ा होकर हैंडिल के पीछे से चेहरा बाहर निकाल लेते थे, और "क्लींङ क्लींङ" करके घंटी इसलिए बजाते थे ताकी लोग बाग़ देख सकें की लड़का साईंकिल दौड़ा रहा है .

आज की पीढ़ी इस "एडवेंचर" से महरूम है उन्हे नही पता की आठ दस साल की उमर में 24 इंच की साइकिल चलाना "जहाज" उड़ाने जैसा होता था.

हमने ना जाने कितने दफे अपने घुटने और मुंह तोड़वाए है और गज़ब की बात ये है कि तब दर्द भी नही होता था, गिरने के बाद चारो तरफ देख कर चुपचाप खड़े हो जाते थे अपना हाफ कच्छा पोंछते हुए.

अब तकनीकी ने बहुत तरक्क़ी कर ली है पांच साल के होते ही बच्चे साइकिल चलाने लगते हैं वो भी बिना गिरे. दो दो फिट की साइकिल आ गयी है, और अमीरों के बच्चे तो अब सीधे गाड़ी चलाते हैं छोटी छोटी बाइक उपलब्ध हैं बाज़ार में .

मगर आज के बच्चे कभी नहीं समझ पाएंगे कि उस छोटी सी उम्र में बड़ी साइकिल पर संतुलन बनाना जीवन की पहली सीख होती थी! "जिम्मेदारियों" की पहली कड़ी होती थी जहां आपको यह जिम्मेदारी दे दी जाती थी कि अब आप गेहूं पिसाने लायक हो गये हैं .

इधर से चक्की तक साइकिल ढुगराते हुए जाइए और उधर से कैंची चलाते हुए घर वापस आइए !

और यकीन मानिए इस जिम्मेदारी को निभाने में खुशियां भी बड़ी गजब की होती थी.

और ये भी सच है की हमारे बाद "कैंची" प्रथा विलुप्त हो गयी .

हम लोग की दुनिया की आखिरी पीढ़ी हैं जिसने साइकिल चलाना तीन चरणों में सीखा !

पहला चरण कैंची

दूसरा चरण डंडा

तीसरा चरण गद्दी.

• हम वो आखरी पीढ़ी हैं, जिन्होंने कई-कई बार मिटटी के घरों में बैठ कर परियों और राजाओं की कहानियां सुनीं, जमीन पर बैठ कर खाना खाया है, प्लेट में चाय पी है.

• हम वो आखरी लोग हैं, जिन्होंने बचपन में मोहल्ले के मैदानों में अपने दोस्तों के साथ पम्परागत खेल, गिल्ली-डंडा, छुपा-छिपी, खो-खो, कबड्डी, कंचे जैसे खेल खेले हैं

*****

सुघ्घर बगरे बसंत हे

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

गीत म, संगीत म, मनखे के पिरीत म,
मन म, जीवन म, आनंद-ही-आनंद हे.
खेत म, खार म, रुख-राई के डार म,
बाग म, राज म, सुघ्घर बगरे बसंत हे.

इंद्रधनुषी जम्मों फूल के गुरतुर रस ल,
तितली, भौंरा अउ चिरई मन ह चूहके.
सुआ अउ मैना ल मया करत देख-देख,
आमा पेड़ म कोयली कुहू-कुहू कुहके.

पिंयर रंग के सरसों, राहेर फूले हवय,
सादा के मोंगरा, मंदार अउ कुसियार.
बोइर, बिही, अरम पपई के फर गदरागे,
कउंवा भगनहा पुतला लगे हे रखवार.

धान के कलगी खोंचे, माथा गहूं पटिया,
गला म चंदैनी-गोंदा के सुर्रा हे मनोहारी.
जवा फूल के नांगमोरी, बंभरी बीजा सांटी,
भुईयां महतारी सजे-धजे लागे फुलवारी.

*****

हिम्मत को न हार

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

हिम्मत को न हार ,
साथी,हिम्मत को न हार.
दिन परीक्षा का है, आया,
खुद को कर तैयार,साथी...

इन प्रश्नों से क्या घबराना,
इनसे कर डालो याराना.
कर लो अंगीकार,साथी...

समय बनाकर सोवो जागो,
समय निकालो खेलो भागो.
खुद को करो तैयार, साथी....

बूंद बूंद से भरना मटका,
मन मे न देना तुम झटका,
महशूस न करना भार,
साथी ,हिम्मत को.....

*****

रंग-बिरंगी तितली

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

मैं हूँ रंग बिरंगी तितली,
गुलशन की करती हूं सैर
न रंगों से भेद मुझे है,
न फूलों से रखता बैर.
मैं हूँ.....
नित फूलों को गीत सुनाऊं,
मन को उनके मैं बहलाऊँ.
बगिया सुनी,मेरे बगैर.
मैं हूँ.....
हर फूलों के पास में जाऊँ,
ढेर प्यार,उनसे मैं पाऊँ.
सब अपने हैं, न कोई गैर.
मैं हूँ....

*****

बसंत बहार

रचनाकार- श्रीमती राजकिरण मिश्रा, बेमेतरा

ओस की बूंदे पड़ी कोमल कली पर
चहक उठी नन्ही कली मुस्कुरा कर
भंवरा गुनगुन कर आ बैठ नन्ही कली पर
कली खिल पड़ी खिलखिलाकर
मानो उस फूल पर यौवन की
सुंदर छटा छा गई
वह सकुचाकर थोड़ा शरमा गई
फूल और भंवरे का संगम देख
कोयल पपिहा मस्ती में झूम उठे
पंछी मोर इठलाकर नाच उठे
आया सुंदर बसंत ऋतुराज
मानो हरियाली से सजकर
निकली हो बारात

पशु ,पक्षी ,फूल ,लता करती
स्वागत बारंबार
आया मस्त बसंत बहार
आया मस्त बसंत बहार

*****

मैं भी स्कूल जाऊंगी

रचनाकार- श्रीमती राजकिरण मिश्रा, बेमेतरा

मैं भी स्कूल जाऊंगी
मौज मस्ती कर सहेली के साथ खेल कर
मैं आ जाऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी मैं भी स्कूल जाऊंगी
खेल खेल में सीखूंगी एक दो तीन चार
ऐसे ही गिनती मै सीख जाऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी
कभी कहानी तो कभी कविता ,कोई किस्सा,
गीत का हिस्सा,
मैं रोज तुम्हें सुनाऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी मैं भी स्कूल जाऊंगी

अपने कपड़े संग में सारे कपड़े धो कर लाऊंगी.
घर के सभी काम मैं करके जाऊंगी पर,
मैं भी स्कूल जाऊंगी
स्कूल में तो रोज मेले हैं
खुशियों की वहां रोज रेले हैं
उन्ही खुशियों में मैं भी खुश हो जाऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी.
शीला रानू रोज स्कूल जाती है
मीठे गीत सीखकर आती है
मैं भी कोई गीत सीख कर आऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी मैं भी स्कूल जाऊंगी
नई बात नया ज्ञान
गुरुजी पढ़ाते हैं विज्ञान
विज्ञान समझ कर आऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी
मिलता वहां खाना भी
सिखाते रोज गाना भी
खाना खाकर मैं भी आऊंगी
मैं भी स्कूल जाऊंगी.

*****

सबसे बड़ी पूंजी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

दुनियां में जिसके पास प्रसन्नता, मन की शांती, संतोष भरा मन हो वो भाग्यशाली और खुश इंसान है. केवल आज की ही क्यूं वो इंसान हर दुनियां मे खुश है. महाभारत मे धर्मराज युधिष्ठिर से एक यक्षने प्रश्न पुछा के हे धर्मराज सबसे बडा सुख कौनसा है इस प्रश्न के उत्तर के स्वरूप युधिष्ठिरजी ने कहा समाधान ही सर्वोत्तम सुख है. मनुष्य के पास बहुत सारा पैसा हो अछी शादीशुदा जिंदगी हो अच्छे माता पिता हो लेकिन मन मे संतोष व प्रसन्नता न हो तो ऐसा व्यक्ती आज की या किसी भी दुनिया मे खुश नही हो सकता. आज की दुनिया मे पैसा अतिआवश्यक है. लेकीन मन का संतोष प्रसन्नता उससे भी अधिक आवश्यक है,और एक बात जो की आवश्यक है वो है आपकी सेहत, सेहत अछी हो तो व्यक्ती का जीवन आनंदमय होता है,वैसे तो कुदरत द्वारा रचित इस अनमोल खूबसूरत सृष्टि में रचनाकर्ता ने मानवीय जीवन में अनेक गुण दोषों को शामिल कर संजोया है, इसका उपयोग करने सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमता का भी सृजन कर दिया है. बस!! जरूरत है अब माननीय जीव को उसे गुण-दोष सुख-दुख खुशियां-गम प्रसन्नता दुख इत्यादि का चुनाव कर अपने जीवन को सफल और असफल बनाएं उसके ऊपर है!! क्योंकि प्रसन्नता और सुख दुख भी बौद्धिक क्षमता के आधार पर माननीय जीव को खुद चुनना होता है! इसलिए आज हम छठ की पावन बेला पर मन की प्रसन्नता पर उसके गुणों, प्रक्रिया सुजन करने के तरीकों पर इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे.

साथियों बात अगर हम प्रसन्नता की करें तो खुलकर हंसना, मुस्कुराना, प्रसन्न रहना, मन की प्रसन्नता खुद सृजित की हुई दवा के समान है, क्योंकि इसमें सब दुख तो नष्ट होते हैं,जीव अपने कर्म में असफल नहीं होता. बुद्धि तुरंत स्थिर रहती है. सामाजिक प्रतिष्ठा और गुणों की सुगंध दूर तक जाती है एक अलग हस्मुख व्यक्तित्व की हमारी छाया हमारे अपने परिचितों सहयोगियों पर पड़ती है. प्रसन्नता हमारा ऐसा अनमोल खजाना है, जिसे जितना लूटाएंगे उतना ही बढ़ता चला जाएगा, खिलखिलाते चेहरे और प्रसन्नता की आंखों की चमक मनीषियों को दुर्लभ पूंजी है, क्योंकि प्रसन्नता सुकून से जीने की कुंजी है. यह खजाना तब बढ़ता है जब हम दूसरों की खुशीयों में अपनी खुशी को समाहित करते हैं. हमें छोटी-छोटी चीजों में प्रसन्नता, सुख ढूंढने की कोशिश करनी चाहिए, विश्वसनीय मन के भाव की खुशी का भाव अभूतपूर्व सफलता और दूरगामी सकारात्मक परिणाम होता है. आध्यात्मिकता, उदारता, परोपकार, सहनशीलता, सहिष्णुता इत्यादि मन की प्रसन्नता के प्रमुख स्त्रोतों में से कुछ हैं, जिनको जीवन में अपनाने की जरूरत को रेखांकित किया जा सकता है.

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस, संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी विश्व प्रसन्नता इंडेक्स रिपोर्ट इत्यादि अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर प्रसन्नता के मूल्यों की करें तो प्रसन्नता को हाई वैश्विक टॉनिक माना जाता है. प्रसन्नता दिवस मनाया जाता है अलग-अलग देशों के प्रसन्नता से रहने के क्रमांक बताए जाते हैं, परंतु बहुत हैरानी की बात है प्रसन्नता इंडेक्स में अनेक पूर्ण विकसित देशों के साथ ही भारत भी पिछड़ा हुआ है जो रेखांकित करने वाली बात है!! विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2022 में 146 देशों की रिपोर्ट के अनुसार फिनलैंड लगातार 5 वर्षों से प्रथम और डेनमार्क द्वितीय और आयरलैंड तृतीय स्थान पर है.जबकि इस रिपोर्ट में भारत 136 वी रैंक पर है याने लास्ट टॉप टेन इतनी ख़राब हालात जो आश्चर्य वाली बात है.

साथियों बात अगर हम मन की प्रसन्नता के गुण एवं लाभों की करें तो, प्रसन्नता तो व्यक्ति का मानसिक गुण है, जिसे व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन के अभ्यास में लाना होता है. प्रसन्नता व्यक्ति के अंतर्मन में छिपे उदासी, तृष्णा और कुंठाजनित मनोविकारों को सदा के लिए समाप्त कर देती है. वस्तुत: प्रसन्नता चुंबकीय शक्ति संपन्न एक विशिष्ट गुण है. प्रसन्नता दैवी वरदान तो है ही, यह व्यक्ति के जीवन की साधना भी है. व्यक्ति प्रसन्न रहने के लिए एक खिलाड़ी की भांति अपनी जीवन-शैली और दृष्टिकोण को अपना लेता है. उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता असफलता, जय-पराजय, और सुख-दुख उसके चिंतन का विषय नहीं होता. वह तो

अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है.प्रसन्नता मानवों में पाई जाने वाली भावनाओं में सबसे सकारात्मक भावना है. इसके होने के विभिन्न कारण हो सकते हैं: अपनी इच्छाओं की पूर्ति से संतुष्ट होना. अपने दिन-रात के जीवन की गतिविधियों को अपनी इच्छाओं के अनुकूल पाना. किसी अचानक लाभ से लाभांवित होना. किसी जटिल समस्या का समाधान प्राप्त होना.

साथियों बात अगर हम प्रसन्नता के लक्ष्यों की प्राप्ति की करें तो, प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है. यदि वह असफल भी हो जाता है तो निराश होने और अपनी विफलता के लिए दूसरों को दोष देने की अपेक्षा अपनी चूक के लिए आत्मनिरीक्षण करना ही उचित समझता है.ज्ञानीजन और अनुभवी बताते हैं कि प्रसन्नता जैसे दैवीय-वरदान से कुतर्की और षड्यंत्रकारी लोग सदैव वंचित रह जाते हैं. प्रसन्न व्यक्ति स्वयं को प्रसन्न रखकर दूसरों को भी प्रसन्न रखने की अद्भुत सामथ्र्य रखता है. प्रसन्नता को प्रभु-प्रदत्त संपदा समझने वाले व्यक्ति ही सदैव सुखी रहते हुए यशस्वी, मनस्वी, महान और पराक्रमी बनकर समाज और राष्ट्र के लिए आदर्श स्थापित करने में सक्षम हो सकते हैं. प्रसन्नता ही सुखी जीवन का मूल मंत्र है. प्रसन्नता हमारा अनमोल खजाना है. प्रसन्नता को ज़रूर लुटाइए फ़िर देखिए, उसका खजाना बढ़ता चला जाएगा .भलाई करना कर्त्तव्य नहीं, आनन्द है . क्योंकि वह प्रसन्नता को पोषित करता है . सबको प्रसन्न करने की शक्ति सब में नहीं होती . प्रसन्नता आत्मा को शक्ति प्रदान करती है . प्रसन्नतापूर्वक उठाया गया बोझ हल्का महसूस होता है. प्रसन्नता शब्द का प्रयोग मानसिक या भावनात्मक अवस्थाओं के संदर्भ में किया जाता है, जिसमें संतोष से लेकर तीव्र आनंद तक की सकारात्मक या सुखद भावनाएं शामिल हैं. इसका उपयोग जीवन संतुष्टि, व्यक्तिपरक कल्याण, यूडिमोनिया, उत्कर्ष और कल्याण के संदर्भ में भी किया जाता है इसलिए हर व्यक्ति ने इस गुण को अपने में समाहित कर जीवन को सफल बनाने के मंत्र को अपनाना चाहिए.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि दुनियां में मन का संतोष प्रसन्नता खुशी और अच्छी सेहत ही सबसे बड़ी पूंजी है.आज की दुनियां मे वो सबसे अधिक खुश है जिसके पास प्रसन्नता, मन की शांती, संतोष भरा मन है.प्रसन्नता हमारा ऐसा अनमोल ख़जाना है, जितना लुटाओगे उतना बढ़ता चला जाएगा

*****

बाग का झूला

रचनाकार- कामिनी जोशी, कबीरधाम

मेरे बाग में है झूला, है मुझे बहुत पसंद.
कभी इधर कभी उधर ,लटके मुनिया और आनंद .
मुनिया मुनिया आयी नानी की आवाज.
भाग पढ़ी मैं जल्दी नानी पास.
नानी ने एक बात बतायी.
झूले की राज सुनायी.
एक दिन गयी वो बाग टहलने
दौड़कर नजदीक आकर
जोर जोर से लगी मैं झूलने
चरर चरर की आवाज आयी
नानी आपकी हिम्मत जुटाई
कुछ था नही, पकड़ने पास
नानी गिर गयी, आवाज आई धड़ाम
हँसकर दोनो चल दिये झूले पास
आनंद के मन मे भी था उल्लास.

*****

पंख वाली मछली

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली जांजगीर

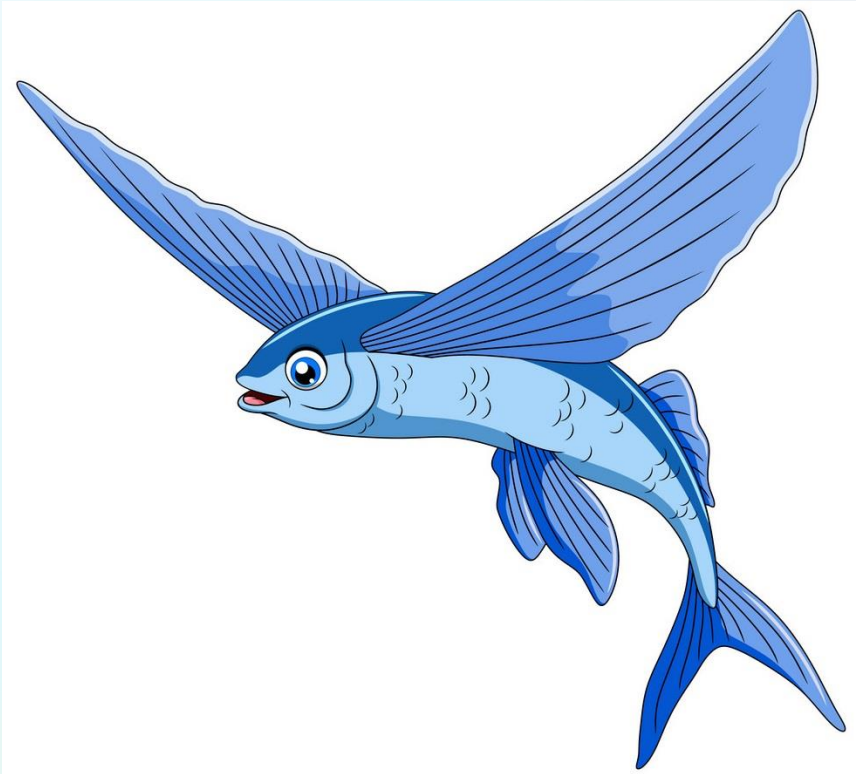

एक दिन मुनिया अपनी बैग लेकर समुद्र घूमने गई वह देर तक समुद्र को निहारती रही.

अचानक उसका ध्यान समुद्र के ऊपर उड़ रहे मछलियों पर पड़ी रंग बिरंगी मछली बड़े मजे से समुद्र के ऊपर उड़ रही थी.

उसे देखकर मुनिया बहुत खुश हुई उनके पंख लंबे और मोटे थे मुनिया मछलियों से बातें करने लगी क्या तुम मुझे समुद्र के सर करा सकती हो? हां जरूर मछलियों ने जवाब दिया

मुनिया मछली के ऊपर बैठकर समुद्र के ऊपर आसमान पर सैर करने निकली.

मछली मुनिया को आसमान की सैर करने के बाद समुद्र के अंदर लेकर पहुंची. मुनिया को बहुत मजा आ रहा था.

जल के अंदर जलीय घास लहरा रहे थे छोटी-छोटी मछलियां तैर रही थी बहुत से समुद्री जीव जंतु दिखाई दिए.

तभी अचानक उसे एक बड़ा सा ऑक्टोपस दिखाई दिया ऑक्टोपस उस पंख वाली मछली की ओर ही आ रहा था. ऑक्टोपस तेजी से आता हुआ उस पंख वाली मछली को अपने पंजे में जकड़ लिया.

इधर बहुत सारे बड़े-बड़े ऑक्टोपस समुद्र में उसे पंख वाली मछली के आसपास आ गए.

मुनिया डरने लगी.

उसने जोर-जोर से आवाज लगाई. मां,,,,,,,,, मुझे बचाओ

मां,,,,,,,,,,,, मुझे बचाओ

तब मा ने उसका पीठ थपथपाया और कहा क्या हुआ मुनिया,,,,,,,,

मुनिया बेड से उठकर बैठ गई.

*****

किसान

रचनाकार- शोभना यादव कक्षा आठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कंतेली
जिला बेमेतरा

मेहनत करके अन्न उगाते
ओला कई थे किसान
अपन भूखे रही के
दूसरा बार उगते धन
पसीना ह मोती बन जाते
जब धरती म बोहथे
मझनिया के घाम म तप के
बरसात के पानी में भीग के
पेट भरेबर उगा थ च धान

*****

मेरा देश

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

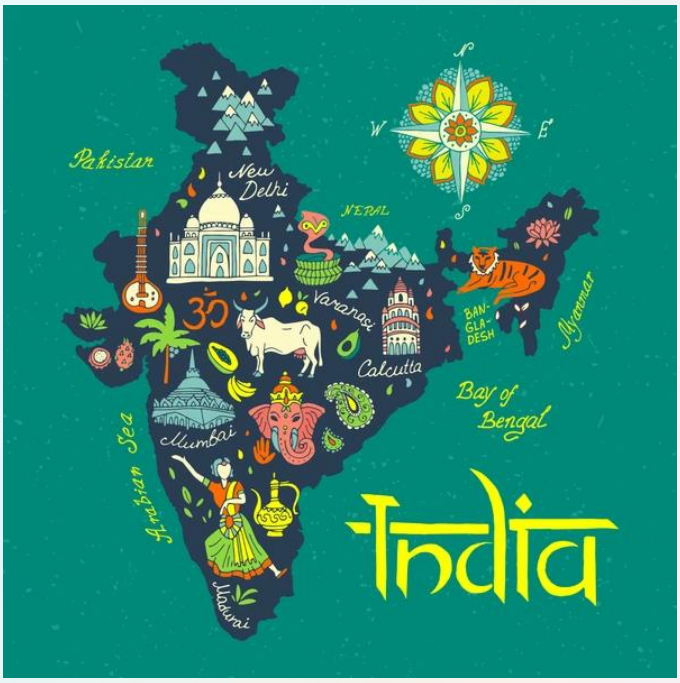

समृद्ध प्रकृति की छटा
संस्कार की धानी.
सर्वगुणों की खान
है मेरा देश है.

तपोभूमि है ऋषि मुनियों की
बहती गंगा की अविरल धारा.
ममतामयी माँ का स्वरूप
है मेरा देश..

है संस्कृति और परंपरा
विविधता की भूमि.

सभ्यता का इतिहास
है मेरा देश.

है यहां अनेक बोलियां
भाषाओं में विविधता.
अनेकता में एकता की मिशाल

*****

राजस्थान

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

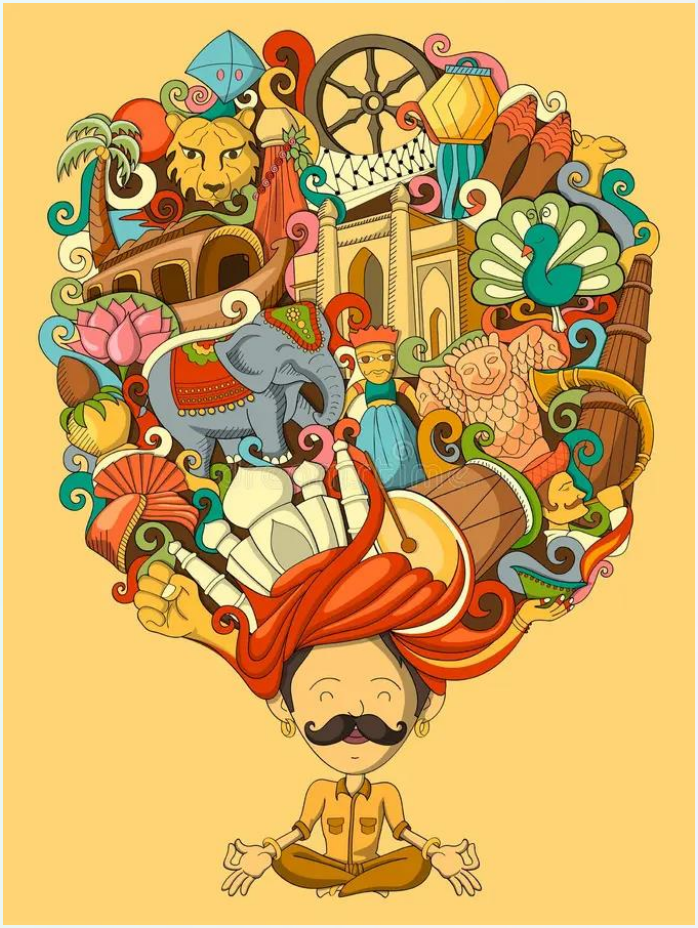

था अर्थ राजाओं का स्थान,
हुआ नामकरण राजस्थान.
था बंटा गढो और रियासतों में,
हुआ गठन 30 मार्च 1949 में.
जैसलमेर जोधपुर बीकानेर,
है ये मेरे समृद्ध अंग.
बनी राजधानी जयपुर ,
गुलाबी खूबसूरती के संग.
त्याग रानी पद्मिनी की,

राणाजी की वीरता.
है सांगा का अभिमान,
साहस पृथ्वीराज की.
शौर्य गाथा सुना रहा है,
पूरा भारत आज भी.
हूं मैं हल्दीघाटी भी,
पद्मिनी के जौहर का प्रमाण भी.
तपोभूमि हूं कपिल मुनि की,
हूँ मैं राजपूतों की स्वर्ण भूमि.
राग हूँ चंद्रवरदाई की,
तो पंच पीरो का स्थान भी.
है समृद्धशाली इतिहास मेरा,
जी हां हूं मैं राजस्थान.

*****

सफल व्यापारी

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

राजू और सोनू आपस में अच्छे मित्र थे. दोनों की अभी बाल्यावस्था थी, उम्र होगी 12 - 14 वर्ष. घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण वे बाजार में फलों के ठेले लगाते थे.

आज राजू पपीते और सोनू ककड़ियाँ बेच रहा था.

काफी देर बाद एक बुजुर्ग ग्राहक राजू के ठेले के पास आया.

जी, बाबा! पपीते डाल के पके हैं और बहुत मीठे हैं' - राजू ने बड़े से कहा.

ग्राहक - किस भाव दिए?

राजू - बाबा, 50 रुपये किलो हैं.

ग्राहक - और ये जो अलग रखे हैं, ये कैसे?

राजू - बाबा, ये 40 रुपए में लग जाएँगे, लेकिन आपके लेने वाले नहीं हैं. इनमें दाग हैं., खराब निकल सकते हैं.

ग्राहक' ठीक है 'कहते हुए ककड़ियों वाले ठेले पर पहुँचा.

हाँ भाई, ककड़ियाँ कैसे दे रहो हो' - ग्राहक ने पूछा.

सोनू ने रूखेपन से कहा - बीस रूपये की चार हैं. आपको पाँच लगा दूँगा. बिलकुल ताजी हैं. सीधे खेत से लाया हूँ. '

ठीक है,पाँच निकाल दो'.

ग्राहक उसकी दी हुई ककड़ियों को लेकर चला गया. तब सोनू ने राजू से नाराज होते हुए कहा -तूने पपीते खराब क्यों बता दिया. वह ले रहा था, तो लेने देते.

राजू - देखो भाई! मैं झूठ क्यों बोलूँ, मैं किसी ग्राहक को खराब फल को अच्छा बताकर नहीं बेचूँगा, भले ही वह ले या न ले.

सोनू- तुम घोंचू हो. धंधे में इतनी सच्चाई नहीं चलती. देखो, मैंने दो दिन की बासी ककड़ियाँ, ताजी कहकर उसे बेच दीं. अब वह जाने उसका काम जाने.

राजू - मैं ऐसी बेईमानी नहीं कर सकता. मैं तो सच बोलकर ही अपना माल बेचूँगा. भले कम बिके.

दुसरे दिन वही बुजुर्ग सोनू के ठेले के पास आकर चिल्लाने लगे - क्यों रे! तूने मुझे ठग लिया . सारी ककड़ियाँ सड़ी निकल गईं. तू झूठा और बेईमान है. अब तुझसे कभी कुछ नहीं खरीदूँगा.

राजू के पास जाकर उसने कहा - बेटा! तुम बहुत सच्चे हो . मुझे बहुत अच्छा लगा. एक दिन तुम अवश्य सफल व्यापारी बनोगे. लाओ, मुझे दो किलो अच्छा पपीता दे दो.

पपीते वाले ठेले पर ग्राहकों की भीड़ थी, जबकि ककड़ियों के ठेले की ओर जाकर लोग हट जा रहे थे.

*****

वृद्धाश्रम

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा

उंगली पड़कर जिस माँ बाप ने ,हमें चलना सिखाया.
उसे वृद्धाश्रम छोड़ते समय, तुम्हें तनिक शर्म भी ना आया.
भूल गए वह बचपन जब वो रोटी खिलाती थी, गोदी में बिठाकर दूध भी पिलाती थी.
तुम भूखा ना सो जाओ,सोचकर दिन रात कमाती थी.
कोई अरे भी तुमको कहता, तो खूब चिल्लाती थी
मेरा बेटा मेरा बेटा कहकर, पूरे गांव वालों से लड़ जाती थी.
उस मां-बाप पर तुमको, तनिक दया भी ना आई.
वृद्धावस्था में छोड़ने से पहले, हाथ पैर क्यों नहीं कपकपाई.
हे ऊपर वाले किसी को, ये दिन ना दिखाना.
वृद्ध आश्रम की चौखट से पहले, अपने दर पर बुलाना.

*****

नारी तेरी शक्ति अनंत

रचनाकार- सीमा यादव

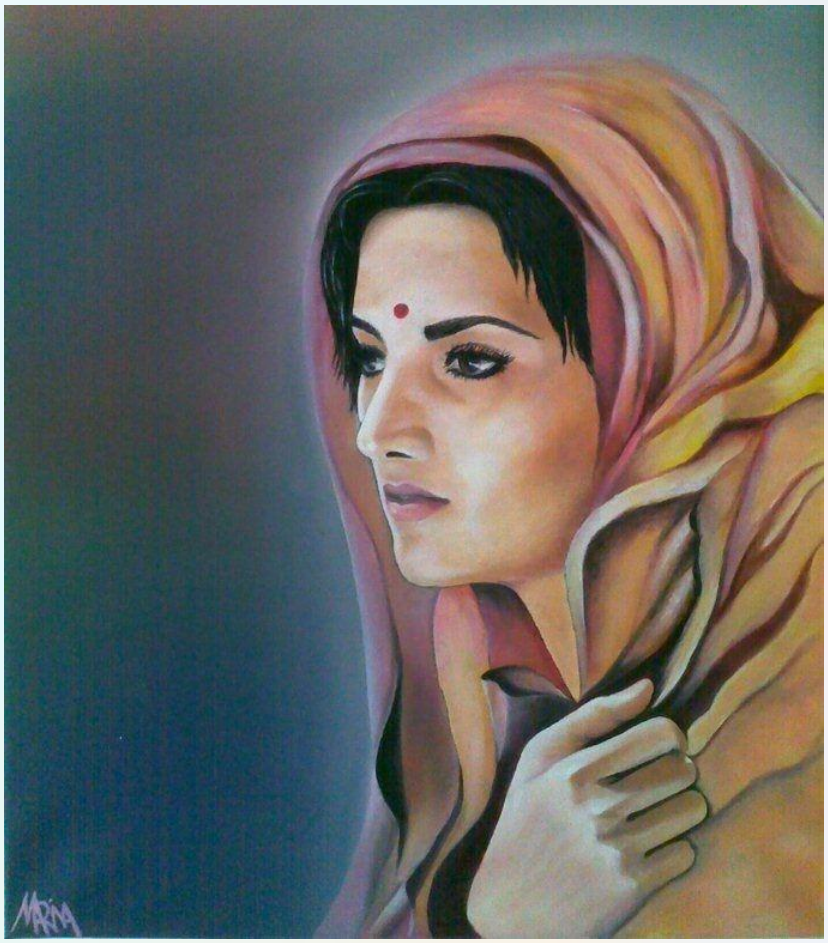

नारी जब तू सहती है, तो बसता है घर संसार.
नारी तू हँसती है, तो घर उपवन होता गुलजार.
नारी जब तू रोती है, तो उजड़ जाता है परिवार.
नारी जब तू पहल करती , पल्लवित होता है संस्कार.
नारी तू जब प्रेम करती , तो सृष्टि में आती है बहार.
नारी जब तू यातना पाती है, तो प्रलय आता है अपार.
नारी का मान-सम्मान ही ,उसका है अनमोल उपहार.

*****

आया बसंत बहार

रचनाकार- सुंदर लाल डडसेना "मधुर"

आया सुंदर मधुमास है, फूल खिले हैं डाली डाली.
नवकोपल लिए तरुवर देखो, लग रही है मतवाली.
दिख रहे सुंदर बगिया, बौर भरी है आम्र की डाली.
सुगंध भरा यौवन देखो, कुक रही है कोयल काली.

खिली है चहुँ ओर, खेतों में सुंदर सरसों पीली बाली.
जन जन में छाया उन्माद, हर तरफ छाई है हरियाली.
ओढ़ सरसों की चुनरी, लग रही धरा देखो हरी पीली.
मधुमास की भोर, पूरब में दिखती सूरज की लाली.

अंबर छटा है निराली, आई बसंत ऋतु मतवाली.
मंद मंद पवन बह रहे, छाई चारों तरफ खुशहाली.
कोयल मोर के किलोल से, नाच रही प्रकृति नखरीली.
फूल खिले हैं गुलशन गुलशन, गूंज रहें हैं भौरें काली.

बसंत गान करती कुक रही है देखो कोयल मतवाली.
टेसू के फूल मन भाए, दिख रही है उसकी लाली.
खिले फूल से गंध आ रही ,बौर भरे आम्र की डाली.
प्रकृति का यौवन देख खिल उठता है जीवन मतवाली.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 ब					2 ब		3		
				4 आ					
5 न	6		7		8 गं				
9			10 खी						
	11					12 प			13
14 चु					15				
		16	17					18 बा	
19	20		21 स		22				
23							24 ख		
	25 ग						26		

बाएँ से दाएँ

1. बाहरी 2. वनवासी
4. अन्य, दूसरा 5. नर्तक
8. घुमंतू , गांव घुमने वाला
9. कहावत, लोकोक्ति
10. एक आभूषण
11. दूसरी शादी वाली महिला
12. बारातियों का स्वागत कार्यक्रम 14. पक, पका
15. चिट्ठी ,पत्र 16. कभी
18. तराजू का वजन
19. शरीर का बाल (हिंदी)
21. सराहना 23. भारी, वजनी 24. कांख 25. काला सांप का प्रकार 26. आंत

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 मो	ह	2 ल	सी		3 ब	4 ग	रा	य	
ट		च		5 प	न	ही			6 बा
री		7 कु	कु	र		8 ला	9 ग	10 मा	नी
	11 क	र		12 जा	म		13 रु	ई	
14 खु	र	हा		त			दें		15 ब
16 र	म		17 कु	क	18 रा		19 ह	20 ब	र
21 मी	ता	22 न			23 खी	ला		ह	
		24 व	ई	25 स	न		26 क	री	27 ल
28 को	ट	री		क		29 ग	री		हु
ला		या		30 उ	द्वी	धी	या		ट

ऊपर से नीचे

1. सडा हुआ 2 . वन क्षेत्र का गांव 3. नौटंकी मे कम करने वाला 6. चना का खाद्य पदार्थ 7. सफ़ेद कद्दू 12. पसंद करना, किया 13. बहुत थोड़ा, कम 14. उखड़ू 17. फफूंद लगा 18. बंटवारा 20. शुद्ध , 22. राहल 24. पटा, राजी करना